साहित्य-सरोजमाला सं०—६

शरीर बीबी

[हास्यरस प्रधान मनोरञ्जक उपन्यास]

ले० स्वर्गीय मिर्जा अजीमबेग चगताई

अनुवादक
श्रीयुत व्यथित हृदय

प्रकाशक
छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागंज–प्रयाग

पाँचवाँ संस्करण] १९५७ [मू० १॥)

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागज, प्रयाग



मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय
नागरी प्रेस, दारागज,
प्रयाग

भूमिका

मिर्जा अज़ीमबेग चगताई का 'कोलतार' नामक हास्यरस का उपन्यास, जो अभी हाल ही में हमारे यहाँ से प्रकाशित हो चुका है, पाठकों तथा समालोचकों को इतना सुंदर और सुरुचिपूर्ण प्रतीत हुआ है कि सभी ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। आज हम उन्हीं लेखक का यह दूसरा हास्यरस का उपन्यास प्रकाशित करके पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं। आशा है सहृदय पाठक कोलतार की तरह इसे भी पसन्द करेंगे। साथ ही पाठकों ने यदि इसे अपनाया तो यथा समय हम शीघ्र ही चगताई साहब के अन्य उपन्यास भी प्रकाशित कर उनकी सेवा में उपस्थित करेंगे।

—प्रकाशक

उन्होंने कहा, ऐसे उल्लू कहीं और रहते हैं। हमने दियासलाई जेब में रक्खी और कहा, अच्छा न दीजिये। वे हमारे पीछे दौडे किन्तु "लाहौल विलाकूवत" कहाँ हम, कहाँ वे। हम लोग बहुत आगे निकल गये और वे लौट गये। थोडी देर बाद जब हमने मुडकर देखा, तब वे हजरत साइकिल पर धीरे-धीरे चले आ रहे हैं। हम एक किनारे के पेड की ओट में छिप गये कि कहीं देख न लें। हमने देखा, कि उनके मुँह के सिगरेट के साथ ही जैसे ही साइकिल सामने आई, हाथ बढाकर उनके मुँह से सिगरेट छीन लिया। उन्होंने जब देखा, तब झुककर सलाम किया। वे वे बिके हुए की तरह हमारे पीछे साइकिल रखकर दौडे। इधर हमारे एक दोस्त ने क्या किया कि उनकी साइकिल लेकर यह गया, वह गया। वे हमें छोडकर उस ओर लपके। जब हमने यह देखा तब हम रुक गये। हमारे साथी ने कुछ दूर जाकर साइकिल जमीन पर रख दी, किन्तु एक छेद उनके ट्यूब में कर दिया। हम अपने दोस्तों से दूसरी सडक पर जाकर मिल गये। दाहिने हाथ की ओर देखते क्या हैं, कि एक बहुत बडा मैदान दूर तक चला गया है। एक आदमी लोटा लिये हुए मैदान के बीच में चला जा रहा था। मालूम होता था, कि वह पाखाने जा रहा है। जिस बँगले से वह आया था, वह बहुत दूर था और नल भी वहाँ से बहुत दूर था। हम शीघ्र सडक छोडकर दौडते हुये उसके पास पहुँचे। उसे पुकारते जाते थे, कि भाई जरा बात सुन लो। हम हाँफ्ते-काँपते हुए उसके पास पहुँचे। उसकी सूरत-सक्ल देखकर भय मालूम हुआ, क्योंकि वह तगड़ा-मजबूत जवान था। किन्तु हम भी जान पर खेल गये कि हमारी मिहनत बेकार न जाये। उलटी सीधी दो एक बातें करके लोटे में हाथ मारकर गिरा दिया और यह गया, वह गया। वह बड़े जोर से हमारी ओर दौडा, किन्तु

हमारी खुश किस्मती कहिये कि उस शक्ति ने उसको रोक लिया, जिससे रुस्तम भी हार मान गया होगा। हमने जब मुडकर देखा तब वे हजरत बिलकुल हारे हुए से। फिर तो हमने उसको मारे ईंटों के परीशान कर दिया। तात्पर्य यह कि इस काम को पूरा करके कुछ दूर गये होंगे कि देखा कि एक पहलवान साहब तह बन्द बाँधे चले जा रहे थे। उनके पैर इस प्रकार पड रहे थे कि हमारे मुँह में पानी भर आया, कि काश हम इनसे भी कुछ मनोरञ्जन करते, और कम से कम इनकी मजबूत पेंडुलियों में पैर अडाकर इन्हें गिराते। हमारे साथियों ने कहा कि यह हमें अवश्य मारेगा। हम इसकी सलाह नहीं देते। हमने कहा, चाहे जान जाये या रहे, इसको अवश्य एक टङ्गडी देंगे। हमारे साथी घबडाकर अलग हो गये, किन्तु हमने खुदा का नाम लेकर पीछे से जाकर उनके पैर में इस प्रकार अडाया, कि वे घुटनों के बल गिरे। वहाँ से पहलवान साहब जूता लेकर उठे और उठते-उठते उन्होंने जूता फेंककर मारा, जो हमारी पीठ में लगा। हमने बेवकूफी की, जो मुडकर देखा, क्योंकि आनन-फानन में हम पकड लिये गये, और पहलवान साहब ने मुझे एक तमाचा ऐसा मारा कि यदि हम अपने हाथ पर न रोकते तो कदाचित् हमारा मुँह फिर जाता। दूसरा पडने ही को था, कि हमारे साथी ने उनकी सोने के काम की टोपी उनके सिर से उचक ली। वे हमें छोडकर उधर दौडे, और हमारे साथी ने उनकी टोपी फेंककर अपनी जान बचाई। बहुत उल्टा-सीधा चक्कर देकर रास्ता काटा। हम चले जा रहे थे कि एक साहब ने हमको एक दूकान से पुकारा, 'मियाँ शाहजादे! जरा बात तो सुन जाओ।' हम जब पहुँचे तब उन्होंने एक चिट्ठी सामने रखकर कि यह बडी जरूरी चिट्ठी है, जरा पढ दो। हमारा तो जान ही जल उठा

हम जरा दूकान से हटकर चिट्ठी को फाड़कर अपने साथियों सहित ऐसे भगे, कि गालियों की मधुर और प्रिय आवाज भी कानों में न पहुँच सकी। कुछ और आगे पहुँचे तो देखा, कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। चूँकि हमें मजूर नहीं था कि उनमें लड़ाई हो, हम भी लड़ाई में शामिल हुए, और बिलकुल न्याय से काम लिया कि दोनों को ढेलों से मारना शुरू किया। फल यह हुआ कि दोनों लड़ना बन्द करके हम पर हमला कर बैठे, किन्तु हम भला कहाँ हाथ आते थे। दूर से देखा कि दोनों में मेल हो गया था। क्योंकि दोनों साथ साथ चले जा रहे थे। प्यास बहुत लग रही थी। एक नल पर पहुँच कर हमने पानी पिया। पास ही एक किताब वाले ने एक बड़ी चटाई बिछा कर दूकान लगाई थी। हमने जब ध्यान से देखा, तब मालूम हुआ कि नल से जो पानी बह कर बरबाद हो रहा है, बड़ी आसानी से एक कच्ची मुंडेर तोड़ कर इस तरह काम में लाया जा सकता है, कि वह इन किताब बेंचने वाले साहब की दूकान को तर-बतर कर दे, फौरन इसे काम में लाया गया, और हमें इसमें वह मजा आया कि कह नहीं सकता। किताब बेंचने वाले साहब अपनी किताबों को बचाने के लिए इस बुरी तरह कूद फाँद रहे थे कि हम कह नहीं सकते। कुछ आगे बढ़ कर हमने देखा, कि एक साकी साहब बहुत बड़ा हुक्का लिये चले आ रहे हैं। चिलम के सिर पर मानों पेचदबे की टर्किश कैप रक्खी थी, और कोयले चोटी तक भरे हुए खूब दहक रहे थे। हम लोग सलाम बन्दगी करके आगे बढ़े और हुक्का गुड़गुड़ाने लगे। हमारे दूसरे साथी हुक्के की तारीफ करने में लगे हुए थे, और साकी साहब को बातों में लगाये हुए थे। हमने आँख से इशारा किया,

और एक लम्बी साँस लेकर अपने दोनों फेफडो की ताकत को लगाकर ज़ोर से जब हुक्के को फूँका तब पानी चिलम के भीतर पहुँचा, उधर साकी साहब कोयलों के बुझने की आवाज से चिलम की ओर आकर्षित हुए ही थे, कि हम सिर पर पैर रख कर भागे। न मालूम कितनी गालियाँ सुनी। कुछ और दूर जा कर हमने पतङ्गबाज़ी देखी और कुछ डोर भी लूटी, जो फेंक फाँक दी, कुछ ही दूर गये थे, कि सामने से मिस विलियम अपनी साइकिल पर आती हुई दिखाई पडी। यह एक लडकी थी, जो मिशन स्कूल में पढती थी और हमसे बहुत डरती थी। क्योंकि हम मौके बे मौके जब कभी उसको दूर से आते हुए देखते, तब अपनी साइकिल की हवा निकाल कर खडे हो जाते और साइकिल रोक कर उसका पम्प लेकर बडी देर लगाकर हवा भरते। हमने उसे इतना तग किया था, कि उसको हर जगह रोकते थे। नौबत यहाँ तक पहुँची कि एक दिन हम पकड कर उसके बाप के बँगले पर ले जाये गये, किन्तु वहाँ बजाय सजा मिलने के मेरी आव भगत हुई, और केक खाने की नौबत आई। इस पेशी का फल यह हुआ कि मिस साहबा उलटी डॉटी गई और हमसे कहा गया कि तुम आवश्यकता पडने पर इनसे पम्प माँग कर साइकिल में हवा भर लिया करो। मिस साहबा ने हमसे मेल इन शर्तों के साथ किया था कि वे हमको देखते ही साइकिल से इकन्नी सडक पर डाल देती थीं, और हम केवल सलाम ही पर सतोष करते थे। हालाँकि हमारे पास साइकिल नहीं थी, किन्तु हमने आगे आकर रोकना चाहा। फौरन इकन्नी वसूल करके फौजी सलाम करके साइकिल को जाने दिया। इससे छुट्टी पाई थी, कि सामने से दो गोरे आते हुए दिखाई पड़े। वे अभी दूर ही थे कि हमने निश्चय कर लिया कि

कुछ ही क्यों न हो, हम इनसे अवश्य उलझेंगे। वे जब पास आ गये, तब हम स्वीकार करते हैं, कि हम डर गये और कुछ न कर सके, किन्तु थोडी देर के बाद जोश आया, और अपना रास्ता छोडकर गोरो का पीछा किया। खुलासा यह कि कोई विशेष शरारत करने की हिम्मत न पडी। विवश होकर हमने पीछे से उन पर धूल फेंकने ही पर सन्तोष किया और सिर पर पैर रख कर भाग आये।

खुदा खुदा करके, न मालूम कितने चक्कर काटकर अन्त में नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ कुछ लोग हमारा रास्ता देख रहे थे। ककडी के खेत, नदी के बीचोबीच, एक द्वीप में थे, और वहाँ जाने के लिए किसी नेक महाजन ने एक नाव दान में दे दी थी। यह नाव बडी सी थी, और उसके दोनों किनारों पर रस्से बँधे हुये थे। एक रस्सा इस किनारे के खूँटे से बँधा हुआ था, और दूसरा रस्सा नदी के उस पार। हम लोग नाव में सवार हो गये। रस्से का दूसरा सिर घसीट कर उस पार खेत पर पहुँचे। खेत पर पहुँच कर हमने पैसे की चार ककडियाँ ठहराई, किन्तु शर्त यह कि कडवी होगी तो फेंक देंगे और दूसरी लेंगे। अत बहुत सी मीठी ककडियाँ काट-काटकर फेंक दी, और उनके बदले में दूसरी लीं, किन्तु चलते समय जब हिसाब हो चुका, तब जमीन के उन ककडियों को भी उठा-उठा कर खा गये और इस प्रकार हमें पैसे की चार की जगह पर पैसे की पाँच ककडियाँ पडीं। यहाँ किनारे पर साधु भी रहते थे और हमने बहुत सफाई से, एक बहुत अच्छे ढङ्ग का चिमटा अर्थात् आग उठाने का हस्त कवच चुराया, और उसको कोट में छिपाकर ले आये। लौटते समय हम लोग जब नाव पर पहुँचे तब वह उस पार थी, और कुछ लोग उस पर बैठना ही

चाहते थे। हम शीघ्र दौड़े और रस्सा खींचना शुरू किया। यह हमारी हद दर्जे की बत्तमीजी समझी गई, और वे लोग गुस्से में आकर उधर से खींचने लगे, किन्तु बस रस्साकशी में हमारी जीत हुई और हम नाव पर बैठ गये। चूँकि हम इन लोगों को सता देना चाहते थे, अतएव हमने रस्सा घसीट कर इस किनारे का खूँटा उखाड़ दिया, जिसका पता उनको तब लगा, जब हम जरा दूर से खड़े होकर तमाशा देख रहे थे कि ये लोग अब उस पार नहीं जा सकते। तात्पर्य यह कि बीसों आदमी उस पार जाने को खड़े थे, और खूँटा उखड़ जाने के कारण न जा सकते थे। यहाँ से दोस्तों की सलाह हुई कि चलो बे फसली बेदाना अमरूद के बगीचे में चलें, और खुलासा यह कि दो मील का सफर तै किया और बगीचे में पहुँच गये। बगीचा बहुत बड़ा था और हमने निश्चय किया कि इस पर चारों ओर से हमला करना चाहिए। अतः दो दो, तीन तीन की टोलियाँ बन गईं, और चारों ओर से किनारे के पेड़ों पर बिना किसी बनावट के चढ़ गये, और अमरूद तोड़ना और फेंकना शुरू कर दिये। बगीचे के माली की निगाह पहले हमारे ऊपर पड़ी, और वह दौड़ा। सामनेवाली पार्टी ने जब देखा कि उसने मुझे देख लिया है, तब उन्होंने बड़े जोरों के साथ लकड़ी से कच्चे पक्के अमरूद झाड़ना शुरू कर दिये, और शोर मचाकर उसे अपनी ओर आकर्षित किया। उसने देखा कि उस ओर अधिक नुकसान हो रहा है, वह उस ओर भागा, और इस ओर हम उसके पीछे-पीछे उसकी झोपड़ी पर हमला कर बैठे। जो कुछ पाया, लूट लिया। मिट्टी के घड़े फोड़ डाले, और हुक्का फेंक दिया। तात्पर्य यह कि बहुत नुकसान हुआ। वे लोग पेड़ से उतर कर भागे। जब देखा कि माली नहीं मानता, तब दूसरी पार्टी की

ओर सकेत किया, कि देखो, ये अधिक नुकसान कर रहे हैं। उसने जब मुड़कर देखा, तब बुरा हाल था। हमारी पार्टी के जवाँमर्द लकड़ियों से मार मार कर पेड़ों को बिछाये देते थे। वह अभागा उस ओर दौड़ा कि उस पार्टी ने फिर अपनी जगह ले ली। खुलासा यह कि इतनी ही देर में हाँफ कर थक कर बैठ गया, और कहने लगा, खूब खाओ। हमने उसके कथन को पूरा किया, और आनन्द से खाकर लौट आये। लौटते समय हमें एक खेत के किनारे नारियल का एक हुक्का रखा हुआ मिला। जिसका हुक्का था, वह कुछ थोड़ी दूर पर कुयें के पास था। हमने झट हुक्का उठा लिया। अब मजे में उस समय तक उससे मनोरंजन करते रहे, जब तक कि उसने काम दिया। फिर फेंक दिया। वहाँ से वापसी में हमको एक पेड़ मिला, जिस पर कच्चे कैंत लगे हुए थे। सलाह हुई कि इनको तोडना चाहिए। फिर क्या था? सैकड़ों-हजारों कैंत गिरा दिये। इतने में एक आदमी आगया। उसने बुरा-भला कहा। तब हमने उसको उसी साधु वाले चिमटे से मारना शुरू किया। हमारे साथियों ने हमारा हाथ बँटाया, और उसको बेतरह लकड़ियों से मारना शुरू किया। खुलासा यह कि उसको उधेड कर गिरा दिया, किन्तु मारना बन्द न किया। उसका सौभाग्य था, जो सामने से चार पाँच आदमी हमको लट्ठ लिये, शोर-गुल मचाते हुए आते दिखाई पड़े। हम वहाँ से तीर की तरह भागे। हमारा बहुत कुछ पीछा किया गया किंतु बेकार। वापसी में किसी नई शरारत का अवसर न मिला अलावा इसके, कि एक खोंचेवाले की मिठाई इस प्रकार बरबाद की कि उसके पास की नाली में इतने जोर से पत्थर मारा कि तमाम छींटे उड़कर उसके और उसके खोंचे पर पड़े। धीरे

धीरे वहाँ से ऊलन मिल कम्पनी के पास होते हुये, और मामूली शरारतें करते हुये हम• यगमैन असोशियेसन क्लब पहुँचे। वहाँ क्या देखते हैं कि फुटबाल का एक मैच हो रहा है, और बहुत ज्यादा भीड है। जोरों से मैच हो रहा था। हमारे सभी साथी अलग हो गये थे। केवल वे ही रह गये, जो हमारे बॅंगले से हमारे साथ चले थे। हम भी थके हुए थे। अतएव मैच में जी न लगता था। बहुत तरकीबें सोचीं, कि क्या करें, किन्तु कुछ समझ में न आया। विवश होकर समय बिताने के लिए वहाँ पहुँचे, जहाँ अनगिनती साइकिलों की भीड थी, और सेफ्टीपेन निकाल कर पचर करना शुरू कर दिये। खुलासा यह कि एक एक साइकिल बेकाम कर दी। इससे छुट्टी पाये ही थे, कि सोचा कि मैच खतम करना चाहिये। फुटबाल मैदान से बाहर भी आकर गिरता था, और लडके दौडकर उठाकर खिलाडियों को वापस कर देते थे। हमने भी एक बार सेवा के इस काम को पूरा किया, किन्तु धीरे से अपने सेफ्टीपिन की नोक उसमें गडा दी। कठिनाई से दो किक लगे होंगे, कि दूसरा फुटबाल जो मौजूद रहता है, माँगा गया। उसका भी हमने वही हाल किया। चलिय छुट्टी हुई, दूसरा फुटबाल ही न रहा। मैच गडबड हो गया, किन्तु साथ ही हमारे ऊपर सन्देह-सा किया। गया। हमने अच्छा समझा कि वहाँ से खिसक चलें। मैच तितर बितर हो गया, और वास्तविक आनन्द तो तब आया, जब बाइसिकिल वाले अपनी बाइसिकिल पर चढकर शीघ्र ही उतरने के लिए लाचार हुए। अजीब मजा आ रहा था, सब लोग कह रहे थे, कि यह कौन शैतान था, जिसने फुटबाल को भी बिगाडा और बाइसिकिलों को भी। मैच से लौटकर हम अपने बॅंगले में जाने ही वाले थ, कि हमने देखा कि सामने

के परेड के मैदान में दो साँड लड रहे हैं। यह मैदान चारों ओर से एक नीची दीवाल से घिरा हुआ है, जिस पर सींकचे लगे हुए हैं। हम उस पर खडे होकर तमाशा देखने लगे, किन्तु कुछ लोग भीतर खडे होकर तमाशा देख रहे थे। दूसरो के साथ ही उनमें एक मिठाई वाला भी था। साँडों मे ऐसी रेल-पेल हुई कि खोंचे वाला दीवाल और साँडों के बीच में इस तरह आ गया कि उसको दीवाल पर खोंचा कन्धे पर रख कर इस प्रकार बैठना पडा, कि खोंचा हमारे सामने दस्तरख्वान की तरह लग गया। हमने भी खूब खाया। खोंचा वाला देख रहा था, किन्तु कुछ कर न सकता था। क्योंकि शोर-गुल और हुल्लड अधिक था, अफसोस, कि हमारी हँसी ने हमको अधिक न खाने दिया, और लडाई खतम होने के पहले ही हम भाग गये। चिराग जल गये थे कि इतने मे एक साहब आये। उन्होंने कहा कि चलो खिलौनों का मेला देख आयें, जो याद नहीं कि किस मन्दिर के हाते में होता था। हमने पहले तो इन्कार किया लेकिन फिर जाना पडा। परेड के मैदान से होते हुए उसके दूसरे फाटक पर निकले। देखा कि एक आदमी कपडे की दूकान लगाये हुये है। इस दूकान की दीवालें उसने चादरें तान कर कपडे ही की बनाई थी, और कपड़े ही की छत बनाई थी। हम उसके पीछे से होकर निकले, कि हमको एक छोटा सा ठेला दिखाई पडा, जिस पर इन कपडों को वह घर से लादकर लाया था। हमने शीघ्र ठेले को दूर ले जाकर जोर से दौडा कर दूकान की पीठ में इतने जोर से रेला, कि वह कपड़े की दीवाल को तोडता हुआ दूकान के भीतर इस तरह घुस गया, कि सारी दूकान गिर गई। भीतर से दो आदमियों के चीखने की आवाज आई। किन्तु हम भाग गये। अब हम ट्राम की

पटरी पटरी जा रहे थे। सोचा कि लाओ ट्राम की पटरी पर ईंट रक्खें, देखें क्या होता है। फौरन रख दी, और अस्पताल के पीछे की ओर खड़े होकर तमाशा देखने लगे। इतने में एक ट्राम जोर से आई और ईंट पर आकर बड़े झटके से रुकी। ट्राम वाले ने शोर मचाया और एक सिपाही दौड़ा हुआ आया। लोगों ने इधर-उधर देखा और एक शैतान ने न जाने हम लोगों की ओर कुछ सन्देह से—उँगुली उठाई, या इसलिए कि हम लोग अस्पताल की दीवाल फाँदकर भागे और हमारे पीछे कानिसटेबुल दौड़ा। हम अस्पताल के कम्पाउण्ड में अँधेरे में बेतहाशा भागे और बदकिस्मती से ठोकर खाकर गिरे और पकड़े गये। कानिसटेबुल ने बुरी तरह हमको घसीटा और डाँटा और पकड़ कर ले चला, किन्तु हम भला कब हिलने डुलने वाले थे। वहीं पसर गये। वह हमारा नाम और पता पूछता था और हम बता कर शीघ्र छूट सक्ते थे। किन्तु इसमें डर था कि घर पर मरम्मत होगी।

अत हमने न बताया। इतने में हमारी फौज आ गई और हमने इतमिनान से देखा कि हमारा साथी पीछे से कानिसटेबुल पर हमला कर बैठा, और साफा झटक कर चलता बना। कानिसटेबुल का उस ओर मुँह करना था कि हमने झटका देकर हाथ छुड़ाया और यह गया, वह गया। हमारा साथी भी थोड़ी दूर चलकर हमें मिला। वह साफा फेंक कर आया था। हम लोग सीधे अपने मन्दिर की ओर चले। रास्ते में देखा कि एक खोंचे वाले ने नौजवान मजदूर को पकड़ रखा है, और हुज्जत हो रही है। हम झट आ पहुँचे, और उसमें मुनासिब दखल दिया। हमने खोंचे वाले को बड़ी बुरी तरह डाँटा कि हमारे नौकर को छोड़ो, क्यों पकड़े हो, यह हमारा आदमी है।

उसने कहा कि मुझको उससे पाँच आने पैसे लेने हैं। हमने झट कहा, इसके जिम्मेवार हम हैं, इसको छोड दो। वह छूटते ही भागा, और इधर हम भी चल दिये। मन्दिर के हाते में पहुँचे। बडे जोर से मेला लगा हुआ था। वह धकापेल थी कि खुदा की पनाह। सबसे पहले यह निश्चय हुआ कि कचालू और सोंठ के बताशे खायें जायँ। अत: खूब उससे शौक किया। इसके बाद उसी जगह बैठ कर मिठाई की ठहरी। हम रुपया लेकर एक साथी के साथ मिठाई लेने के लिए गये, और बाकी दो को वहीं छोडा। हर दूकान पर पहुँच कर हर प्रकार की मिठाई चक्खी और वह भी इस तरह की अन्त में उन्होंने चखाने से इनकार कर दिया। हमने बगाली मिठाई पसन्द की। यद्यपि हमारे साथी काश्मीरी ब्राह्मण थे, किन्तु दूकानदार हम दोनों को भगी समझता था, और उसने कहा, अलग खडे हो। हमको बुरा मालूम हुआ। उसने हमारी माँग के मुताबिक सेर भर मिठाई तौली, और हाथ में न देकर हमसे कहने लगा, हाथ फैलाओ, हमने हाथ फैला दिये, उसने दूर ही से मिठाई का दोना हमारे हाथ पर छोडा। हमने झट हाथ ढीले कर दिये, और मिठाई का दोना नीचे गिर पडा। हम झट गरज कर दूकानदार पर बरस पडे, और उधर वह दूकान से नीचें उतर पडा, कि अपने पूरे दाम ले लूँगा। पूरा फसाद खडा हो गया। किन्तु हमें न दाम देने थे, न दिये। दूसरी जगह से मिठाई खरीदी, और लाकर पान वाले की दूकान पर पहुँचे। यह पान की दूकान भी देखने योग्य थी। पान वाला मुख्य दरवाजे के बाईं ओर आदमी के कद की ऊँचाई पर एक मचान बाँध कर बैठा था, और उसने दूकान को ऐसा सजाया था कि लोग उसी दूकान पर टूट पडते थे। पानवाले साहब

अपने आप को न जाने क्या समझे हुए थे। दूकान पर बीसों रंग बिरंग की बोतलें और सजावट का सामान, बड़ी ऊँचाई तक चुना हुआ चला गया था। कपड़े की छत लगाई थी, जिस में छोटे छोटे फानूस लटके हुए थे। बहुत सी तलवारें चारों ओर लगी थीं। पानवाड़ी साहब के साथ में एक छड़ी थी, जिसे वे हर ऐरे गैरे लड़के को रसीद करते थे, जो उनके मचान के खम्भे के पास आ जाता था। हमको यह बहुत बुरा मालूम हुआ, और हमने उनसे कहा कि ऐसा क्यों करते हो, तो उन्होंने कहा, कि साहब समय नहीं था। यह बाँस का मोटा खम्भा, जिस पर कि मचान रुका हुआ है, जमीन पर योंही रखा हुआ है, और मुझे डर है कि कहीं धक्का लग कर सारी दूकान की दूकान नीचे न आ पड़े। 'हमने कहा कि यह तो जमीन में गड़ा हुआ है, भला कैसे गिरेगा? उन्होंने कहा कि साहब गड्ढा खोदने का समय ही नहीं मिला। यह योंहीं रक्खा हुआ है, और फिर खूबी यह कि मचान के तख्ते में बँधा भी नहीं है, इसलिए मुझको बहुत डर है।

अब पान खाकर हमने जब दोस्तों से सलाह की, कि भाई बोलो क्या राय है? इस पान वाले की दूकान क्यों न गिराई जाय? तब इस पर हमारे किसी साथी ने हामी न भरी। दूकान क्या थी, पूरा तानिया था। मचान पर आराम और ठाट बाट के इतने सामान थे, कि तिल धरने की जगह नहीं थी, और भीड़ यहाँ इतनी थी कि पकड़ा जाना निश्चय था, किन्तु हमने कहा कि चाहे कुछ भी हो, हम इस काम को अवश्य करेंगे। हमारे साथियों ने कानों पर हाथ रक्खे। हमने भागने का रास्ता इत्यादि बड़े ध्यान से देखा, और घूम-फिरकर उस समय पहुँचे, जहाँ हाते की छोटी-सी कच्ची दीवाल थी। यह जगह

अलग-सी थी। हमने साथियों के साथ दो-तीन घटे सैर की, और फिर अपने काम की ओर ध्यान दिया। घूमते फिरते दूकान के पास आकर हमने हिम्मत करके भीड के दबाव में खभे से लग कर जब डण्डे को घसीटा, तब एक जोर का शोर गुल हुआ, और दूकान छत के सजावट के सामान, पान वाले, और बोतलो के साथ नीचे आ पडी। कत्थे और चूने की कुल्लियाँ सब एक हो गईं, और गजब यह हुआ, कि वह बरतन भी गिरा, जिसमें पान वाला पैसे रखता जा रहा था। पैसे जब भीड मे गिरे, लोगों ने हाथ लगाना शुरू कर दिया। हमको इसमें भागने का अवसर मिल गया, और इस शोर गुल में हम अपने दोस्तों सहित दीवाल फॉदकर गली में कूद कर इस बुरी तरह भागे, कि न जाने कहाँ आकर निकले। हमको पकडे जाने का बहुत डर था, क्योंकि दरवाजे पर जो कानिसटेबुल था, उसने हमको शरारत करते हुए कदाचित् देख लिया, और आश्चर्य नहीं कि हम पकड लिये जाते, यदि कहीं दूकान न लुटने लगी होती। रात काफी हो चुकी थी। और हम नहीं मालूम किस जगह थे, जहाँ हद से अधिक सन्नाटा था। लोग जगह-जगह चारपाइयों पर सड़क के किनारे सो रहे थे। एक लाला एक बीच मोड पर नगे बदन पलग पर इस तरह तोंद फैलाये लेटे हुए थे, कि हमको लाचार होकर अपना सिगरेट, जो खतम होने के करीब था, उनके पेट पर रख देना पडा। वे ऐसे तडपकर पेट पीटते हुए उठे, कि हमको मजा ही आ गया और हम भाग कर दूसरी जगह पहुँचे। कुछ आगे पहुँच कर हमने एक चारपाई सोने वाले के सहित उलटी, और घर लौटने से पहले हमने एक और नगे बदन सोने वाले के पेट पर जलता हुआ सिगरेट रख कर बहुत अच्छा तमाशा देखा। अधिक रात बीते घर लौटे।

चूँकि सबेरे हम घर से छुट्टी माँगकर नहीं गये थे, इसलिए दूसरे दिन केवल यही जुर्म हमारे ऊपर लगाया गया था कि दिनभर क्यों गायब रहे ? इसके बदले मे हमारा दिन का खाना बन्द किया गया, और हमे विवश होकर अपने पण्डित दोस्त के यहाँ खाना खाना पड़ा।

दूसरा परिच्छेद

शरीर लड़की

हम एन्ट्रेस में पढ रहे थे और एक कौमी स्कूल के बोर्डिङ्ग मे रहते थे। बोर्डिङ्ग से कुछ ही दूर पर एक मकान था जो बोर्डिङ्ग से स्कूल और हाकी खेलने के फील्ड में जाने के रास्ते म पडता था। इस मकान मे एक सय्यद साहब रहते थे, जो कचहरी मे नौकर थे। सडक से कुछ हट कर मकान की एक खिडकी थी जिसमें लोहे के छड लगे थे और किवाड भी लगे थे। ये किवाड हमेशा बन्द रहते। एक दिन की बात है कि हम उस खिडकी के नीचे खडे होकर अपने एक दोस्त से बातें कर रहे थे, कि हमको खिडकी के उस ओर कुछ आहट मालूम हुई। हमने ध्यान से देखा तो एक सूराख से एक आँख का भाग दिखाई पडा। ऐसा मालूम होता था कि कोई झाँक रहा है। हम भी उस ओर देखने लगे कि आँख उस सूराख के सामने से छिप गई। हमको जो शरारत सूझी, तो हमने गली को सूनी पाकर अपने दोस्त का सहारा लेकर उसी सूराख से अपनी

आँख लगा दी, किंतु अब वहाँ वह न थी। सूराख में से मकान के भीतर का भाग साफ साफ दिखाई पडा। यह खिडकी दालान में थी। दालान के बीच में एक नवजवान लडकी खडी उस सूराख की ओर देख रही थी। यह लडकी ऐसी थी कि हमको बहुत अच्छी मालूम हुई और हम उसको देख रहे थे। ऐसा मालूम होता था, कि उसने समझ लिया कि हम सूराख में से झाँक रहे हैं। अत. वह सामने से हट गई। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि फिर सामने आये। आँख खोले हुये देख ही रहे थे कि उसी छोटे सूराख पर किसी ने मुट्ठी भर कर धूल झोंक दी जो सब की सब आँख में पडी और हम बेचैन होकर गिर पडे हमारे दोस्त जो चश्मा लगाये हुये थे, उन्होंने जब पञ्जों के बल खड़े होकर देखा, तब उनके साथ भी यही व्यवहार हुआ, और उन्होंने देख लिया कि यह शरारत उसी लडकी की थी, किन्तु चूँकि वह चश्मा लगाये हुये थे, अत' उनकी आँख के भीतर कुछ न पडा। हमारी आँख दिन भर गडती रही, और हमसे क्लास में पढा न गया। यद्यपि उस शरीर लडकी पर बहुत ही क्रोध आ रहा था, किन्तु साथ ही हमको वह पसन्द भी थी, और विशेपतया उसका वह स्वाभाविक ढङ्ग।

लौटते समय हमने फिर झाँका और उसने फिर हमारी आँख मे मिट्टी डालने की कोशिश की, किंतु हम सावधान थे और बच गये। ऐसा मालूम होता था कि स्कूल की घटी की आवाज सुनकर वह खिडकी के पास आ गई थी। अब भविष्य के लिए हमने दैनिक नियम बना लिया, कि अवश्य अवश्य सूराख में से झाँकते, और आँख में धूल डलवाते। जब यह प्रतिदिन का नियम हो गया, तब हमने केवल इसीलिये तीन आने का चश्मा खरीद लिया, किन्तु उसको इस बात का पता

लग गया। क्योंकि एक दिन उस चुलबुली ने हमारी आँख मे छतरी की लोहे की लम्बी सलाख इस तरह भोंक दी, कि हम अन्धे होते होते बचे और हमारे चश्मे का शीशा फूट गया। किन्तु हम भी बाज न आये। उसने हमारे इस हठ को देखकर एक दिन धीरे से जैसे निज से कहा, "आँखें फोड़े बिना न मानूँगी।" हमने क्रोध में आकर कहा कि "हम तुमको देखने से बाज न आयेंगे।" इस लड़की से यह हमारी पहली बात चीत हुई।

२

हमारे घर से हलुये का पारसल आया हुआ था और हम जेब में डाले हुये दिन भर खाते रहे। नियमानुसार हमने आकर झाँका और उसने हमारी आँख मे धूल झोंकी। हमने जबान में कहा, "हलुआ खा।" यह कहकर हलुये का टुकड़ा जो मुलायम था, सूराख के ऊपर रखकर जोर से दबा दिया। सूराख बिलकुल गोल न था, किन्तु कम से कम और ज्यादे से ज्यादा दुअन्नी बराबर था। अत काफी हलुआ पहुँच गया। हम थोड़ी देर बाद चले आये। नहीं पता, उसने हलुआ खाया या नहीं।

दूसरे दिन जब हम पहुँचे, और झाँककर देखा तब कोई न था। हमने खिड़की पर हाथ मारा तो क्या देखा, कि लपकी हुई आ रही है, और झट से उसने मुट्ठी भर राख जमीन से उठाई। हम भी होशियार हो गये, और वार खाली गया। शीघ्र ही हमको सूराख से कोई सफेद चीज पतली सी निकलती हुई मालूम हुई। हमने पकड़ कर जो घसीटा, तो खोये की लम्बी-लम्बी बत्ती सी थी। हमने झट चक्खा और उसको

था, जिसमें दुनिया भर का प्रेम का हाल और रुपये पैसे के लालच के किस्से लिखे हुये थे। हमने कहा कि हम इसके हरगिज जिम्मेदार नहीं। उसने कहा, "यदि कहो तो मैं इसको कुछ सजा दूँ और उल्लू बनाऊँ।" हमने सहमति दी। हमसे उसने कहा, कि तुम मेरी ओर से अपना अक्षर बदल कर एक पत्र लिख लाओ। उस पत्र में दूसरी बातों के अलावा यह अवश्य लिखना, कि यदि आप मुझको इस समय दस रुपये कर्ज दे सकेंगे, तो कृतज्ञ हूँगी।" हम बोर्डिङ्ग आये और हमने बहुत ही विचार पूर्ण शब्दों में पत्र के लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुए दस रुपये की आवश्यकता प्रकट की, और नीचे नाम इत्यादि लिखने वाली का न लिखा। बल्कि केवल लफ्ज 'फकत' लिख दिया। हमने जाकर पत्र सूराख से अपनी साथिनी को दिया। उसने पढ़कर बहुत पसन्द किया, और कहा, कि इसको दरवाजे की चौखट के पास ईंट से दबाकर रख दो, जैसा कि उन्होंने अपने पत्र में लिखा था। उन्होंने चालाकी, या बेवकूफी से अपना नाम नहीं लिखा था, किन्तु पत्र की इबारत से पता चलता था, कि हमारे साथी हैं। क्योंकि बोर्डिङ्ग और स्कूल की चर्चा थी। हम इस फिक्र में थे कि किसी प्रकार हमको नाम मालूम हो तो अच्छा है, और इसीलिये हमने वह पत्र अपने पास रख लिया कि कदाचित् लिखावट से हम नाम का कुछ पता लगाने मे सफल हो जायें।

तीसरे दिन हमारे दोस्त ने हमको खिड़की से दस रुपये का नोट दिया, और कहा, कि "उल्लू फँस गया।" हमने कहा, हमको नोट नहीं चाहिए। इसका जवाब हमको यह मिला, कि इसको रख लो, मैं नहीं रक्खूँगी। हमने नोट रख लिया, और

परिणामत हमने और हमारे दोस्त ने बड़े आनन्द से महीने भर तक मेवे खाये।

इस बीच में हमने कोशिश करके यह भी पता लगाया कि हमारी सहेली के बेवकूफ प्रेमी कौन हैं। हमने उनको अपनी शरीर सहेली से षडयंत्र कराके इस बुरी तरह लूटा कि वे बोर्डिङ्ग के बहुत से लड़कों के कर्जदार हो गये और इस तरह कि प्रेम को विदा करने पर लाचार हो गये।

४

हालाँकि इस लड़की की और हमारी बड़ी गहरी दोस्ती हो गई थी, किन्तु वह हमारे साथ शरारत करने से न चूकती थी। एक दिन तो उसने हमारी उँगली में जो हमने शरारतन् सूराख में डाल दी थी, ऐसा काटा कि उसमें दाँतों के निशान बन गये, और वह सूज गई, और फिर यह जुल्म ढाया, कि तीसरे दिन जब हम नाराज होकर फिर लौटकर उस जालिम को उँगली दिखाने आये, तब उसने उसमें इस प्रकार सुई भोंक दी, कि हमने जोर से जो हाथ झटका, तो सुई की नोक उँगली में टूट कर रह गई। हम जल कर लौट आये और वह पहले ही की भाँति हँसती हुई चली आई। हमारी उँगली में सख्त दर्द हुआ, और शाम तक सूज आई। रात भर हम तड़पते रहे, और उस जालिम को दुआयें देते रहे। तीसरे दिन ऐसा बुरा हाल हुआ, कि उँगली बिलकुल फोड़ा होगई। एक दिन हम इसी बीच में गये, और अपना हाल सुनाया, किंतु उसके दिल पर कुछ असर न हुआ। उसने यही कहा, कि "अच्छा हुआ।" नौबत यहाँ तक पहुँची, कि हमारी उँगली पक गई और चीरी जाने को हुई। अस्पताल जाते समय हम यह कहते गये कि तूने हमारी उँगली का यह हाल कर दिया है। हम कभी अब तेरे पास न आयेंगे और यह

साहब की खिदमत में जज साहब ने हमको पेश करके कहा, कि "बोलो, यह लड़का तुमको पसन्द है, या नहीं।" सय्यद साहब की भला मजाल थी कि चूँ भी करते। हम जबरन व कहरन पसन्द किये गये। हमसे जज साहब ने कहा, तुम जाओ। अतः हम हाँफते काँपते लौटकर सीधे खिड़की के पास आये और हमने सबेरे जो खुशखबरी सुनाई थी, उसे प्रमाणित करते हुए कहा कि "अब हम तुमसे शादी करने वाले हो रहे हैं।" उसने इसको मजाक ही समझा, और जवाब में यह कहा, कि "कदाचित् तुम्हारी शामत आने वाली है।" इस पर हमने कहा, कि "लगभग बहुत जल्द हम स्वय तुम्हारी उल्टी शामत बुलाने वाले हैं।" हमने बहुत कुछ गम्भीर होकर कहा कि हम दिल्लगी नहीं करते, बल्कि वास्तव में हमारी शादी तुम से निश्चित् हो गई है, किन्तु उसे विश्वास न हुआ। क्योंकि न तो वह झेंपी और न उसने शरारत से भरी हुई बातें बन्द की।

७

हम बोर्डिङ्ग ही में ठहरे हुए थे कि हमारे पास हमारे कृपालु हेड मास्टर साहब आए, जिनको जज साहब ने बुलाया था, और वे उनसे मिलकर आ रहे थे। जब बातचीत हुई, तब हमने उनसे साफ कह दिया कि बिना अपनी बुजुर्ग माँ से मिले हुए और उसकी इच्छा के कुछ नहीं कर सकते। किन्तु दूसरे ही दिन हेड मास्टर साहब ने हमारे स्वर्गीय पिता के एक दोस्त को, जो यहाँ डिप्टी कलक्टर थे, ला खड़ा किया, और उन्होंने उसी दिन कुछ गड़बड़ करके ऐसा तार दिया कि हमारी अम्मा जान दूसरे दिन ही उनके घर पर मौजूद थीं और दूल्हा बनाये जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। इनसे और हमारी

अम्मा जान से कहा गया कि इस विवाह के करने में हमारे भविष्य की अच्छाइयाँ हैं।

चौथे दिन हमारा निकाह उस शरीर लड़की से हो गया और निश्चय यह हुआ, कि विदाई तब होगी जब हम पढ़ाई खतम कर लेंगे। हमको मालूम हुआ कि जज साहब ने हमारी बीवी से चाचा और भतीजी की सम्बन्ध जोड़कर उसको बीस रुपया माहवार देने का विचार किया है। हमारी प्रतिष्ठा इस बात को कभी भी स्वीकार न करती, किन्तु चूँकि यह मामला हमारे ससुर साहब और जज साहब के बीच का था, अत हम कुछ न बोले।

अब जरा विचार तो कीजिये कि निकाह के बाद जब हम खिड़की के पास पहुँचे, तब जवाब नदारद। बहुत कुछ हाथ मारा, खटखटाया, किन्तु बेफायदा। हम झखमार कर चले गये और चलते समय भी हमारी विवाहिता बीवी हमसे बात करने न आई।

किन्तु यह बेरहमी और खामोशी अधिक दिनों तक न रही। हम खिड़की बजाने के लिए चुपके से छुट्टियों मे अलीगढ से भाग भागकर आते थे और अपनी शरीर बीवी से मिल कर चले भी जाते थे। हमारे ससुर साहब या किसी दूसरे को पता भी न चलता था। हमारी बीवी की शरारतें उसी प्रकार जारी हो गईं। हम कभी न भूलेंगे कि कैसी कैसी खुशामदें करवाती थी। तब कहीं, और वह भी उँगली में अच्छी तरह सुई भोंकने के बाद अपनी चुलबुलाती सूरत की बस एक झलक दिखाती थी।

पढाई खतम होने पर विदाई हो, इसकी जगह पर हमारी अम्मा जान हमारी बीवी को डेढ साल बाद ही घर ले आई।

जब हमसे हमारी बीबी को पहली मुलाकात हुई, तब भी वह शरारत से बाज न आई। हम जब कमरे में पहुँचे तब क्या देखते हैं कि लैम्प जल रहा है, और हमारी बीबी अपने आप को अच्छी तरह कपड़ों मे लपेटे और सिर मुँह सब छिपाये पलग पर बैठी है। हमने अपनी प्यारी बीबी के कन्धे पर हाथ रखकर हिलाकर कहा, "बन्दा परवर सलाम अलेकुम, कहिये, मिजाज अच्छा है।"

यह कहते हुए हमने रजाई घसीट कर अलग कर दी, किन्तु वह न बोली, और शर्म और लज्जा की सीमा बन गई। फिर हमने हँसी के उद्देश्य से कहा, "कहिये, आपकी वे शरारतें क्या हुई, क्या घर छोड आई?" यह कहकर जब हमने जवाब न पाया, तब हम पलँग पर बैठ गये, और हमने कहा लाओ अपनी चुलबुली बीबी को जरा गले तो लगायें।" यह कह कर हमने उस शरीर को गले से लगाया ही था, कि रा मे उसने ऐसी निष्ठुरता से सुई चुभोई कि हम व्याकुल होक उछल ही तो पडे। फिर इसके बाद उसने मुझसे मजाक न किया और यह सुई का अन्तिम मजाक था।

हमारी इस शरीर के साथ खूब निभी और आनन्द मे निभ रही है, और यह केवल उसी का फल है, कि हमारे बीबी के नक्ली चाचा अर्थात जज साहब ने हमको पढ़ा खतम करने के बाद ही ऐसी नौकरी दिलवा दी, कि अब ह चैन करते हैं।

चूँकि हमारी कोर्टशिप की कहानी लोगों को मनोरञ्जन मालूम हुई, अत हमने भी उसे बहुत ही सक्षेप के साथ पाठ को भेंट की है।

तीसरा परिच्छेद

गलत फहमी

१

हम बीबी से सवेरे यह कहकर गये थे कि नौ दस बजे तक लौट कर आ जायँगे, किन्तु मछली का शिकार भी क्या बेकार चीज है। नौ बजे की जगह पर, गर्मियों की कड़ी धूप में, बारह बजे के बाद घर पहुँचे। शिकार में हमें उतनी ही सफलता मिली, जितनी आमतौर से मछली के शिकारियों को मिला करती है। हैरान भी हुए, और कुछ न मिला। भूखे प्यासे, जलते भुनते घर पहुँचे। नहा धाकर कमरे में जब पहुँचे, तब नौकरानी ने कहा—'बेगम साहिबा आपका इन्तजार करते करते अभी सोई हैं।" हम झट दूसरे कमरे में गये और खाना खाया। हाथ धोकर सिगरेट सुलगाया और सीधे कमरे में पहुँचे। हमें ऐसा मालूम हुआ कि हम स्वर्ग में आ गये। तीन ओर खस की टट्टियाँ लगी हुई थीं, और बिजली का पङ्खा जोरों में चल रहा था। हमारी शरीर बीबी सो रही थी। हमने ध्यान से उसके पवित्र चेहरे को देखा। कुछ सोचा। सामने दवात रक्खी थी। कुछ और ख्याल आया। अत: कलम को उल्टी ओर से डुबोकर चेहरे को भयानक बना दिया, और उसके बाद हम भी अपने पलँग पर पड कर सो रहे। थके मांदे तो थे ही। ऐसे सोये कि तन बदन का ख्याल न रहा।

कुछ देर के बाद हमने मुँह पर ठंडक सा अनुभव किया। आँख खुली तो बेगम साहिबा को शरारत करते हुए पाया।

अर्थात् बर्फ का टुकड़ा लेकर हमारे मुँह पर मल रही थीं। अपनी मूछों का उनको पता भी न था। जरा सोचिये, यह पाक और भयानक चेहरा, और उस पर यह शरारत। हमें बेकाबू हँसी आई, जिसे हमने अच्छी तरह शाबाशी दी। उठकर हमने दरवाजा खोला। शाम होने को करीब थी। इतने में एक नौकरानी आई, और उसने जब अपनी स्वामिनी के भयानक चेहरे को देखा तब हँसती हुई भागी।

"क्यों हँसती है!" हमारी बेगम साहिबा ने नाराज होकर पूछा। किन्तु वह लौटकर न आई। गुस्से में मूँछें विचित्र बहार दे रही थीं।

इतने में दूसरी नौकरानी आई और दरवाजे पर पैर रखते ही उसने कहा —

"क्या आप मुझे बुलाती हैं?" यह कहकर उसने भी अपनी स्वामिनी का डरावना चेहरा देखा, और वह भी हँसी को रोकती हुई बाहर निकल गई।

हमारी बीवी ने कहा, "आज मालूम होता है, इनकी शामत आई है!"

हमने कहा, "आज हमें भी डर लग रहा है।" वह कुछ न समझीं, और हमने इस हँसी में सम्मिलित होना व्यर्थ समझा और उठ कर बाहर चल दिये।

२

घण्टे भर बाद जब हम घर में आये तब मालूम हुआ कि बेगम साहिबा नहाकर निकली हैं और आइने वाली मेज पर कंघी कर रही हैं। हम कमरे के दरवाजे पर खड़े हो गये।

हमने देखा कि आदमी के कद के बराबर के आइने में देख-देखकर परो की हवा से बाल सुखाये जा रहे हैं। बाल उड-उड कर हमारे लिए विचित्र भाव पैदा कर रहे थे, और हम उस सौंदर्य के प्रेमी बने हुए थे कि आइने में हमारी आँखें चार हुई। मुडकर हमारी ओर देखा, किन्तु शीघ्र ही फिर मुँह मोड लिया कि करीब पहुँचे, और जैसे ही आँख से आँख मिली तो क्रोध से भरी आँखें हमारी ओर डालीं, और ज्यों ही मुस्कुराहट आई, तो उसको दबा कर और मस्तक पर शिकन डालकर चिडचिडाहट के साथ कहा, 'इस प्रकार की हरकतें हमें पसन्द नहीं हैं।

हमने कहा, "क्यों, क्या हुआ ?"

"ऐसे मजाक से क्या फायदा कि सभी नौकरानियाँ हँसती फिरें।"

"हमने कोई मजाक नहीं किया।" हमने खुशामद से कहा।

"तो फिर यह आखिर क्या था ?"

"आज हम अस्तुरा लेकर आदत के मुताबिक बैठे थे, तब तुमने ही तो कहा था, कि हमें मुँछें बहुत पसन्द हैं। हमने दिल में सोचा की हमें तो पसन्द नहीं। क्याकि हम प्रतिदिन उनको साफ कर डालते हैं। किन्तु चूँकि हमारी बीवी को पसन्द है, तो लाओ जरा उसकी मुँछें ही बना दें।"

यह सुनकर गुस्सा रफूचक्कर हो गया और बीवी ने हमारी शरारत को पसन्द करते हुए हँसकर कहा, "हमारा यह मतलब कब था मूँछें तुम रक्खो।"

हमने खुशामद के साथ कहा, "लाहौल विला कूव्वत, तुमने यदि पहले ही बता दिया होता, तो यह गलती ही क्यों करते।"

- इधर-उधर मतलब की दो-तीन बातों के बाद हमने अपनी बीवी को एक गिलास अनार का शर्बत पिलाया, और वह भी अपने हाथ से, और मजदूरी वसूल करने के बाद हमने कहा, "क्यों दोस्त, हमारा एक काम कर दोगे !"

"फिर तुमने उसी मरदानी बोली से मुझे सम्बोधित किया, क्या काम है !"

"हमारे एक हिन्दू दोस्त आ रहे हैं, उनके खाने का प्रबन्ध। प्रबन्ध खास, और यह कि अपने हाथ की कोई चीज उनको अवश्य खिलाना। ये भी वैसे ही दोस्त हैं कि जिनसे रात भर बातें की जानी चाहिये।"

"आखिर तुम यह रात भर क्या बातें करते हो ?" बीवी ने खोदकर पूछा।

"उनमें से अधिकतर तुम्हारी शरारतों की बातें करेंगे"— हमने हँसकर कहा।

"यह गलत है। तुम बदचलन आदमियों से मिलते हो। आखिर बताओ तो सही, कि गुलाबचन्द से तुमको क्यों इतना प्रेम है ? वह आदमी, जो बाजारू औरतों में तुम्हें ले जाये, कभी भी मिलने योग्य नहीं।"

"हम ठीक कहते हैं कि यह जो आ रहे हैं, उनसे तुम्हारी या उनकी अपनी बीवी की बातें करने के अलावा और कुछ भी नहीं करेंगे। तुम स्वयं जानती हो कि यदि तुमसे हमें झूठ ही बोलना होता तो हम तुमसे कहते ही क्यों ?"

वे बोलीं, "यह तो हम जानती हैं कि यदि तुम किसी रंडी के यहाँ जाओगे, तो हमसे अवश्य कह दोगे और यह भी मालूम है कि यार दोस्तों के साथ जबरदस्ती चले जाते हो, किन्तु

आखिर उसका परिणाम क्या होगा ?"—बीबी ने कुछ दृढता के साथ कहा।

"कुछ नहीं, परिणाम क्या हो सकता है। तुम स्वय जानती हो कि मैं तुम्हारा हूँ। चाहे मैं दिन रात बाजारू औरतों में ही रहूँ, तब भी कोई अन्तर न होगा।" इतना कहकर मैंने बीबी की ओर ध्यान से देखा और फिर कहा —

"अच्छा, जैसा कहोगी, वैसा ही करेंगे। किन्तु इन दोस्तों का हम हद से ज्यादा आदर सत्कार चाहते हैं।"

३

रात का खाना हमने बाहर दोस्त के साथ कमरे में खाया। खाना खाकर हम अपने दोस्त सरदार सुन्दरसिंह से बैठे हुए बातें कर रहे थे। बिजली की रोशनी चूँकि तेज थी, अत हम कमरे के उस दरवाजे के पास बैठे हुए थे, जो सडक की ओर खुलता था। इस कमरे के बीच के दरवाजे के सामने ही एक बडी आलमारी रक्खी थी, जिसमें आदमी के कद के बराबर का आइना लगा हुआ था।

सहसा एक नौकरानी आई और उसने सिर डालकर झाँका ही था कि झट लौट गई। हम चूँकि सरदार साहब से बातें करने में लगे हुए थे, अत उस ओर ध्यान न दिया। नौकर को बुलाकर पान लाने के लिए कहा और फिर बातों में लग गये।

× × ×

अब जरा भीतर का हाल सुनिये—

बीबी ने पान बनाकर नौकरानी के हाथ भेजे थे, कि इतने मे वह हाँफती काँपती दौडी हुई आई। पान की थाली रखकर बोली, "बेगम साहिबा, गजब हो गया।"

"क्यों क्या, हुआ ?" बीबी ने घबराकर पूछा।

उसने कहा, "मैं जब पान लेकर पहुँची, तब मुझको कोई दिखाई पड़ा। मैंने सोचा कि कमरे में होगा। कमरे के दरवाजे पर पहुँची ही थी कि बेगम साहिबा, बस क्या बताऊँ, कि क्या देखा।"

"अरी कमबख्त, आखिर क्या देखा ?"

"कमरे में कोई औरत खड़ी थी। बस, मैं उल्टे पैरों ही भागी।"

"झूठी कम्बख्त पागल है। औरत भला कहाँ से आई ?"

"यदि विश्वास न पड़े तो किसी दूसरे को भेजकर दिखा लीजिये।"

बीवी ने शीघ्र दूसरी नौकरानी को भेजा। वह भी उसी प्रकार दौड़ी आई और उसकी बात को सही बताया। सूरत-शकल या कपड़े के बारे में कुछ विवरण हमारी बीवी को मालूम न हो सका। क्योंकि दोनों औरतें शीघ्र ही एक झलक दिखाकर भाग आई थीं।

उधर हम इस प्रकार बातों में लगे थे कि कुछ खबर न थी। दूसरी औरत जब फिर उसी प्रकार झाँक कर चली गई तब हमने नौकर को बुलाया कि पान लाओ।

नौकर पान लेने चला कि नौकरानी ने रास्ते ही में उसको पकड़ा कि चलो, बेगम साहिबा बुलाती हैं। बेचारा नौकर कसमें खा रहा था कि बेगम साहिबा, कोई औरत नहीं है, किन्तु बेगम साहिबा को कैसे विश्वास होता, जब कि दो आँख देखी गवाहियाँ मौजूद हों। खुलासा यह कि हम बुलाये गये।

हम सरदार साहब से इजाजत लेकर गये, तो बीवी को अलग टहलती हुई पाया। हमने आदत के मुताबिक कन्धे पर हाथ रखकर कहा कि "दोस्त, क्या है ?"

कोई जवाब न देकर वे रुक गई। हमने देखा तो चेहरा उदास और चिंतित था। पहले इसके कि हम कुछ कहें हमारा हाथ पकड़कर कहा, "मैंने कौन सा अपराध किया है? मुझसे क्यों नाराज हो गये?" यह कहकर हमारी छाती पर सिर रख कर सिसकियाँ भरने लगीं। हम इसके लिए बिलकुल तैयार न थे। घबड़ाकर हमने कलेजे से लगाकर कहा—"खुदा के लिए कुछ कहो तो।"

उसने आँसू पोंछते हुए कहा, "बाहर कमरे में यह औरत कौन बैठी है?"

हमें हँसी आई और हमने आश्चर्य चकित होकर कहा, 'तुम क्या बक रही हो?'

'मैं बक नहीं रही हूँ, बल्कि सच कह रही हूँ।" बीबी ने जोर देकर कहा।

"मालूम होता है, तुम्हारा दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा है।"

'मेरा दिमाग बिलकुल ठीक काम कर रहा है।"

हमारी बुद्धि चकरा गई थी, किन्तु हमने मुसकुराकर कहा "मान लो यदि बैठी भी है तो तुम्हारी बला से।"

"खुदा के लिये कोई नुक्सान नहीं। जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा खुदा खुश। जाओ, शौक से रात भर बाहर रहो। किन्तु मेरे दिल पर जो चोट लगी, वह इस बात पर कि आखिर बहाना करने से क्या फायदा? पहले ही कह देते कि एक दोस्त रण्डी सहित आयेंगे और मैं रात भर बाहर रहूँगा।" ये शब्द बीबी ने दर्दीले स्वर में कहे।

"आखिर तुम्हें यह " इतना ही हम कहने पाये थे, कि बीच ही में बात काट दिया और फिर उसी प्रकार कहा-

'मैं उन औरतों में नहीं हूँ जो अपने शोहर को खाहमखाह तग करें। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम मेरे ही हो। चाहे बुरे आदमियों मे बैठो चाहे नेक आदमियों में। मैं यदि तुमको रोकूँगी तो और उपायों से रोकूँगी न कि लड़कर। किन्तु दुख तो मुझे अपने भाग्य पर होता है कि तुमने मेरी इज्जत न की। मुझको वेवकूफ समझा और मुझसे सचसच न कहा। यह तो तुम्हारे दोस्त की रण्डी है। यदि कहीं खुदा न करे, तुम्हारी बुलाई होती तो क्या मैं उसकी या तुम्हारी सेवा न करती। खुदा न करे कि ऐसा हो, किन्तु यदि खुदा के लिए ऐसा हुआ, तो तुम मुझे स्थिर-चित्त पावोगे।" इतना कहने ही पाई थी कि उसकी आवाज विचारों के आवेग से घुट गई और फिर सिसकियाँ लेकर रोना शुरू किया।

हम अधिक हैरानी में थे कि इलाहो, माजरा क्या है। बीवी को हमने गले लगा लिया और चुमकारा और सीधे छत पर ले गये। वहाँ जब हमने सब किस्सा सुना, तब दग रह गये और दोनो नौकरानियों को बुलाया और हाल पूछने के बाद उनको जाने का हुक्म देकर बीवी से कहा—"मालूम होता है, तुम्हारी नौकरानियाँ झूठ नहीं बोलती हैं, किन्तु उनको कुछ धोखा हुआ है। हम तुमसे झूठ कभी भी नहीं बोले। और न बोलेंगे। हम सच कहते हैं और तुम विश्वास करो कि कोई औरत कमरे में नहीं है। कदाचित उन्होंने किसी को कहीं और देखा है।"

"मेरा मजहब, दीन और ईमान सब तुम्हीं हो। खुदा के वास्ते जो तुम कहो वह सच है। मुझको पूरा विश्वास है कि यहाँ कोई और नहीं। केवल इस सबब से कि तुम ऐसा कहते हो।" बीवी ने प्रगट रूप से यह खुश होकर कहा।

हम सरदार साहब के पास आये और असाधारण देर का कारण बताया। हमारी बुद्धि काम न करती थी कि इलाही औरतों के दिमाग में यह क्या खलल आ गयी, जो उनकी आँखों के सामने रण्डी की कल्पित तसवीर आगई, बड़ी रात तक हम सरदार साहब से बातें करते रहे। विचार तो हमारा यही था कि हम बाहर ही सोयें। किन्तु रात की घटना के कारण हमने सोचा, कि हम अपनी बीवी से बातें कर लें तो अच्छा है।

४

हम छत पर पहुँचे तो बीवी को सोती हुई पाया। यह असम्भव था कि हममें से एक दूसरे को सोते देख पाये, और कुछ शरारत न करे। क्योंकि इस मामले में हमारी बीवी का दिल हर समय तैयार रहता था। हमने बिलकुल निश्चय कर लिया कि बीवी का मजाक उड़ाया जाय, अत हमने पानी की दो-तीन बूँदें नाक मे जब डाली, तब बीवी हँसती, खाँसती और छींकती हुई उठी। बीवी ने कहा कि एक नौकरानी फिर गई थी, और फिर आकर उसने यही कहा था कि औरत कमरे में है।

"तो फिर तुमने क्या किया ?" हमने आश्चर्य से पूछा।

"मैं करती क्या ? खूब डाँटा कि तू झूठी है। किन्तु समझ में नहीं आता कि आखिर दोनों ने सलाह करके ऐसी झूठी बात क्यों गढ़ी ? मुझसे तुमने कह दिया, बस काफी है। यदि मैं स्वय भी आँखो से देख लूँ, तो भी तुम्हें झूठा न समझूँगी।"

हमने प्रभावित होकर बीवी से केवल इतना कहा कि "तुम बड़ी अच्छी हो।" हम दोनों कुछ देर तक यही बातें करते

रहे कि आखिर इन नौकरानियों को क्या सूझी, जो ऐसी बेजड़ की बात कह दी और फिर उस पर अटल हैं। बीबी उसको निकालने को कहती थीं, किन्तु हमारा विचार यह अवश्य था कि वे किसी गलत-फहमी में पड़ी हुई हैं।

× × ×

सरदार सुन्दर सिंह खूबसूरत जवान नहीं, बल्कि बहुत ही सुन्दर आकर्षक जवान थे। खुदा की शान है कि बुद्धि काम न करती थी कि उनको भी कैसा सौन्दर्य मिला था, लोगों की समझ ही में न आता था कि इनमें स्त्री सौन्दर्य की वास्तविकता अन्तर्हित है, या पुरुष-सौन्दर्य की। गोरा चमकता हुआ रंग, शरीर बहुत ही कोमल और इकहरा। कद बहुत ही मुनासिब। आँखें, नाक, ओठ, दाँत, मतलब कि पूरा चेहरा इस तरह हलका और खूबसूरत कि जो देखता तारीफ करता। इन सभी बातों के अलावा कमर तक रेशम की भाँति मुलायम बाल उनके सौन्दर्य-संसार को परिपूर्ण करते थे, किन्तु उनकी दाढ़ी! खुदा की पनाह, माशा अल्लाह! डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी नहीं, बल्कि दाढ़ा था। यही एक ऐसी चीज थी जो उनके सौन्दर्य-संसार को दबाने और पराजित करने की असफल कोशिश करती थी। क्योंकि सब की मिली हुई राय यही थी कि इस तरह लम्बी दाढ़ी को भी इस उद्देश्य में कुछ भी सफलता नहीं प्राप्त होती। वे अपनी दाढ़ी लपेट कर रेशमी डोरे से इस प्रकार बाँध लेते थे, कि यही मालूम होता था कि मामूली छोटी-छोटी दाढ़ी है। केवल उनकी दाढ़ी ही एक ऐसी चीज थी जो उनको एक खूबसूरत मर्द बना देती थी। फिर भी स्त्री सौन्दर्य की वास्तविकता, जैसा कि हम कह चुके हैं, अन्तर्हित ही रहती थी। क्योंकि आपस के यार दोस्त

उनके स्त्री सौन्दर्य की इतनी तारीफ करते थे, कि वे झेंप जाते थ, कहा करते थे, कि यदि यहाँ मेरे दाढ़ी न होती तो मुझसे चार दोस्तों के मजाक का जवाब ही देते न बन पड़ता।

× × ×

सवेरे हमारी आँख कुछ देर से खुली। उठकर हम बाहर पहुँचे। सरदार साहब नहाने के कमरे मे थे। हम बरामदे में एक कुर्सी पर बैठे हुए थे, कि सरदार साहब नहाकर मुसकुराते हुए निकले। डेढ़ बालिश्त की दाढ़ी इस खूबसूरत चेहरे पर विचित्र बहार दे रही थी। एक सफेद धोती साड़ी की भाँति बाँधे हुए थे और आधी ओढ़े हुए थे, जिससे सारा शरीर हाथों की कुहनियों तक और सिर के अलावा खुला हुआ था। उनके लम्बे और रेशमी बाल कमर तक लटक रहे थे। हमारी कुर्सी ही के पास मेज थी, जिस पर आइना रक्खा था। वे कुर्सी के बराबर आइने के सामने खड़े होकर बाल पोंछने लगे और कहने लगे कि "तुम अपनी बीवी से कब मुलाकात कराओगे।"

हमने हँसते हुए और उनके बालों से खेलते हुए कहा, जो हमारे सामने ही लटक रहे थे, कि—"सरदार साहब, हमारा तो यह विचार था कि आप से कल ही मुलाकात करा दें, किन्तु अभाग्यवश यह विचार बदल देना पड़ा, और अब कदाचित मुलाकात बिलकुल न करा सकें।"

"भई! यह क्यों?" सरदार साहब ने अपने रेशमी बाल झटकते हुए विचित्र अदा के साथ कहा।

रात की घटना आपको मालूम है। आपको अनुमान हो गया होगा कि हमारी बीवी ने भी कैसा सदिग्ध हृदय पाया है।"

"तो आखिर इससे क्या मतलब ?" सरदार साहब ने मुसकुराते हुए कहा।

"अजी हजरत, सभी नौकरानियाँ यही कह रही हैं कि आपकी दाढी नकली है, हमें शक है कि हमारी बीवी कहीं आपसे जलने न लगे। अत. अच्छा है कि मुलाकात न हो।"

सरदार साहब ने एक कहकहा लगा कर कहा, "शुक्रिया, तसलीम, तसलीम, भई! मेरी इस तरह बडी तो दाढी है। बात तो यह है कि इस दाढी पर तुम्हारा कोई जुमला ठीक ही नहीं बैठ सकता।"

हमने हाथ मे बाल लेते हुए कहा—"सूरत और शक्ल और इन्हे कहाँ ले जावोगे।"

इतना ही कहा था कि नौकर आया और उसने हमसे कहा, कि आपको भीतर किसी बहुत ही जरूरी काम से बुलाया है। हम शीघ्र उठकर आये। मालूम हुआ कि ऊपर हैं, वहाँ जब पहुँचे, तब सबसे पहले दोनों नौकरानियाँ आँखें फाडे व्याकुल परीशान मिलीं। इलाही, खैर तो है। हमने दिल ही दिल में कहा और कमरे में पहुँचे। क्या देखते हैं, कि बीवी साहिबा तकिये में मुँह छिपाये पडी है। पैरों की आहट पाकर जो सिर उठाया तो हम देखते ही दग रह गये। रज और दुख से चेहरा लाल हो रहा था और आँखों से आँसू निकल रहे थे। हम अधिक परीशान हुए और पास बैठकर हमने कधे पर हाथ रख कर दुखी होकर कहा, "मेरी जान, तुम्हें क्या हुआ ? कुशल तो है ?"

रोते हुए बीवी ने जवाब दिया, "मालूम होता है कि मेरे दिन अब करीब आ गये।"

बेचैन होकर हमने फिर कहा, "कुशल तो है। आखिर क्या हुआ ?"

"तुम्हारा विश्वास जब मेरे ऊपर से उठ गया तब मैं क्यों कर जीवित रह सकती हूँ। यदि किसी बाजारू औरत से तुम मिलो और मुझसे कह दो तो खैर कुछ नहीं। किन्तु घर घर में आये और तुम मुझसे छिपाओ तो उसका यही मतलब है कि मेरी मृत्यु करीब है। मुझको अब तक घमण्ड था कि मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ। किन्तु खुदा।" इतना कहकर आवाज बँध गई, और फिर मुँह छिपाकर बुरी तरह रोना शुरू किया। हम मस्त चक्कर में थे कि इलाही, यह कैसी आपदा है! "क्या मुझको पागल बना दोगी? आखिर यह मामिला क्या है?" कैसी रण्डी और कैसी मुण्डी? यहाँ कहाँ है?"

बीबी ने आँसू पोंछकर और आँखें चार करके कहा, "क्या अब भी यही कहे जाओगे कि औरत नहीं है?"

"कोई नहीं, बिलकुल गलत है। मालूम होता है फिर वही रात का किस्सा पेश है।"

"जो तुम कहो वह ठीक है। कह चुकी कि मेरा मजहब तो तुम हो और ईमान हो तो तुम हो, किन्तु अब मैं बिना अपनी आँखें फोड़े न रहूँगी। मेरा मजहब है कि यदि एक चीज मेरी आँखें देखें कि है, किन्तु तुम कहो कि नहीं है, तो मेरी आँखें झूठी और तुम सच्चे। कदाचित् मेरी आँखों ने भी नौकरानियों की आँखों की भाँति धोखा खाया हो। अत एक बार और आजमा लूँ।" यह कहती हुई उठी और खिड़की से बाहर जाकर झाँका। उँगली से हमें इशारा किया। हम भी गये।

"वह देखो, मेरी आँखें तो अब भी मुझे धोखा दे रही हैं।" इशारे से बताते हुए कहा। हमने जब खिड़की में से बाहर की ओर दृष्टि डाली तब निस्सन्देह अपनी बीवी का कहना ठीक पाया। क्या देखते हैं कि बरामदे में एक औरत खिड़की की

ओर पीठ किये खड़ी आइना देख रही है। उसके लम्बे-लम्बे बाल उसकी कमर तक लटक रहे हैं, जिनको वह अपने कोमल और गोरे हाथों से सहला रही है और झटक रही है। सफेद साड़ी बाँधे, सिर और कुहनियों तक हाथ खुले हैं, जिनसे पता चलता है कि बहुत खूबसूरत होगी। हमने यह दृश्य देख कर बीवी की ओर देखा, तो उसने विचित्र दर्दीले और दुख भरे ढङ्ग से कहा—"क्या बताऊँ, मेरा उस समय क्या हाल था, जब मैंने अपनी आँखों से देखा कि तुम हँस-हँसकर उसके बालों में हाथ डालकर खेल रहे हो।"

अलावा इसके कि हम कुछ जवाब देते, हमने बीवी का हाथ पकड़ा और कमरे में लाये, और गले से लगाकर बीवी से खुशामद कर करके अपने अपराध को स्वीकार किया और हाथ जोड़कर क्षमा माँगा।

"खुदा के लिए मुझे गुनहगार न करो। मैं भला इस योग्य हूँ कि तुम मुझसे माफी माँगो।"

"यह कोई बात नहीं। जब हमारा अपराध है, तब हम क्यों न क्षमा मागें?"

राजी होकर बीवी ने कहा, "अच्छा यह बताओ कि तुमने मुझसे रात में ही क्यों नहीं कह दिया?"

"सिर्फ बेवकूफी और मूर्खता। यही ख्याल था, कि तुमको बुरा मालूम होगा।"

"मैं फिर कहती हूँ कि जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा खुदा खुश। खुदा के वास्ते मुझसे कोई बात न छिपाया करो।"

हमने वादा कर लिया और कहा कि हम तो तुमसे असली बात स्वय ही कहने वाले थे, क्योंकि हमें तुमको इस औरत से

मिलाना था। अब हम तुमसे एक बात कहते हैं और वह यह कि तुम उससे चलकर अभी मिल लो, जिससे हमारा दिल हलका हो जाये।"

"मिलने में मुझको कोई इनकार नहीं, किन्तु अभी ?"

"हाँ अभी और इसी तरह। यदि तुमको मुझसे मुहब्बत है तो फिर मैं जो कहूँ वह करो। लो उठो।"

यह कहकर हमने बीवी का हाथ पकडकर उठाया और कहा, "वहाँ बाहर चलकर मिल लो, और इस समय उसके अलावा दूसरा कोई नहीं है।"

हमारा शरीर किन्तु निरपराध और वफादार बीवी सदैव हमारे इशारे पर चलती थी। सीधी हमारे साथ हो ली। हम दरवाजे पर न आकर उस सीढ़ी से उतरे, जो खास उस बरामदे में निकलती थी। यहाँ सरदार साहब नहीं थे। हमने बीवी को वहीं छोड़ा, और चुपके से कमरे में झाँककर देखा कि सरदार साहब किधर हैं। सरदार साहब कमरे में सडक की ओर वाले दरवाजे में, हमारी ओर पीठ किये हुए, बालों को हवा दे देकर सुखा रहे थे। हम झट लौट आये और बीवी को आगे किया। बीवी की दृष्टि सामने वाले लम्बे चौडे आइने पर पडी, और वह सहसा कुछ रुकी कि नजर दाहिनी ओर पडी। भीतर आई तो देखा कि वही औरत उस ओर मुँह किये बाल सुखा रही है। कुछ आगे बढी कि सरदार साहब ने पैर की कुछ आहट पाकर मुँह जो फेरा, तो डेढ बालिश्त की दाढी। वाला चेहरा सामने था। घबड़ाहट में सरदार साहब के मुख से केवल इतना निकला—"हैं!" हमने जो पीछे घूमकर देखा तो बीवी नदारद।

सरदार साहब हैरान और परेशान थे और इधर हँसी के-

चौथा परिच्छेद

लाहौर का सफर

चाँदनी का बड़े जोरों का तकाजा था कि लाहौर की सैर करें। अतः दिसम्बर की छुट्टियों में हम लाहौर गये। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हम किस जगह ठहरे, किन्तु खूब सैर की। चलने से एक दिन पहले हमने अपनी बीवी से कहा कि बगदादी चोर का प्रसिद्ध फिल्म आया हुआ है, क्या तू देखेगी? चूँकि हमारी बीवी के स्वभाव में सैर और आराम समाया हुआ था, अतएव शीघ्र ही वह तैयार हो गई। अभाग्य से हम दोनों सिनेमा ऐसे तङ्ग समय पहुँचे, कि कठिनाई से अव्वल दर्जे में जगह मिली, और यह भी बदकिस्मती से ऐसी कि इधर हम और उधर बीवी और बीच में एक पगड़ी वाले, जो बहुत ही बड़े खतरनाक ढङ्ग का बड़ा साफा बाँधे हुए था। हमने उनसे कहा कि साहब आप अपनी जगह बदल लीजिये तो बड़ी मेहरबानी हो, जिससे हम अपनी बीवी के साथ का आनन्द उठा सकें। किन्तु वे न माने और बुरे स्वभाव से पेश आये, और नौबत यहाँ तक पहुँची कि कहा सुनी होते-होते रुक गई। किस्मत की खूबी या संयोग कि आगे की कतार से एक साहब बहादुर उठकर रफूचक्कर हुए और उनकी जगह खाली हुई। हमने उनसे कहा कि हजरत आगे वाली जगह खाली है, आप बैठ जायें। अतः वे पगड़ीवाले आगे जा बैठे। और चाँदनी उनकी जगह आ बैठी, और उनकी जगह एक और साहब ने पीछे से आकर ले ली। ये साहब बहुत ही सभ्य और बहुत ही मुनासिब आदमी मालूम होते थे।

लाहौर के नये हिन्दू वकील थे। अब मालूम हुआ कि चाँदनी को कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि सामने जबर्दस्त पगड़ी थी। हमने बहुत ही नम्रता से उन हजरत से व्यर्थ कहा कि हजरत आप अपना साफा उतार लें। वे न माने और चाँदनी ने यह आम्र हमको भी न देखने दिया और बातों में लगा लिया। वह धीरे धीरे कह रही थी कि इन पगड़ीबाज से बदला लो और उनका साफा घसीटो। हम कह रहे थे कि हमें मालूम होता है कि तू आज मारी जायगी और हमें भी अपमानित करायेगी। वह कहती थी कि आखिर फिर क्या किया जाये? वकील साहब उसकी सलाहों में बहुत दिलचस्पी ले रहे थे, किन्तु यह सलाह उनकी भी थी, कि तुम औरत हो, शरारत करना उचित नहीं, तो इनका जवाब हमारी शरीर बीवी ने यह दिया कि हजरत फिर आप ही मर्द बनिये और किसी प्रकार उनका साफा उतरवाइये। वकील साहब ने स्वयं इन पगड़ी प्रिय हजरत से कहा कि साफा उतार डालिये या कोई और उपाय कीजिये, किन्तु ये न माने।

१

चाँदनी हमें तमाशा देखने ही न देती थी। हमारी कुर्सी के तकिये पर बाँया हाथ रक्खे हुए हमारी टोपी के फुन्दने से खेल रही थी और बातों में लगाये हुई थी। हम कह रहे थे कि न तो स्वयं तमाशा देखती है, और न हमें देखने देती है। आखिर यह क्या मामिला है कि इतने में उसने कहा कि बाहर चलो, चाय पियें। हमने इन्कार किया और कहा कि तुम जाओ और हमें देखने दो। वह चली गई और वहाँ से जब लौट कर आई तब उसके हाथ में हमारी टोपी के फुन्दने के दो डोर थे, जो बत्ती की तरह सुलग रहे थे। एक इनमें से उसने वकील साहब

को दिया और दूसरा अपने हाथ में लिया। हमने पूछा कि यह क्या मामिला है, तो उसने न बताया। उसने हाथ बढ़ाकर पगड़ीबाज हजरत की गरदन पर सुलगता हुआ डोर का किनारा छुआ दिया। बस, हम क्या बतायें कि उन्होंने किस सफाई से अपने गर्दन का पिछला भाग झाड़ा, मानों उनकी गर्दन में किसी कीड़े ने डक मार दिया। जैसे ही उन्होंने मुड़कर देखा, तो चाँदनी ने वकील साहब से कहा कि वकील साहब आपको ऐसा न करना चाहिये। वकील साहब ने इस मजाक से काफी दिलचस्पी ली। पगड़ीबाज हजरत इस मजाक को पी गये, और दो एक बार सिर हिला-हिला कर वकील साहब को देखने के अलावा और कुछ न किया। अब हमारी बीवी ने फिर यही करना चाहा। हमने बहुत कुछ कहा कि बदनसीब, तू मार खायेगी और तेरी शामत आ रही है किन्तु वह न मानी और उसने फिर एक चरखा दिया। अब की बार तो वे बल खा गये। शोर तो मचा न सकते थे, न जाने क्या फुस-फुसाने लगे। किन्तु बहुत नाराज थे। वकील साहब ने जब देखा कि मामिला मेरे ऊपर आता है तब उन्होंने हाथ की बत्ती फेंक दी। किन्तु पगड़ीबाज ने उसको देखा था। और वे यही सोच रहे थे कि शरारत वकील साहब की है। क्योंकि चाँदनी तो बिलकुल भीगी बिल्ली बनी बैठी थी और बार-बार कहती थी कि ऐसा न करना चाहिये, बुरी बात है। अब ऐसा मालूम होता है कि ये हजरत पगड़ीबाज सावधान होकर बैठे थे, और बेहोश न थे।

थोड़ी देर बाद वकील साहब ने उठकर एक साहब से सिगरेट माँगना चाहा और इधर पगड़ीबाज समझे कि मेरे साथ शरारत करने का विचार है। ये साहब इन पगड़ीबाज के बायें

हाथ बैठे हुए थे। वकील साहब ने उठकर हाथ जो लम्बा बढाया कि पगडीबाज ने, जो बिलकुल सावधान बैठे थे, घुमाकर एक हाथ बिना देखे भाले अँधेरे ही में ऐसा वकील साहब को दिया कि उनकी कनपटी पर पडा। मुनासिब बात थी कि वकील साहब भी उसका जवाब देते, और उन्होंने जोर से पगडी पर एक ऐसा हाथ मारा कि यह उनके गले में उतर आई। पगडी-बाज के धैर्य का प्याला भर चुका था, और वे ऐसी मुसीबत की तरह, जिसका इलाज नहीं, शोर मचाकर कूद कर हमारी लाइन पर गिरे और वकील साहब से भिड गये। एक बड़ा हुल्लड मचा और रोशनी हुई। एक अँगरेज सार्जेन्ट ने आकर दखल दिया। चाँदनी ने और पास बैठने वालों ने इन पगडीबाज की झूठी सच्ची शिकायत की। वे हजरत सार्जेन्ट से भी कडाई से पेश आये, जिसका यह नतीजा निकला कि वे हजरत पकडकर निकाले गये और फिर हमने बाकी खेल इतमिनान से देखा।

खेल खतम हुआ तो वकील साहब से हमने अपनी बीवी की शरारतों की माफी माँगी। किन्तु वकील साहब चाँदनी की शरारतों के कायल हो चुके थे और उन्होंने हमारा नाम और पूरा पूरा पता पूछा और अपना पता बता दिया, और दूसरे दिन अपने यहाँ चाय पीने के लिये बुलाया। हमने तो क्षमा चाही, किन्तु हमारी बीवी ने बात काट कर कहा कि नहीं साहब, हम इस सेवा के लिये हाजिर हैं और जरूर आपके यहाँ आयेंगे। बडी कोशिश से वकील साहब हमसे आने का दृढ वचन लेकर रुखसत हुए।

शाम को हम वकील साहब के यहाँ पहुँचे जहाँ, बहुत ही बनावट के साथ चाय पी और कई ऐसे साहबों से और भेंट

हुई कि यदि उनसे न मिलते तो अफसोस ही रह जाता। इसी रात को हम लाहौर से लखनऊ के लिये चल दिये।

२

लौटते समय दो दिन देहली में ठहरे और खूब सैर की। हमने चाँदनी से कहा कि तेरी सैर सपाटे की भेंट हम दो सौ रुपये से अधिक कर चुके हैं और अब तुझको तीसरे दर्जे में सफर करायेंगे। खुलासा यह कि शिकायत की दृष्टि से यह निश्चय हुआ कि यहाँ से इन्टर क्लास का टिकट लिया जाय। बदकिस्मती से देहली के स्टेशन पर हमारी बीवी की एक परिचिता मिल गई, जो अलीगढ जा रही थीं और हमारी बीवी ने कहा कि अब हम जनाने डिब्बे में सफर करेंगे। हम हमेशा अपनी बीवी को अपने साथ ही बैठाना पसन्द करते हैं। कुछ लोग अपनी बीवी को अपने साथ इस सबब से बैठाते हैं कि बीवी अपनी है, किन्तु वास्तव में हम बातूनी अधिक हैं और फिर बीवी के साथ बातें करने में जो आनन्द आता है वह किसी में नहीं।

हम सोचते थे कि अलीगढ के बाद बीवी का साथ हो जायगा किन्तु बदकिस्मती से मरदाने डिब्बे में जगह की इस तरह तंगी हुई कि बीवी को साथ बैठाने का विचार ही छोड़ देना पडा। वह तैयार न हुई। क्योंकि उसको स्वयं ख्याल था कि बहुत रुपया खर्च हो चुका है।

बदकिस्मती पर बदकिस्मती थी। अच्छी बीवी और अच्छा मुसाफिर दोस्त कठिनाई ही से मिलता है। अलीगढ के बाद तो हमें नरक के आनन्द मिल रहे थे। क्योंकि दो तीन सेठ साहबान आ बैठे थे, जो व्यापार की इस प्रकार अनुचित बातें कर रहे थे कि हम सरसों और तेल का भाव सुनते सुनते

परेशान हो गये और हमें कहना पड़ा कि हजरत यह रेल है दूकान नहीं, कि आप साहब तमाम खरीद फरोख्त के किस्से यहाँ सुनायें।

टूंडला का स्टेशन आया और हम चाँदनी से मजेदार गप्पें करने पहुँचे। उसने इच्छा प्रकट की कि कहीं उम्दे केक मिलें तो अच्छा है। हम केक की तलाश में वेटिङ्ग रूम के होटल की ओर चले। भीड़ भाड़ में थोड़ी ही दूर गये होंगे कि सामने से पुराना दोस्त आता हुआ दिखाई पड़ा। हम दौड़कर उससे लिपट गये और दोनों के मुँह से एक साथ निकला कि भाई! खूब मिले। कहाँ जा रहे हो, कहाँ से आ रहे हो, कैसे हो और कहाँ हो? यही दो चार वाक्य थे, जिनसे सवाल और जवाब दोनों ओर से हुए। दो चार ही बातें हुई थीं कि हामिद ने हमसे कहा, "यार एक बड़ी जोरदार लड़की देखने में आई है।" हमने आश्चर्य में आकर पूछा कि "कहाँ है?"

हामिद ने कहा, "जनाने डिब्बे में जमी हुई है। अरे यार क्या बताऊँ कि बराबर लगभग हर एक स्टेशन पर उसे देखने के लिये उतरता हूँ, किन्तु ज्योंही पास पहुँचता हूँ, वह जालिम मुँह फेर लेती है। भाई! क्या कहूँ, गजब की लड़की है।"

हामिद यह कहते हुए हमें लेकर दिखाने चले।

हम दिल में सोच रहे थे कि आखिर वह कौन लड़की है जिसने जुल्म ढा रक्खा है! क्योंकि हमे तो अब तक दिखाई न पड़ी थी। हम दोनों तेजी से जनाने डिब्बे की ओर पहुँचे। कुछ दूर खड़े होकर हामिद ने कहा, "वह देखो, काले बुरके की नकाब सिर पर डाले मुँह खोले हुए बैठी है। कहो, कुछ है जोरदार।"

हम भला इसके अलावा और क्या जवाब देते कि भई

अब हामिद सख्त चक्कर में थे और कहने लगे "यार तुम्हें कुछ जादू आता है।" यह कहकर लाचारी की अवस्था में जेबों में हाथ डालकर मामिले पर विचार करने लगे।

हमने नोट को जिसे हम जीत गये थे, जेब में से निकाला और आगे बढ़ाकर उनके सामने करके उसको चुम्बन दिया। हामिद हँसकर बोले—"हाँ भाई! हम हार गये, नोट तुम्हारा है। किन्तु यह अवश्य कहेंगे कि हो घुटे हुए।"

हमने कहा कि तुम भूलते हो, हमारी इसमें कुछ चालाकी नहीं। बल्कि यह तो हमारी मरदानी खूबसूरती है कि ऐसी ऐसी छोकरियाँ न मालूम कितनी प्रतिदिन फिदा होती हैं।"

हामिद ने कहा, "उस्ताद बन आई है। जो जी चाहे कहो। अब फिर जावोगे?"

हमने कहा, "अब हम जाना ठीक नहीं समझते। क्योंकि वह हमसे केक माँग रही है।"

"अच्छा खाओ कसम"—हामिद ने आश्चर्य में आकर कहा। हमने झट कसम खाई। क्योंकि सच बात थी, कि वह केकों के लिये कड़ा तकाजा कर रही थी। हामिद इस पर बोले कि फिर दे क्यों नहीं आये? जिसका हमने यह जवाब दिया कि हम ऐसी वेवकूफी भी न करेंगे। ऐसा ही है तो तुम स्वयं दे आवो।" हामिद ने जाने की इच्छा प्रकट की किन्तु इस शर्त पर कि हम जाकर मामिला ठीक कर दें। हम दौड़े हुए बीबी के पास पहुँचे और उसको खुशखबरी दी कि दोस्त तुम्हारी दावत कर रहा है और चूकना मत। केक फौरन ले लेना।

हामिद केक तो ले आये, किन्तु अब उनको डर लगा कि कहीं कोई मर्द न हो। हमने कहा कि उसके साथ कोई म

नहीं। क्योंकि वह अकेली यात्रा करने की आदी है। तुम बेडर जाओ, किन्तु हामिद तैयार न होते थे। हमने कहा, "अच्छा तुम केक लिए हुए डिब्बे के सामने से निकलो। यदि माँगे तो देना, नहीं तो चले आना।"

हामिद खिडकी के सामने से केक लेकर निकले। उधर हमने अपनी चुलबुली बीवी को इशारा किया। उसने झट हाथ बढाकर ले लिये, और कृतज्ञता ही प्रकट नहीं कि बल्कि उनके हाथ में पान भी दे दिया।

हामिद हमारे पास आये तो क्या बतायें क्या हाल था। हमारी बीवी के सौंदर्य और रूप की उन्होंने वह तारीफ की कि हम कृतज्ञता प्रकट करते-करते थक गय। क्योंकि हम हामिद से कह रहे थे कि वह हमारी है। गाडी चलने को हुई तब हमने भी हामिद के साथ अपना टिकट दूसरे दर्जे का बनवा लिया।

४

अब हामिद दूसरे तीसरे स्टेशन पर अवश्य हमारी बीवी के पास जाते। हम बीवी से कह आये थे कि हामिद हमारा ऐसा दोस्त है, कि उससे तिनका भर भी बनावट न करना और साथ ही शरारत मे भी कमी न करना। हामिद के साथ एक बार हम भी जब उतरे, तब वे बोले कि दो आदमियों का जाना ठीक नहीं। तुम यहीं ठहरो नहीं तो फिर वह बातचीत नहीं करेगी। हमने कहा यदि ऐसा ही है, तो हम सब मामिला चौपट किये देते हैं, नहीं तो तुम हमे जाकर उससे बातचीत करने दो। अत हम चाँदनी के पास पहुँचे, उसकी शरारत से भरी हुई मुसुकुराहट हमारे दिल पर बिजलियाँ गिरा रही थी। हमने जाते ही कहा कि कहो दोस्त, क्या रग है। इस पर

उन्होंने इस सफर की यादगार इस प्रकार कायम की, कि ये शब्द खुदवा दिये।

"हामिद की ओर से भेंट, अपने प्यारे दोस्त की प्यारी, किन्तु बहुत ही शरारतभरी बीवी को।"

—•०:—

पांचवाँ परिच्छेद

कुनैन का इस्तेमाल

वैसे तो हमारी कई मौसियाँ हैं किन्तु इनमें से जो छोटी हैं वे बहुत फर्स्ट क्लास हैं। इस कारण से नहीं कि वे अधिक प्यार करती हैं बल्कि इस कारण से कि हमें और हमारी बीवी को वे बहुत पसन्द करती हैं। एक बार हमारे आई तो हमारी बीवी का नाम चाँदनी रख गई। वे कहने कि चूँकि तेरी बीवी चाँदनी की तरह खिली रहती है इसका नाम चाँदनी बहुत ठीक है। हमने कहा कि आपको, मालूम यह कदापि इस योग्य नहीं कि इसका नाम रक्खा जाये, बल्कि इसका नाम तो हम अँधेरा इत्यादि की बात सोच रहे हैं। किन्तु वे न मानीं और उन्होंने जन्मजात नेक बीबी को चाँदनी की उपाधि दे ही दी। हम चार दिन चाँदनी कहने के बजाय अँधेरा ही कहते गये अन्त में हम भी चाँदनी कहने लगे, जो अब तक जारी है उसी समय से हम उसे चाँदनी कहते हैं।

नौकरी ऐसी चीज है कि एक जगह रहना ही नहीं हो

किन्तु एक बात यह भी है कि जहाँ जाना होता है वहाँ नये यार दोस्त पैदा हो जाते हैं। इस नई जगह में हमारे एक दोस्त पैदा हो गये। ये काश्मीरी पंडित थे और नहर के इन्जीनियर थे और थोड़े ही दिनों में उनसे काफी दोस्ताना हो गया, जिसका कारण कदाचित् यह था कि चाँदनी की और उनकी बीबी की खूब घुटती थी। चाँदनी उनके यहाँ प्राय जाया करती थी। उनके बँगले पर जब एक बड़ा-सा नहाने का हौज देखा, तब उसने उनकी बीवी से कहा, कि आखिर क्यों न इसको साफ करके भरा जाये? यह हौज बहुत ही मैला पड़ा था। तैरना सीखने के लिये बनाया गया था और नहर से उसमें पानी आने का रास्ता था चारों ओर से बन्द था और छत पर टीन छाया हुआ था। दोनों की सलाह हो गई और पंडित जी की बीवी ने उसकी सफाई इत्यादि शुरू करा दी। इस हौज के शौक में चाँदनी पागल हो रही थी। कई दिन हौज की मरम्मत और सफाई देखने के लिए गई और बड़ी दिलचस्पी ले रही थी। हमने उसके लिये बम्बई से नहाने का जनाना सूट मँगाया, जिसको देखकर इन्जीनियर साहब की बीवी ने भी मँगाया। बड़े शौक और प्रतीक्षा के बाद वह दिन आया कि हौज भरा गया और वह नहाने गई। सफर में, पहली बार उसे पानी में खेलने का अवसर मिला, तो वह प्रतिदिन जाने लगी। धीरे धीरे इस शौक ने सक्रामक रूप धारण कर लिया और दूसरी औरतों को भी शौक पैदा हो गया और इन्जीनियर साहब के बँगले पर मानो नहाने और तैरने का एक क्लब स्थापित हो गया। हम इस क्लब से बहुत ज्यादा परीशान थे। क्योंकि यह तो प्रतिदिन का झगड़ा हो गया कि बीवी तैरने चली जाती और हम शाम को इधर उधर मारे मारे फिरते। हम बहुत प्रयत्न करते कि

किसी दिन तो न जाये और उसको रोकते, किन्तु वह कहती थी कि अब तुम क्लब इत्यादि जाना शुरू कर दो, मैं तैरना सीख रही हूँ। हम कहते थे कि एक न एक दिन तू डूबेगी और उल्टी लटकाई जायगी। इजीनियर साहब के यहाँ उनकी बीवी ने यह सलाह दी थी, कि मोटर के ट्यूब मे हवा भरकर उसकी सहायता से तैरना चाहिये। अत: हमने दो ट्यूब मोटर के मँगाकर दे दिये। खुलासा यह कि उसको ऐसा शौक पैदा हो गया कि दिन भर यहीं इन्तजार करती रहती थी कि अब शाम को और मैं जाऊँ। वहाँ से आकर अपनी तैराकी और गोताखोरी की मनोरञ्जक कहानियाँ सुनाया करती। शरारतें वहाँ भी उसके साथ थीं और उसका यह मनोरञ्जक काम था कि वह चुपके से पानी में बैठकर किसी नई आने वाली बीवी के पैर को घसीट कर उसे गिरा दिया करती थी।

यह हौज वास्तव मे केवल तैरने और नहाने के लिये बनाया गया था। तीसरे दिन सवेरे नहर से साफ पानी इसमें भर दिया जाता था। एक ओर इसमें दो तीन सीढियाँ थीं और कम पानी था, किन्तु आगे दूसरी ओर सतह ऐसी ढालुआँ थी कि गहरा होता चला गया था, इस तरह कि दूसरे किनार पर आदमी के कद से भी अधिक गहराई थी।

एक दिन की बात है कि चाँदनी ने हमसे कहा, आज हम बहुत जल्द जायँगी, क्योंकि इन्जीनियर साहब के यहाँ कुछ मेहमान आये हुए हैं और दूसरी बीवियाँ भी आयेंगी। हमसे कहा करती थी कि अब हम कुछ तैर लेती हैं। वहाँ आज काफी औरतों का मजमा था और चाँदनी को एक और शरारत भरी बीवी वहाँ मिल गई। इन दोनों ने यह सलाह की कि एक बीवी को जो पानी मे बहुत डरती थी, घसीटा जाय। अत: इन दोनों

ने ऐसा ही किया और फिर पानी में ऐसा हुल्लड़ मचाया कि वह बेचारी गहरे पानी की ओर गिरी। इस गड़बड़ में उन्होंने चाँदनी को घसीट लिया और इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों गहरे पानी में गोते खाने लगीं। हालाँकि मोटर ब्वाय पानी में मौजूद थे, किन्तु वहाँ होश ही दुरुस्त न थे कि उनकी सहायता ली जाती। तात्पर्य यह कि एक दूसरे को पकड़कर इस प्रकार गोता खा रही थीं कि नौबत डूब जाने तक की पहुँची। इसी समय दूसरी बीवियों ने एक साड़ी भीतर फेंकी, जिसका किनारा पकड़कर दोनों निकल आईं, किन्तु बुरा हाल था। नाक और मुँह से न मालूम कितना पानी पेट में जा चुका था और आश्चर्य नहीं, कि यदि थोड़ी देर और बीत जाती तो दोनों डूब जातीं।

हम घर पर प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह मुसकुराती हुई पहुँची। हमने कहा कि आज क्या मामला है कि जल्दी आ गई तो उसने किस्सा सुना दिया। हमने समझा कि मामूली-सी बात है, अतः हमने बीवी की खूब दिल्लगी उड़ाई। उसको प्यास लग रही थी और उसने दो बार दो गिलास पानी पिया, और फिर भी प्यास न बुझी। थोड़ी देर बाद उसको कै हुई और तबीयत खराब हो गई। खाँसी अलग थी। तकलीफ इतनी हुई कि डाक्टर को बुलाना पड़ा। डाक्टर ने कहा, मालूम होता है, फेफड़ों पर भी पानी का कुछ असर पहुँच गया है, क्योंकि खाँसी बहुत आ रही थी। उन्होंने कहा, दवा सबेरे दी जायगी। पहले पेट में से पानी निकालना चाहिये। उन्होंने एक चारपाई मँगाई और उसका पैताना खूब ऊँचा कर दिया। फिर चाँदनी से कहा, कि उस पर लेटो। उसको इस प्रकार लटकाया, कि मुँह सिरहाने की ओर लटका रहे और औंधी

पड़ी रहे। पेट के नीचे एक तकिया रखकर हम उस पर तैनात किये गये कि समय-समय पर उसको ऊपर से दबा कर कै करायें। डाक्टर साहब के जाते ही हमने कहा, कहो हम कहते थे न कि उल्टी लटकाई जावोगी। खुलासा यह कि दो तीन घंटे तक थोडी थोडी देर बाद उसको दबाते और फिर कै होती रही और इतना पानी निकला कि हमें बडी परेशानी हुई। कै करते करते बेचारी परेशान हो गई और हैरान हो जाने से हरारत सी हो गई। उसको बडी बेचैनी थी और नींद न आती थी और घबडाहट और प्यास थी। हमने बडी कठिनाई से उसको थपक-थपक कर और सिर सहला-सहलाकर सुलाया। सवेरे उठी तो तबियत रात की तकलीफ के कारण बहुत ही सुस्त और कमजोर थी।

हम कचहरी से लौटे तो देखा, कि चारपाई पर चादर ओढे लेटी हुई है। हम जानते थे कि अवश्य जाग रही होगी और बन कर पडी है। अत हमने आते ही गुदगुदाया। उसने हँसते हुये चादर को जब मुँह से हटाया तब हम क्या देखते हैं कि चेहरा तमतमाया हुआ है और लाल हो रहा है। हमने मस्तक पर हाथ रख कर देखा तो बुखार था।

अब चाँदनी को बारी से बुखार आने लगा। बुखार बन्द हुआ तो फिर और तबियत खराब रहने लगी। हमने हकीम के इलाज की सलाह दी। वह न जाने क्यों हकीमों के इलाज के खिलाफ थी। कठिनाई से राजी हुई। दूसरे दिन हमने हकीम साहब को बुलवाया। ये हकीम वास्तव में कुछ यों ही से थे। चाँदनी ने जब उनको देखा, तब और भी बुरी राय कायम की। हकीम जी ने हाल पूछा और ब्योरेवार हाल सुना। हाजमें का जब हाल पूछा, तब उसको शरारत सूझी। उसने उनसे कहा

कि हाजमा तो मेरा आज कल ऐसा है कि चाहे जो खाऊँ, वह सब हजम होकर पूरा पूरा खून बन जाता है। इस तरह कि पाखाना तक नहीं बनता। हकीम साहब की समझ मे न आया कि वे उसको जान-बूझकर अनजान बनी हुई समझें, या वास्तव में यह समझें कि रोगी भ्रान्ति में है। बहरहाल उन्होंने पहले तो कब्ज के सम्बन्ध मे दुहराया, फिर नुसखा लिखा। चाँदनी उठ कर दो खोटे रुपये निकाल कर लाई, जिसे हमने उनके भेंट किये। हमें उसका पता बाद में लगा, और हमने खोटे रुपये लौटाल लिये। हकीम जी का नुसखा उसने फौरन फाड डाला और फिर डाक्टरी इलाज शुरू कर दिया, जिसमे कुनैन का इस्तेमाल अधिक था, किन्तु शीघ्र ही आराम हो गया। डाक्टर साहब ने हमसे कहा था, कि यदि नैनीताल इनको ले जाओ, तो बहुत शीघ्र तबियत ठीक हो जायगी। अत हमने उससे वादा कर लिया कि तुमको अवश्य नैनीताल की सैर करायेंगे।

२

इन दिनों कुनैन के प्रयोग से न जाने चाँदनी को क्या हो गया? पहले ही अपनी शरारतों में क्या कम कुनैन का इस्तेमाल करती थी, और अब तो मानों वह पागल हो गई। एक बडे बोतल में, उसने सैकडों ग्रेन कुनैन घोल-घोल कर बहुत तेज मिक्सचर तैयार कराया और पुडियाँ अलग थीं। शक्कर मे मिली हुई कुनैन अलग रक्खी गई, और यह सब केवल शरारत की नियत से। समय समय पर हमारे दोस्त ही अभ्यास की पट्टी नहीं बनते थे, बल्कि हम और बहुधा दूसरे लोग भी शरारत का शिकार बनते थे, और फिर उनमें कुछ
मजाक करना अभीष्ट ही न होता था।
मारी में खाने पीने की

समय पर बीबी के साथ ही खाते थे, और बरतह य निकालती थी। किन्तु हमारे यार-दोस्त प्राय: बेवक्त उस पर डाकेजनी करते थे। एक दिन की बात है कि एक साहब इस आलमारी पर हमला कर बैठे। उन्होंने एक बिस्कुट लेकर, कुछ रसभरी का जाम चढाकर, उसे जब खाया, तब बस चल खा गये, और थूकते फिरे। दौडकर बरामदे से सुराही लेकर जब कुल्ली की, तब और भी आनन्द आया। वहाँ एक की जगह पर आज दो सुराहियाँ रखी थीं, और उनमें से एक मे कुनैन घुली हुई थी। हमने देखा कि इस सुराही पर एक लेबिल लगा है, कि यह पानी पीने का नहीं है। हम भीतर पहुँचे कि बीबी से इस नालायकी का कारण पूछें, तो यहाँ दूसरा ही रग था। वह खडी हुई मुर्गियों को घेर कर धीरे-धीरे पानी के कुण्डे की ओर ला रही है। हम जब आये, तब मुर्गियाँ कूद कुद कर भाग गईं। प्रथम इसके कि हम कुछ कहें, वह हम पर बिगडने लगी कि मुर्गियाँ क्यों भगाई ? हमने कहा, आखिर क्या हुआ, तो वह कहने लगी, 'हम इन्हें पानी पिलाने लाई थीं। हमने कारण पूछा तो हँसने लगी। मालूम हुआ कि मुर्गियों के कुण्डे में कुनैन मिलाकर रक्खी गई है। हमने उससे कहा कि आखिर यह क्यों तू इस प्रकार जालिम बन गई है कि जानवरो तक को परेशान करती है, और फिर शिकायत की कि, आखिर यह कैसी बेवकूफी है कि खाने-पीने की चीजों, और पीने के पानी में भी कुनैन मिला दी। उसने कहा, इसलिये कि हर आदमी न खाये और सुराही में इसलिये मिलाई, कि देखूँ दिन में कितने अक्लमन्द आते हैं और कितने बेवकूफ। क्योंकि सुराही पर लिखा हुआ है कि यह पानी पीने का नहीं है। फिर भी लोग न मानें तो किया क्या जाये ? हम खडे बातें ही कर रहे थे कि

नौकर लड़का कुत्ते को बुलाकर लाया। उसका खाना उसके बरतन में रक्खा हुआ था। हमने कहा, यह क्या मामिला है, कि कुत्ते को इस समय खाना दिया जा रहा है, तो कहने लगी तुम रहने दो। हम हँसी से समझ गये। बेचारे कुत्ते ने जो तेजी से रोटी और दूध खाया, तो वह थूकता फिरा और चाँदनी तमाशा देखकर पागलों की भाँति हँसी के मारे लोटती फिरी। हम भी हँसने लगे कि कैसी अजीब बीबी हमें मिली है। इतने में लौंडी गई, और एक रकाबी लाई। उसको खोलकर जब दिखाया, तब हम क्या देखते हैं कि अण्डों का लाजवाब हलुआ है। केसर और केवड़े की महक से दिमाग तर हो गया। चाँदी के वर्क लगे हुये हैं, बादाम और पिस्ता के छोटे-छोटे टुकड़े छिड़के हुये हैं। हमने कहा, यह तो बड़े जोर की चीज तुमने तैयार की है। हमें बिलकुल ख्याल न आया कि इस नालायक ने इतने पैसे बरबाद करके उसको भी कड़ुआ कर डाला है। फौरन एक कौर डाल ही तो लिया। वह प्लेट रखकर हँसी के मारे बेदम होकर लोट पोट होकर कमरे में पलग पर जा पड़ी। हमने गला कड़ुवा होने से पहले ही झट थूक दिया, और उसको इस शरारत की सजा के लिए गुदगुदा के बेदम कर दिया। तात्पर्य कि दिन रात उसको अब कुनैन के मजाक सूझते थे। वह कहती थी, कि मेरा काबू नहीं, जो बाजार की सभी मिठाइयों में कुनैन मिला दूँ। तात्पर्य यह कि कुनैन खिलाने का अभ्यास आज-कल जोरों पर था, किन्तु हम नहीं जानते थे कि कुनैन का यह खब्त अभी क्या-क्या रग लाने वाला है।

२

हमने चाँदनी से कहा कि यदि तुमको वास्तव में नैनीताल

चलना है, तो कुनैन खिलाने की आदत को कम करो, नहीं तो तेरा वहाँ जाना बिलकुल स्थगित हो जायगा। इस पर उसने कहा, यदि कहीं ऐसा हो गया, तो फिर समझ लो कि सारे घर में कुनैन ही कुनैन दिखाई पडेगी। नैनीताल जाने की तैयारी उसने बडे जोर से की। सामान यद्यपि थोडा था, किन्तु कुछ गरम कपडे भी थे। चलते समय हमने देखा, कि एक डिब्बा पान बनाने की जगह पर पान के दो डिब्बे तैयार हो रहे हैं। हमें मालूम न था कि एक मे कडवे पान हैं। नहीं तो हम उस शरारत को रोक देते। केवल पानी के कारण वास्तव में गाडी में ऐसी देर हुई, कि हम टिकट तक न खरीद सके और कठिनाई से चलती गाडी में सामान इत्यादि जिस तरह हो सका रखकर एक मरदाने ड्योढे डिब्बे में बैठ गये, जो सयोग से सामने ही था। इसमें काफी गुञ्जाइश थी, और चाँदनी ने झट खोलने के लिए कहा। हमने कहा कि यह इन्टर क्लास है। इस समय खाली है, किन्तु आगे चलकर कदाचित् भर जाये। किन्तु उसने कहा, कि नहीं। जब जगह काफी है, तब बेकार क्यों ज्यादा रुपये खर्च किये जायँ। बात यह थी कि यह डिब्बा बहुत बडा था और आदमी केवल तीन ही थे। इसमे अधिक क्या जगह मिलती! किन्तु हम जानते थे कि आगे चलकर अवश्य मुसाफिर आयेंगे और आश्चर्य नहीं कि सोने को भी न मिले। उसने कहा, कि बिछौने ऊपर की लटकी हुई बेंच पर लगा लो, जिससे कि फिर सब झगडा ही जाता रहे। अतः हमने यही किया। एक पर उसका विस्तर लगाया और उसके नीचे जो सीट थी, उस पर हम बैठ गये। क्योंकि हमे अभी अगले स्टेशन पर टिकट खरीदने थे। बीवी को तो हमने ऊपर चढा दिया और वह आराम से तकिया लगाकर लेट गई।

अगले स्टेशन पर मौका न मिला। किन्तु हमने गार्ड से कह दिया। दूसरे स्टेशन पर हम टिकट लेकर जब लौटे तब क्या देखते हैं कि एक भारी-भरकम लाला साहब हमारी सीट पर कब्जा किये विराजमान हैं। उनका ढेर का ढेर सामान ऊपर नीचे सब रक्खा हुआ था। हमने कहा कि हजरत दूसरी जगह खाली होते भी आपने हमारी जगह क्यों लेली ? वे कहने लगे, कि मैं कोने की जगह चाहता था। हमने दूसरी कोने वाली जगह बताई, तो उन्होंने कहा कि वहाँ पाखाना है। जब हमने कुछ और बहस की तब वे बोले कि हजरत आपका नाम तो इस जगह पर लिखा न था और न आपने अपनी जगह रजिस्टर कराई थी। जितना हक आपका है, उससे अधिक मुझको है। हम चुप हो गये।

यद्यपि डिब्बा काफी बड़ा था किन्तु धीरे धीरे मुसाफिरों की भीड़ होनी शुरू हो गई। हमने देखा कि हमें नींद आ रही है। और हमने सोचा, कि यदि मुसाफिरों के आने का यही क्रम जारी रहा तो हम नीचे आराम से न सोयेंगे। अत: हमने उस ऊपर वाली लटकी हुई बेंच पर बिछौना लगाया, जो चाँदनी की जगह से बिलकुल मिली हुई थी। वास्तव में बीच में एक खिड़की का अन्तर था। हमें नींद आने ही वाली थी कि नीचे कुछ राजनैतिक मामलों पर बात-चीत होने लगी। चूँकि हमारा भी राजनीति में काफी अधिकार है इसलिए हम बहस करने के लिए नीचे आ गये। हम तो राजनैतिक बातों पर बहस कर रहे थे, किन्तु हमारी शरारत भरी बीबी अपने नियमानुसार कुछ और ही कर रही थी। वास्तव में उसको अपने नीचे की मंजिल में रहने वाले मुसाफिर पर बहुत क्रोध आ रहा था और वह बदला लेने की चिन्ता में थी। उन हजरत ने एक

लिए और हमसे इशारे से कहा, कि नीचे लोगों को बाँट दो। हमने फिर देखा, और अमरूदों के मालिक साहब को बेखबर सोता हुआ पाया। अत• हमने झट उतर कर स्वाभाविकता के साथ सभी लोगों के हाथ में दो दो अमरूद दे दिये, और शेष सबके बीच मे एक बेंच पर रख दिये कि खाइये। उनमें से एक साहब चाँदनी की यह सभी शरारतें कदाचित् देख रहे थे। क्योंकि वे कोने में बैठे हुए धीरे-धीरे मुसकुरा रहे थे। चाँदनी ने उनको देखा और वह समझ गई। अत उसने उँगली से चुप रहने के लिए कहा, और वे हँसकर सिर हिलाने लगे कि मैं न बताऊँगा। हम पहले की भाँति अपनी जगह पर आकर लेट गये। नीचे लोग बड़े आनन्द के साथ अमरूदों की दावत खा रहे थे, कि स्टेशन आया, और रेल के झटके से लाला साहब जाग उठे। वे हजरत, जो उस कोने में बैठे थे और इस शरारत से परिचित थे, एक साहब से बोले, कि जनाब लाला साहब को भी अमरूद खिलाइये। लोगो ने जब उनसे कहा, तब कहने लगे कि मेरे पास स्वय इलाहाबाद के अमरूद मौजूद हैं। एक साहब बोले कि अच्छा होता यदि आप कम से कम अपने अमरूदों का नमूना ही चखाते। उन्होंने मुसकुरा कर कहा— 'बड़े शौक से टोकरी से निकाल लीजिये।' एक साहब उठे और उन्होंने टोकरी में हाथ डालकर उसको खाली पाकर कहा, "वाह जनाब! आप अच्छा मजाक करते हैं। यहाँ तो पता तक नहीं है।" यह सुनकर वे तड़पकर उठे, और टोकरी को खाली पाकर चाँदनी की ओर देखा जो इस समय अमरूदों की टोकरी की ओर पैर किये हुये और चादर ओढ़े हुए मानों बेखबर सो रही थी। उनकी इस परेशानी पर कदाचित् लोग इस मामले को समझ गये और एक अच्छा कहकहा लगा। बेचारे यह कह

कर अपनी जगह पर बैठ गये कि यह मजाक ठीक नहीं।

सबेरे हम बरेली के स्टेशन पर उतरे। सामान वेटिङ्ग रूम में रखवाया। नाश्ता किया और बरेली शहर की खूब सैर की। दोपहर को लौटकर खाना स्टेशन पर खाया। जब चाँदनी को मालूम हुआ कि खाने के दाम पूरे साढे सात रुपये चार्ज होंगे, चाहे हम सब खायें या थोड़ा, तब उसको बड़ा क्रोध आया। वास्तव में सबेरे नाश्ता अधिक कर लिया था, और इस समय कुछ खाया न गया। हमने देखा भी नहीं और, जब हम हाथ धो रहे थे तब उसने बचा हुआ सब खाना कुनैन से खराब कर दिया। केवल इतना ही नहीं किया, बल्कि हम तो खाने की कीमत चुकाने में लगे, और उसने अवसर पाकर बाहर के बरामदे में अँगीठी पर चाय की जो बड़ी केतली रक्खी थी, उसको भी खराब कर दिया। हम दोनों शीघ्र फिर शहर चल दिये। दो चार मेजें और कुर्सियाँ खरीद कर घर भिजवाई और फिर विभिन्न स्थानों की सैर करने चले गये। चिराग जलने के बाद बड़ी देर में स्टेशन पर लौट कर आये और हमें यहाँ आकर मालुम हुआ कि होटल के नौकरों ने खाना खा कर खूब थूका, और इसके अतिरिक्त कई मुसाफिरों को कड़वी चाय पिलाने के कारण यह किस्सा तूल पकड गया। यहाँ तक कि एक अँगरेज ने होटल के बेहरे को मारते मारते छोड़ा। हम चुप थे और हमने बिगड कर चाँदनी से कहा, कि मालूम होता है कि तेरी बिलकुल शामत आगई है, और तू स्वय मार खायेगी और कदाचित् हमें भी पकड़ावेगी। वह भी केवल अपने जुल्म के बदौलत कि न स्वय खाये और न किसी को खाने दे। आखिर इससे क्या लाभ ? "हमारे इस लेक्चर का प्रभाव उल्टा पडा और वह कहने लगी कि तुम्हारी बला से। हम

गया था, और हमने चाय की प्याली पीने के लिये उठाई, कि उसको फिर हँसी आई, जिसको उसने थूकने के बहाने से टालना चाहा। वह अँगेठी में थूकने के लिये उठी और उधर हमने अवसर पाकर, बचाव की दृष्टि से, इस सफाई से चाय की प्याली बदल ली, कि उसको सन्देह तक न हुआ। हम इस चाय से इस तरह खेल रहे थे कि जैसे उसके ठंडे होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि उसने अपने आगे की चाय की प्याली उठाई जो हमारे लिये कुनैन के द्वारा जहर के समान बना कर रक्खी गई थी और पहले ही घूँट में बस उसको मजा मिल गया। चाय गरम न थी, और चूँकि उसको सन्देह भी न था, अत एक बड़ा घूँट उसने ऐसा पी लिया कि गले के पार हो गया। क्या बतायें कि हमने कैसे झुक-झुककर सलाम किय और कैसा मजा आया। उसका भी हँसी के मारे वह बुरा हाल था कि थूकना मुश्किल हो गया।

४

इसके बाद हम प्लेट-फार्म पर आये, और थोड़ी देर में काट गोदाम वाली गाड़ी आ गई। हमने अपना सामान एक दूसरे दर्जे के एक डिब्बे में लगवाया, जो बिलकुल खाली था। हम उस पान वाले का तमाशा देखने के लिये गये, जिसके कत्थे और चूने को चाँदनी ने कड़वा कर दिया था। हमें अधिक खोजने की परेशानी न उठानी पड़ी, क्योंकि बहुत शीघ्र हमने देखा कि एक पान वाले से कुछ लोग लड़ रहे हैं। दूसरे लोग झगड़ा सुनकर और आ गये और इनमें से कुछ और ऐसे थे जो कहते थे, कि हमारा पैसा वापस कर। क्योंकि तूने हमारा पान कड़वा कर दिया। हम तो बस मनोरंजक झगड़े को देखकर अपनी बीवी की शरारत से आनन्द पूर्ण हो रहे थ, और उधर हमारी

जन्म-जात नेक बीवी कुछ और ही कर रही थी। एक सालन रोटीवाला मुसलमान हमसे तकाजा कर चुका था, कि हम उसके गन्दे सौदे में से कुछ खरीदें। हालाँ कि चाँदनी ने कई बार उसको टाल दिया, किन्तु वह न माना और विवश होकर उसने उससे कहा, कि अच्छा एक प्याले मे थोडा सा निकाल कर हमारे सामने नमूने के तौर पर रक्खो। हमारी सीधी-सादी बेगम साहिबा ने नमूना खिडकी से भीतर लेकर बिजली की रोशनी मे देखा, और ना पसन्द करके लौटा दिया। उस बेचारे को क्या मालूम थी कि कारगुजारी की गई है। उसने झट अपने बडे बरतन में फिर डाल लिया। हम पानवाले का तमाशा देख कर लौट रहे थे कि एक ड्याढे दर्जे के मुसाफिर से और उस बावरची से झगडा होते हुये देखा। हमने देखा कि गजब हो गया। हम जब अपने डिब्बे में लौट कर आये, तब देखा कि किसी दूसरे साहब का सामान रक्खा है और बेंच पर चाय के लम्बे बरतन में कुछ मक्खन टोस्ट और चाय रक्खी है। हमने धीरे से बीबी से कहा, "अरे तू यह क्या जुल्म ढा रही है।" वह इस समय पूरी परदा नशीन बीवी बनी हुई थी और बुरका ओढे बैठी हुई थी। उसने यह इस गरज से किया था, कि यदि कोई भला मानुस हो तो उसको देखकर कदाचित न आये। किन्तु एक साहब फिर भी आ गये। वे डिब्बे के बाहर खडे हो कर कुछ झिझके। पहले तो कहा कि यह जनाना डिब्बा नहीं है। इस पर चाँदनी बोली, कि 'जनाब। जनाना डिब्बा है।' उन्होंने कहा कि "आप मेहरबानी करके जनाने डिब्बे में चली जायँ।" चूँकि उसने इनकार किया, अत उनके नौकर ने उनका सामान इत्यादि रख दिया। वह चाय मँगवाकर किसी दूसरी जगह बातें करने मे लगे थे। उनकी गैरमौजूदगी में, यह कहना व्यर्थ

है कि उनकी चाय के साथ चाँदनी ने क्या कार्रवाई की। इसी पर सन्तोष न किया, वल्कि उनके लोटे मे, जो खाली था, काफी मात्रा डाल दी और फिर जुल्म यह ढाया कि उनकी वर्फ रखने की बोतल में भी कुनैन डाल चुकी थी, जो कि हमें बाद मे मालूम हुआ। इतने मे वे हजरत आये। वहुत ही सज्जन थे। हमसे दो-एक बातें हुईं, और हमें चाय पर बुलाने लगे। केतीली में से चाय उँडेलते हुये उन्होंने हमसे कहा, कि साहब यहाँ स्टेशन पर आज विचित्र ही मामिला है हमने पूछा "वह क्या ?" तो उन्होंने कहा, कि एक पानवाले से बहुत से आदमी झगडा कर रहे हैं। हमने कहा, "क्यों ?" तो वे हँस कर बोले कि साहब वडा मजा आया !

"क्या मजा आया ?" हमने पूछा।

"अजी जनाब, तमाम लोगों के मुँह उस पानवाले ने कडुवे कर दिये।" उन्होंने अधिक हँसते हुये कहा और अब उस सब लोग लड रहे हैं। फिर इसके अतिरिक्त सालन रोटी वा को भी दो-तीन आदमी घसीट रहे हैं, कि सब सामान कड़ है। यही नहीं, वल्कि सारा वरेली कडुवा हो रहा है, कहक लगाकर चाय मे शक्कर मिलाते हुये उन्होंने कहा।

"क्या और भी कोई किस्सा हुआ ?" हमने बनकर पूछ अजी तमाम मुसलमानों के पीने का पानी कडुवा हो रहा है और वह मजा आ रहा है कि हँसते-हँसते लोट खड रहा थू !

चाय की प्याली का घूँट उन्होंने क्या लिया, कि गले में कठोर फन्दा पडा कि थूक रहे थे। हमने कहा, 'हजरत क्या हुआ ?" थे वे वडी अच्छी तबियत के, बेतरह हँसे औ दोहरे हो हो गये और कहते गये, कि साहब ! मालूम होता

रिमी कानिल ने चाय वाले पर भी हमला कर दिया। यह देखिये मारी चाय कड़वी है। यह कहकर नौकर को बुलाया कि चाय वाले को बुलाओ। उसने आश्चर्य में आकर कहा, साहब क्या बतायें कि आज दोपहर से न जाने क्या हो रहा है कि कई मुसाफिरों ने मारते-मारते छोड़ा। वह बेचारा चाय लौटाल ले गया। इतने में नौकर उनका खाली लोटा भरकर लाया और उन्होंने कुल्ली जब की तब और भी थूकने लगे। कहने लगे कि यह क्या मुसीबत आई ? मालूम हुआ कि नौकर नल से पानी लाया था। माराश, कि विचित्र परेशानी में थे। बाहर निकले तो मालूम हुआ, कि रेलवे पुलिस इन्सपेक्टर इसकी जाँच कर रहा है। हम सन्नाटे में आ गये और हमने घबड़ाकर बीबी के कान में कहा, कि लो आज तू गिरफ्तार की जायगी। चाँदनी ऐसी बातों इत्यादि से कभी न डरती थी, किन्तु इस समय सचमुच वह चुप हो गई। हम दोनों फिर आकर बैठ गये और ये हज़रत, जो वास्तव में कौंसिल के मेम्बर थे, इस कड़ुवे मजा पर खूब हँस रहे थे। इतने में उनके एक दोस्त आये और वे भी बैठ गये। उनके साथ पानी की बहुत सी बोतलें थीं। उनके दोस्त ने एक बोतल उठाई और उसको गिलास में खोलकर बर्फ की बोतल में डालकर फिर गिलास में लेकर के जब पिया, तब क्या बतायें, वह किस प्रकार कूदे ? गिलास छोड़कर कूद रहे थे। उनके दोस्त का और हमारा हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। अब ये हज़रत विचित्र चक्कर में थे। कहने लगे कि ये बोतलें और बर्फ तो शहर की हैं। इसमें कहाँ से कड़ुवापन समा गई ? हमारी बीबी गरीब और बेचारी बनी हुई बुरका ओढ़े अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी जैसे उसको इससे कुछ

मतलब ही नहीं है। हमने उससे पान की डिबिया माँगी, उसने हैंड-बेग में बताई। हमने उसमें से डिबिया निकाली और हम दोनों के सामने पान किये। वे हजरत हँसकर कहने लगे, कि "जनाब कहीं इन पानों में भी तो मुसीबत नहीं है।" हमने कहा कि साहब यह तो हमारे घर के हैं। उन्होंने एक पान लिया और एक उनके दोस्त ने लिया। वास्तव में हमें मालूम भी न था, कि एक डिबिया कड़वे पानों की है और हमने भी एक पान मुँह में रख लिया। शीघ्र ही सबको थूकने पड़े और उन हजरत का तो हँसी के मारे बुरा हाल था और कहते थे कि यह आखिर मुसीबत क्या है कि चाँदनी ने बात बना दी और कहा कि मालूम होता है, कि आपने स्टेशन वाले पान खाये। दूसरी डिबिया से लीजिये। हमने कुल्ली की और दूसरे पान खाये, कड़वे फेंक दिये।

५

हम खुदा खुदा करके नैनीताल पहुँचे और बीच में कोई वर्णन करने योग्य बात सामने न आई। हमारे साथ सफर करने वाले हजरत रह-रहकर रात में मामिलों पर विचार कर रहे थे और आश्चर्य के साथ हँस भी रहे थे। क्योंकि उनके दूसरे दोस्त, जो कौंसिल की बैठक में सम्मिलित होने के लिये आये थे, कुनैन का स्वाद या तो स्वयं बरेली में ले चुके थे और या उनका तमाशा देख चुके थे। हर आदमी आश्चर्य प्रकट करता था कि आखिर यह किस तरह सम्भव है कि शहर से बोतल में बर्फ आये और वह कड़वी हो जाये। हद हो गई, कि नल की टोंटी से कड़वा पानी निकले। तात्पर्य हम उनसे विदा हुये।

हमने एक पूरा मोटर किराये पर लिया और उसमें बीवी

को बैठाया और नैनीताल की चढाई शुरू हुई। हमने बीवी को सचेत कर दिया कि यदि भविष्य मे तू शरारत करेगी, तो निश्चय पुलिस मे दी जायगी, किन्तु वह तो रात की घटनाओं के ऊपर हँसी के मारे बेकाबू थी। इस तरह उस चढाई को हमने बड़े आनन्द के साथ समाप्त किया।

नैनीताल पहुँच कर हमने हिमालय होटल मे डेरा डाला। दूसरे ही दिन से साधारण ढङ्ग पर चाँदनी ने फिर कुनैन का प्रयोग जारी कर दिया। असम्भव था, कि चाय आये और शक्कर को छोड़कर वह दूध इत्यादि को कड़ुआ न कर दे।

प्रति दिन का नियम था, मीलों हम पैदल चलते थे और दिन भर सैर सपाटे में कटता। न जाने कब के और कहाँ के दोस्तों से भेंट हुई। और हम और हमारी बीवी जगह जगह दावतें खाते थे। कौन्सिल की बैठक देखने गये। यहाँ हमारे साथ सफर करने वाले दोस्त से भेंट हुई। हमने उनसे अपनी बीवी का कायदे के साथ परिचय कराया। ये भी विचित्र दिल्लगीबाज और मनोरञ्जक आदमी थे। आनरेबुल नवाब मुहम्मद युसुफ से, कौन ऐसा भला आदमी होगा, जो नैनीताल जाय, और किसी न किसी प्रकार परिचय न प्राप्त करे, या उनके चौड़े और बनावटपूर्ण दस्तरख्वान पर बिना बुलाये हुये तरह-तरह के अँगरेजी और हिन्दुस्तानी खाने न खा आये। ये हजरत भी उन्हीं के यहाँ ठहरे हुए थे। इनको बरेली की घटना इस प्रकार याद थी कि फिर चर्चा करके हँसने लगे, और कहने लगे, कि भाई, वहाँ बहुत ही आनन्द रहा। किन्तु यह न मालूम हुआ कि आखिर किसकी शरारत थी। दो तीन ही दिन मे इन हजरत से काफी जान पहचान हो गई। क्योंकि हम अवश्य कौन्सिल की बैठक देखने आते थे। चाँदनी की शरारत

किये हुये काफी दिन हो गये थे। अत उसने फिर एक ऐसी शरारत कर डाली कि हम बहुत घबड़ा गये। कौन्सिल के रिफ्रेशमेन्ट रूम में वैसे तो कई बार गये बल्कि प्रतिदिन जाने का मौका मिलता था, किन्तु एक दिन हमारी फरिश्ते की आन्त वाली बेगम साहिबा को वहाँ भी अवसर मिल गया, और न मालूम किस प्रकार चाय, शक्कर और दूध को इस तरह कड़वा किया कि हमको भी पता न चला। पता तो हमें तब चला, जब कौंसिल के इन्टरवेल में वही हजरत हँसते हुये हमारे पास दौड़े आये, और कहने लगे, कि भाई होशियार हो जाओ! बरेली वाला आ गया! हमने कहा, क्या मामिला है, तो वे हमें और चाँदनी को कौन्सिल के रिफ्रेशमेण्ट रूम में ले गये, जहाँ कुछ थोड़े से आनरेबुल सदस्यगण मुँह की कड़वाहट दूर करने के लिए कुल्लियाँ कर रहे थे। हमने चाँदनी से धीरे से कान में कहा कि अब निश्चय तेरी शामत आ गई। अच्छा है कि यहाँ से भाग चल, अत हम शीघ्र लौट आये।

जिस दिन हम जाने वाले थे, उसके एक दिन पहले कौन्सिल के ये मेम्बर साहब हमें झील के किनारे मिले और हमने उनकी बार बार चर्चा की, और उनकी तबीयत से खुश होकर यह उचित समझा कि उनसे इस कड़वाहट का भेद बता दें। अत हमने उनसे। चाँदनी की शरारत के लिये क्षमा माँगी, तो हक्का बक्का होकर खड़े रह गये और पूरी कहानी सुनकर कहने लगे, कि अब हम तुम्हें दो तीन दिन न जाने देंगे। उन्होंने दो तीन दिन अपने दोस्तों को जो या तो स्वय बरेली के स्टेशन पर कुनैन के शिकार हुये थे, या दूसरों का देख चुके थे चाँदनी से मिलाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारी बीबी इस आनन्द करने की जगह से लोगों की आँखों से

बचने के लिए इसे लेकर ऐसे अदृश्य हुई कि लोग खोजते ही रह गये।

६

वापसी में अभाग्य से कहिये या सौभाग्य से, हमारे एक दोस्त का साथ हो गया। उनकी बीवी पर्दे की बहुत ज्यादा पाबन्द थी और वे उनको तीसरे दर्जे में सफर कराते थे, और स्वयं सेकण्ड क्लास में सफर करते थे। और मजा यह कि बीवी के पास तक न झाँकते थे। नौकर या नौकरानी के द्वारा खबर मँगाया करते थे।

हमने भी चाँदनी को तीसरे दर्जे में ठूँसा और कहा—'ले, अब अपनी हैसियत के मुताबिक सफर कर और बुर्का ओढ़कर भली औरतों की तरह मुँह लपेट कर बैठ।" उसे मजबूरन बैठना पड़ा। हमारे दोस्त की बीवी बहुत शर्मीली, खामोश और सीधी सादी थी। हालाँकि वे उम्र में चाँदनी के बराबर ही थीं, मगर बेचारी को दुनिया का तजरूबा बिल्कुल न था। हमारा उनका बरेली तक साथ हुआ। काठगोदाम से सुबह की गाडी में रवाना हुए। हम कभी बीवी से मुलाकात कर आते थे, मगर हमारे साथी साहब दूर ही से खडे होकर सिर्फ इतना देख लेते थे कि उनकी बीवी खिडकी का पट बन्द किये हैं या खोले।

एक स्टेशन पर जनाने डिब्बे के पास से कोई गुंडा निकला और उसने हमारे दोस्त की बीवी को, जो उस वक्त खिडकी खोले बैठी थी, देखा, तो पास से गुजरते हुए कहा, "कहाँ जा रही हो?" वह बेचारी धक से रह गई। मारे डर के उनका कलेजा काँपने लगा। घबराकर चाँदनी से कहने लगी—"बहन खुदा के लिए खिड़कियाँ चढा लो, कोई बदमाश मुझसे ऐसा

कहकर चला गया।" हमारी तेज तर्रार बीवी ने हँसकर कहा—"आपने बता क्यों न दिया कि बरेली जा रही हूँ।" वह बेचारी हँसने लगी, और कहने लगी—"मेरे मुँह से तो आवाज ही नहीं निकल सकती, मैं बहुत घबराती हूँ।" ये बातें हो ही रही थीं कि वह फिर खिड़की के सामने से गुजरा और उसने फिर वही कहा। दोस्त की बीवी घबराकर एकदम से खिड़की चढ़ाने लगी। इतने में वह चलते-चलते बोला—"यह गजब तो न करो।" इस पर बेचारी के हाथ पैर फूल गये। खिड़की हाथ से छुट पड़ी और बेदम होकर कोने में मुँह छिपा कर बैठ गई। चाँदनी हस रही थी और वह चाँदनी से कह रही थीं कि इसी मारे तो खिड़की के पास औरतों का बैठना ठीक नहीं होता। दरअस्ल उसकी हालत काबिले रहम थी। चाँदनी दौड़ कर खिड़की के पास आई, मगर वह गुंडा जा चुका था।

हम जो अगले स्टेशन पर आये, तो उसने यह घटना सुनाई और दूर के उस शख्स को दिखाकर कहा "मालूम होता है कि आज उसकी शामत आई है।" हमने देखा, एक मामूली लफंगा-सा आदमी था। मैला पायजामा, टर्की टोपी और काली अचकन पहने था। वहाँ गाड़ी देर तक ठहरती थी। हम थोड़ी देर बाद ही चले आये। हमने अपने दोस्त से कहा, तो वे बेचारे कहने लगे—"क्या बतायें, बस, इसी मारे तो औरतों का सफर करना ठीक नहीं होता।" हमने कहा—"जनाब, आपने पर्दे की हद करके ही यह हाल कर दिया है, अगर आप अपने साथ बिठायें, तो क्या हर्ज हो?" मगर यह सब बेकार था क्योंकि हमारे उनके ख्यालात में जमीन आसमान का फर्क था।

चाँदनी पर नटखटपन का भूत सवार हो गया। उसने पहले तो हमारे दोस्त की बीवी की बुजदिली पर खफा होकर सजा के तौर पर उसे एक कडुआ पान खिलाया। इसके बाद हमने देखा कि वही हजरत आ रहे हैं। वह खिड़की की तरफ मुँह खोले बैठी थी, पान की डिबिया उसके हाथ में थी। जैसे ही वह पास आया, वैसे ही इसने डिबिया खोली। गुण्डा मुसकुराकर बोला "अकेले ही-अकेले ?" चाँदनी ने फौरन एक पान उसे दे दिया, जिसे उसने फौरन ले लिया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वह हजरत नल पर खड़े थूक थूककर अपनी चोंच साफ कर रहे हैं, क्योंकि सारा मुँह कड़ुआ हो रहा था।

वह हजरत जले भुने फिर लौटकर आये और पान की कडुवाहट के बारे में चाँदनी से कोई बेहूदा शब्द कहा। उसने डाँटकर कहा—"शरीफों की सी बातें करो। उसे बेहद गुस्सा आ रहा था। हमारे दोस्त की बीवी का यह बात देखकर जो हाल हुआ, यह बयान से बाहर है। आज चाँदनी ने उसे पान दिया, तो वह कहने लगीं—"अगर तुम्हारे मियाँ देख लेते, तो क्या होता।"

चाँदनी ने कहा—"कुछ नहीं। इसमें क्या हर्ज है ?" वे कहने लगीं—"खुदा के लिए रहने दीजिये, वरना बदमाश और भी पीछे पड़ जायगा।"

इतने में वह फिर आया और उसने पहले से भी ज्यादा कोई बेहूदी बात कही। चाँदनी मारे गुस्से के काँपने लगीं। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। नैनीताल में हमने उसे साँप के हैंडिल का एक बढ़िया सा छाता साढ़े सात रुपये में ले लिया था। उसने आव देखा न ताव, छाता लेकर गाड़ी से

उतरी और पीछे से उस गुन्डे के सिर पर एक हाथ ज़ोर से मारा। उसने जो मुड़कर देखा, तो एक डॉट बताकर जो हाथ मारने शुरू किये, तो एक गुल मच गया। लोगों ने समझा, इस शख्स ने न जाने क्या बदमाशी की होगी। चारों तरफ हुल्लड सा मच गया। पास में एक अँगरेज मुसाफिर खड़ा था उसने उसे पकड़ लिया। चाँदनी अपनी गाडी में चली गई और वह गुन्डा पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। हम चाँदनी के पास आये, जो इस जग के बाद गुस्से से काँप रही थी। उसके ओठ सूख रहे थे हमारे दोस्त की बीवी कोने में सहमी बैठी थी। हमने चाँदनी की पीठ ठोंकी और कहा—"शाबाश, खूब किया।"

७

बरेली स्टेशन पर हमारे दोस्त हमारी बहादुर बीवी की तारीफ मगर ऐतराज के साथ—करते हुए विदा हुए। इतने में एक पुलिस सब इन्स्पेक्टर साहब आये और उन्होंने हमारा पता वगैरह लिखा। वे कहने लगे—अगर आप को ऐतराज न हो, आप की बीवी का नाम भी गवाही में लिख लूँ, क्योंकि उस बदमाश के पास कोकेन भी बरामद हुई है ?"

थोड़े ही दिन बाद चाँदनी के नाम बरेली के रेलवे मजिस्ट्रेट की अदालत से समन आया कि फलॉ तारीख को आकर मुलजिम को शिनाख्त करो और गवाही दो। चाँदनी इस अदालत की पेशी से घबराई। वह कहने लगी—"मैं तो न जाऊँगी।"

हमने कहा—"क्या तेरी शामत आई है ? अगर समन से न जायगी, तो वारन्ट कट जायगा और पुलिस पकड़कर तुझे

ले जायगी। फिर मुलजिम के वकील तुमसे जिरह करके तेरी सारी शरारतों की इक्ट्ठी कसर निकाल लेंगे।"

समन तो लेना पडा, मगर चाँदनी सख्त परेशान थी। अगर हम चाहते, तो उस झगडे से निकाल सकते थे, मगर हमने सोचा कि कुछ तजरुबा होना अच्छा ही है, इसलिए हमने उससे कहा—' घबराओ नहीं, हम तुम्हारे साथ चलेंगे।"

रेलवे मजिस्ट्रेट एक डिप्टी-कलक्टर थे। जब हम खुद अपनी बीवी को लेकर हाजिर हुए तो उन्होंने अपने करीब कुर्सी दी। मुलजिम की शिनाख्त हुई। जब मजिस्ट्रेट चाँदनी के बयान लेने लगे, तो हमने चुपके से उसके कान में कहा—"वकील तुमसे जिरह करेगा। अगर कहीं तूने जरा भी झूठ कहा, तो समझ ले कि तुझ पर झूठी गवाही (दरोगहल्फी) का मुकदमा चल जायगा और तुझे जेल की हवा खानी पडेगी।" यह सुनकर वह और भी बौखला गई।

जब उससे मुलजिम के वकील ने जिरह की, तो वह और भी घबराई। उसे मजबूरन कबूल करना पडा कि उसने सजा के तौर पर मुलजिम को कुनैन डालकर कडुवा पान दिया था। इत्तिफाक से बरेली की घटना अभी ताजी ही थी। मैजिस्ट्रेट ने दिन और तारीख जो पूछी, तो मालूम हुआ कि जिस रोज बरेली स्टेशन पर तमाम चीजें कडुवी हुई थीं, वही दिन बरेली स्टेशन पर चाँदनी की उपस्थिति का था। उस मामले की तहकीकात पुलिस पहले ही कर चुकी थी। तमाम कडुवी चीजों की डाक्टरी परीक्षा भी हो चुकी थी। परीक्षक ने बताया था कि सारी चीजें कुनैन से कडुवी की गई थीं। हर जगह तहकीकात से साबित हो चुका था कि कोई औरत थी। पान-वाले ने कहा था कि मैंने एक औरत के हाथ पान बेचे थे। यही

बात रोटीवाले ने कही थी। होटल वाले का बयान भी मौजूद था। मजिस्ट्रेट ने इन सब बातों को मिलाकर देखा, तो मामला और ही नजर आया। इसके अलावा तहकीकात में लोगों ने जो बयान दिये थे, उनमें भी चॉन्दनी की हुलिया दर्ज थी। मैजिस्ट्रेट बेचारे बड़े नेक आदमी थे। उन्होंने कुछ हमारा लिहाज किया और कुछ हमारी बीवी का जो इस वक्त बेतरह घबरा रही थी। उन्होंने एक तरफ तो वकील को बहुत से ऐसे सवाल करने से रोका, जिनका जवाब देने से पहले ही शायद चाँदनी रो पड़ती और दूसरी तरफ इस कड़ुवाहट की बात को अप्रासंगिक कहकर बन्द कर दिया।

अदालत से छुट्टी मिली, तो उसकी जान में जान आई, लेकिन डबल फर्स्ट क्लास के किराय का परवाना जो उसके हाथ आया तो फिर वही हालत हो गई। हमने कहा—"क्यों, इस परवाने को आधे दाम पर हमारे हाथ बेचोगी ?"

"जी, मुँह धो आइये,"—चॉदनी बोली—"इन्हीं आधे दामों से कुनैन खरीदी जायगा।"

अदालत में जो परेशानियाँ नजर आई थीं, वह सब दूर हो गईं। हमने कहा—"तू न मालूम किस भूल में है। ताज्जुब नहीं की अभी तेरी पेशी मुलजिम के तौर पर कुनैन वाले मुकदमे में है।"

वह यह भी जानती थी कि मैजिस्ट्रेट और सब इन्सपेक्टर रेलवे पुलिस कुनैनवाले मामले की खुद तहकीकात कर चुके थे, और दोनों यह जान गये थे कि तमाम चीजें उसी ने कड़ुवी की थीं। इसलिये वह मेरी बात सुनकर कुछ घबरा गई। शाम को हम मजिस्ट्रेट के बँगले पर अपनी मुलाज़िम बीवी को लेकर गये और उनके सामने उसकी तरफ से हमने उसका जुर्म कबूल किया।

उन्होंने आश्चर्य और दिलचस्पी से सारा किस्सा सुना और अन्त में इतमीनान दिलाया कि कुनैन वाला मुकदमा दाखिल दफ्तर कर दिया जायगा। चाँदनी का कुनैन का इस्तेमाल इतना बढ गया था कि अगर कुछ दिन बाद इस शरारत से कुछ उसका जी न भर गया होता, तो वह जरूर ही पुलिस में पकड़ी जाती।

छठवाँ परिच्छेद

हिन्दुस्तानी परदा

मैं द्वार पर पहुँचा और ड्योढी में प्रवेश किया, पर भीतर जैसे ही पैर रखा कि चौंक पडा। एक जेन्टिलमैन आराम कुर्सी पर लेटे हुये हुक्का गुडगुडा रहे थे। उनकी रूपवती श्रीमतीजी भी समीप ही बैठी थीं। मैं शीघ्र ही 'अरे' कहकर लौटा, और वे महाशय गरज कर और हुक्के की नै सँभाल 'लेना-लेना बदमाश को पकडना' कहकर फाँद पडे। मेरी शामत जो आई, तो मैं घबराकर सीधा भागा और वे महाशय नगे पैर हुक्के का नै हाथ में थामे मेरे पाछे 'लेना' 'लेना' कहते दौडे। गली का मोड पर मैं शीघ्र ही रुका कि कहीं लोग बदमाश समझकर मुझे पकड न ले। आते ही उन महाशय ने मेरे ऊपर दो तीन हुक्के की नै लगाई। 'सुनिये तो' 'सुनिये तो' मेरे मुँह से निकल रहा था और वे मेरे ऊपर बरस रहे थे कि इतने मे कई व्यक्ति बीच में पड गये।

"बदमाश ! पाजी ! लुच्चा ! दिन दहाड़े !"—काँपते हुए बोले।

"जरा सुनिये तो, सुनिये तो"—मैंने कहा।

"ठहर जाइये। तनिक शान्ति से काम लीजिये। क्या मामला है ?"—एक बड़े मियाँ ने कहा।

विनयपूर्वक मैंने कहा—"दुर्भाग्य से मैं बजाय बराबर वाले मकान के इनके मकान मे चला गया और इसके लिए मैं बड़ा ही लज्जित हूँ।"

इस पर वे महाशय बोले—"अबे बेईमान ! बदमाश भूल है। जान बूझकर"

"नहीं साहब, ऐसा हो ही जाता है। जाने दीजिये।"—मियाँ बोले।

'जाने दीजिये ! मैं तो पुलिस में दे देता।"—महाशय ने कहा।

अस्तु, लोगो ने मामला रफै दफै किया। पिटा पिटा लज्जित खडा था और फिर असली जगह जाने का विचार स्थगित करके, गरदन नीचे किये, लौट आया। दिया जल चुके थे कि घर पहुँचा।

[१]

"आज प्रात काल न मालूम किस मनहूस का मुँह देखा था। कहीं तू तो सम्मुख नहीं आ गई थी ?"—मैंने चाँदनी (अपनी पत्नी) से कहा।

चाँदनी ने कहा—"क्या हुआ था ? मैंने कहा था न कि रात को तकिये के पास बैठकर दर्पण न देखो। अशुभ होता है। तुम भूल गये और वह वहीं रखा रह गया, और प्रातःकाल कदाचित् तुमने देख लिया।"

चाँदनी की बात सुनकर मुझे हँसी आ गई, क्योंकि वास्तव में मैंने रात को दुर्भाग्य से दर्पण देखकर वहीं रखा रहने दिया था।

चाँदनी ने विस्तृत समाचार पूछा, तो मैंने बताया कि किस प्रकार मैं आज एक स्थान में धोके से परदा-नशीन स्त्री के घर में घुस गया और फिर किस प्रकार पीटा गया।

बात आई गई हो गई। यह घटना लखनऊ की थी और उसके चार दिन उपरान्त हम वहाँ से लद गये।

वेटिंग-रूम मे आराम कुर्सी पर लेटा हुआ मैं समाचार पढ रहा था कि तनिक बाहर निकला। देखा तो एक बन्द गाड़ी आकर रुकी। लोगों ने परदे के लिए चादरें तानी और कोई बेगम साहिबा जनाना वेटिंग-रूम मे उतरीं। मैं लौट आया और नियमानुसार समाचारपत्र पढने लगा। खटपट की जो आवाज आई, तो मैंने अखबार हटाकर देखा। एक साहब—प्रत्येक प्रकार से पूर्ण जेंटिलमैन—'उफ्फ् ओह' करके कुर्सी पर बैठ गये और मेरी ओर देखने लगे। यह वही महाशय थे जिन्होंने हुक्के की नै से मेरी मरम्मत की थी। अपनी श्रीमती जी को जनाना रूम में उतरवाकर आ रहे थे।

"खुदा की पनाह!"—कहकर अपनी टोपी उतारी और मेरी ओर देखकर बोले—"जनाब, कहाँ तशरीफ ले जायँगे?"

मैंने ध्यान से देखा और बहुत प्रसन्न हुआ कि चलो अच्छा है। उन्होंने मुझे पहचाना नहीं और तब उनको बताया कि मैं आगरे जाऊँगा।

"अच्छा, आप भी आगरे तशरीफ ले जा रहे हैं!"—कह कर जो उन्होंने वार्तालाप का ताँता पूरा, तो दुनिया भर की बातें पूछकर फिर वही पुरानी बातें प्रारम्भ कीं, यात्रा की

कठिनाई और स्त्रियों के साथ इत्यादि विषयों पर कहते-कहते बोले—'क्या बताऊँ साहब, मैं तो परेशान हो जाता हूँ। यात्रा में स्त्रियों का साथ वास्तव में एक विपत्ति है। चार घन्टे तो स्त्रियों को सवार कराने में गये।'

मैं—"वह कैसे ?"

उन्होंने कहा—"अजी साहब स्त्रियों के विषय में और फिर ससुराल का मामला और तिस पर मेहमान! भीतर न जा सकता था, क्योंकि अन्य रिश्तेदार स्त्रियाँ थीं। बाहर से कहलवाता था कुछ और भीतर से उत्तर आता था कुछ! खुदा-खुदा करके सामान बँधा। फिर भी कुछ चीजें जो बाहर रहनी थीं, अन्दर बँध गईं और कुछ चीजें जो अन्दर बँधनी थीं, वे बाहर रह गईं। ड्योढी पर जब घन्टों शोरगुल मचाया गया, तब जाकर सवार होने की नौबत आई। यात्रा में स्त्रियों का साथ होना वास्तव में एक विपत्ति है—बवाल जान हैं। सामान को देखें या इन्हें ?"

अंतिम वाक्य असगर साहब ने कुछ परेशान होकर कहा, क्योंकि वे वास्तव में कुछ बौखलाये हुये से थे।

मतभेद प्रकट करते हुए मैंने कहा—"शायद, पर इसका कारण क्या है कि यात्रा में स्त्रियाँ बवाल जान होती हैं। आखिर वे आराम और चैन का कारण क्यों न हों, जिससे मार्ग की परेशानी दूर हो ?"

असगर साहब—"तोबा कीजिए। लाहौल बिलाकूवत। परेशानी दूर हो! यह कहिये, दुगुनी होती है।"

मैं (मुसकराकर)—"मालूम होता है, आपके साथ बहुत-सी स्त्रियाँ हैं ?"

असगर—"बहुत सी तो नहीं, केवल मेरे घर में मेरे साथ हैं।"

मैंने अत्यन्त सादगी से पूछा—"घर मे से कौन साथ है।"

असगर—"स्वय मेरे ही घर मे हैं।"

"कौन ?"—मैंने फिर हँसकर नटखटपन से पूछा।

"खुद घर ही (मे) से हैं।"—असगर साहब ने फिर वही उत्तर दिया।

मैं—"क्या खूब! आपने तो कमाल ही कर दिया। आखिर घर में से कौन हैं? माँ, बीबी, बहन, नौकरानी। आखिर कौन हैं? कदाचित् आपकी श्रीमती जी होंगी।"

कुछ झेंपकर असगर साहब ने कहा—"जी हाँ, और आप की सवारियाँ ?"

मैं—"मैंने तो उन्हें कल ही बुक करा दिया।"

असगर साहब आश्चर्य मुद्रा से मुझे देखने लगे। अभी की मुलाकात और गम्भीर वार्तालाप! वे इस प्रकार देख रहे थ, मानों उन्हें कुछ बुरा मालूम हुआ और फिर बोले—"आप तो मजाक करते हैं।"

मैंने गम्भीरता से कहा—"मेरी समझ मे मुझको आप से हँसी करने का अधिकार इतनी जल्दी प्राप्त नहीं हो सकता। मैं मजाक नहीं करता, वरन् ठीक बात कहता हूँ और मुझे आश्चर्य है कि आपको मेरे कथन की सत्यता मे क्यों सन्देह हो रहा है। यह देखिये, रसीद भी मौजूद है। मैंने अपनी दोनों सवारियों को बुक करा दिया है।

यह कहकर मैंने रसीद असगर को दी, क्योंकि वास्तव में मैं मोटर साइकिल और साइकिल दोनों को सवारी गाड़ी से बुक करा चुका था।

असगर कुछ झेंप-से गये और रसीदें लौटाकर कहने लगे—"शायद आप अकेले ही यात्रा कर रहे हैं ?"

मैं—"जी नहीं, मैं अकेले यात्रा करने का अभ्यस्त नहीं।"

असगर—"पर जनाना वेटिंग-रूम तो खाली है। अच्छा, शायद वह डोली जो नल के सामने रखी है, उसमें वही हैं।" (यह बात उन्होंने पूर्ण विश्वास से कही)।

मैं—(हँसकर)—"जी नहीं।"

असगर—"फिर कहाँ विठाया है ?"

मैं—"कहीं नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे विठाया है।'

मेरी बात को मजाक समझ असगर ने अरुचि से कहा—"क्षमा कीजिए, मैं आपकी बात नहीं समझ सका।"

मैंने हँसकर कहा—"वे मुझे यहाँ बैठाकर टिकट लेने गई हैं।"

"अरे, यह क्या ! असगर बोले।"

मैं—"साहब, कारण यह है कि सामान मेरे पास आवश्यकता से अधिक है। उसमें से कुछ तो मालगाडी से जायगा और कुछ सवारी गाडी से। फिर उसमें से कुछ ऐसा है, जो साथ रहेगा और कुछ ऐसा है, जो ब्रेक में दिया जायगा। मेरी तबीयत कुछ खराब थी, इस कारण बाध्य होकर वे बेचारी यहाँ मुझे आराम से बैठाकर टिकट लेने और सब सामान बुक कराने गई हैं। आध घंटे से अधिक हो गया है और अभी तक नहीं आईं।"

असगर साहब (आश्चर्य से)—"अरे, क्या अकेली गई हैं ?"

मैंने अत्यन्त रूखे भाव से कहा—"जी नहीं, वरन् उनके साथ बुकिंग क्लर्क और कुली भी गया है।"

असगर साहब आँखें फाड़कर बोले—"अच्छा! तो क्या ये परदा बिलकुल नहीं करतीं ?"

मैं—'क्यों नहीं, करती क्यों नहीं हैं ? बहुत करती हैं।"

असगर—"तो फिर यह कैसे ?"

मैं—"यह कोई आवश्यक नहीं कि परदा किया जाय, तो दुनिया का कोई काम ही उसके कारण न किया जाय। मजबूरी है।"

असगर—"हदीस शरीफ में आया है कि स्त्रियाँ अन्धों तक से कड़ा परदा करें—यहाँ तक कि उनकी ओर को देखें नहीं।"

मैं—"आया होगा। मुझे तो पता नहीं, पर भविष्य में मैं भी अवश्य ख्याल रखूँगा, और यथासम्भव पाबन्दी कराऊँगा। परन्तु मेरा तो विश्वास है कि मेरी स्त्री सामखा बिना जरूरत अन्धों तक को भी नहीं देखती। हाँ, जरूरत पड़ने पर सबको देखती है। अब ताकीद कर दूँगा, पर यह बताइये " इतना ही कह पाया था कि द्वार के सामने मेरी प्रबन्धक स्त्री तेजी से जाती दिखाई पड़ी।

मैंने आवाज़ दी, और वह आई।

मैंने पूछा—"कहो, क्या देर है ?"

उसने कहा—"बस रसीद बनवानी रह गई है। अभी आती हूँ।'—यह कहकर चली गई।

"आप तो कहते थे कि परदा करती हैं। ये तो मुँह खोले घूम रही हैं।"—असगर ने कहा।

मैं—"सिर से पैर तक तो बेचारी ने इस गर्मी में अपने को चादर से लपेट रखा है और फिर भी आप आपत्ति करते हैं। तो आपका तात्पर्य यह है कि वह मुँह को भी बन्द कर लें और तेजी से इधर-उधर जाने, सामान धताने और उठाने

निन्द से लेट गया। चाँदनी ने कुली इत्यादि सबको निपटा और थोडी ही देर मे मैं ठण्डे पानी से और अपनी ...नी से बातें करके अपना दिल ठण्डा कर रहा था।

उधर असगर साहब का हाल सुनिये। रेल क्या आई कि ...तयों का दफ्तर खुल गया। कहारों ने पालकी मे उनको ...साहबा को, या यों कहिये कि मूर्खता के बोझा को उठाया ...आगे बढे। असगर ने सामान और कुलियों को देखा, ...क कुली गायब था। उधर पालकी निकली जाती थी। एक ...से उधर दौडे कि फिर इधर आये, और दूसरे कुली से ...। उसने कहा—"साहब अभी तो यहीं था। शायद आगे ...गया होगा। उसको साथ लिया और तेजी से आगे बढे। ...ा, तो उनका सामान लिये कुली भीड के साथ फाटक से ...हर होने ही वाला था, गजब ही तो हो गया। अन्धाधुन्ध ...ओर को लपके और उस हडबोंग में न मालूम किस- ...स से टकराये। अन्ततोगत्वा इस जल्दबाजी का नतीजा ...हुआ कि एक साहब से जो शायद इनसे भी आवश्यक ...म पर जा रहे थे, ऐसी टक्कर हुई कि वे गिरते गिरते ...चे, पर सभलने जो लगे, तो एक दही बडेवाले का खोमचा ...ामने आया। फादे तो दही बडेवाले ने हाथ से रोका। ...लस्वरूप दहीवडेवाले के खोमचे में पैर पडा और बुरी ...रह गिरे। तडपकर उठे कि दही बडेवाले ने पकडा। ...हाँ सामान बाहर निकला जाता था। हाथ को एक झटका ...िया और छुडाकर सीधे फाटक की ओर दौडे। कुली बाहर ...निकल चुका था, पर नजर अब भी आ रहा था। फाटक पर जो धक्का-मुक्की होती है उसे सब जानते हैं ? वहाँ दब पिचकर कोशिश की कि बाहर निकलें कि दही बडे वाले ने पकडा।

उससे हाथ छुडाने और उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया, पर तोना कीजिये ? वह काहे को छोडता ? देखता था कि हजरत बाहर निकले जा रहे हैं। फिर काहे को हाथ आयेंगे। उसे क्या मालूम था कि वे कहाँ जा रहे हैं। तात्पर्य यह कि दही बडे वाले से छीना झपटी करते हुए टिकट कलक्टर की छाती पर जा पहुँचे। उसने कहा—"टिकट ?" पर वहाँ तो कुली निकला जा रहा था। बुरी तरह फादकर और जोर देकर निकल गये और तडपकर कुली का हाथ जो पकड़ा। उधर टिकट कलक्टर और एक सिपाही उस दही बडेवाले के साथ उन पर टूट पडे। जिस आदमी का वह कुली और सामान था, उसने कहा—"यह क्या जगलीपन ? हजरत खैर तो है ?" बडे लज्जित हुए, क्योंकि न तो कुली उनका था और न वह सामान। टिकट कलक्टर को सूक्ष्म रूप से अपनी मुसीबत बताकर और टिकट दिखाकर बेतरह लौटे और दही बडे वाले से तनिक रुकने को कहा। वहाँ से लौट कर आये तो दूसरा कुली भी गायब था। हैरान होकर पुलिस के दफ्तर की ओर जा रहे थे। किसी ने कहा—"साहब, ऐसा नहीं हो सकता। दोनों कुली पालकी के पास होंगे।" दौड़कर पालकी के पास पहुँचे। वहाँ एक ही कुली मौजूद था। इतने में ख्याल आया कि दूसरे कुली ने पूछा था कि कौन दर्जे में सामान रखा जायगा। शीघ्र ही दौडे हुए हमारी ओर आये और कुली को हमारे डब्बे के पास खडा पाया। कुली को यहाँ पाकर और बिना हमारी बात सुने सीधे पालकी की ओर भागे।

उतरने वाले उतर चुके थे, और बैठने वाले बैठ चुके थे। असगर साहब ने पालकी को जनाने दर्जे से लगाकर दी

चारों न पर्दे तनवाये और अपनी श्रीमती से उतरने को कहा।

दुर्भाग्य से एक गोरा टहलता हुआ उधर आ निकला। शायद ताजा-ताजा ही विलायत से आया था। लखनऊ के लिये तो वह नवीन आगन्तुक था। उसने भला ये धन्धे काहे को देखे थे। न मालूम उसने क्या समझा कि निकट आया, और उत्सुकता अथवा आश्चर्य से प्रेरित होकर उसने यह देखना चाहा कि तने हुए कपड़ों में क्या हो रहा है। एक ओर जो चादर को हाथ से नीचा करके और ऊपर से सिर टालकर जो देखा, तो असगर की श्रीमती तो बैठ ही गईं। चादर समेट कर असगर साहब गोरे पर टूट पड़े। भयंकर गर्जना करके उस पर आये कि हुल्लड सा हो गया। उनके साथ के दो-तीन और आदमियों ने मिलकर गोरे को वह आड़े हाथों लिया कि अगर एक दूसरा गोरा आकर बीच-बचाव न करता, तो शायद पूरा झगड़ा खड़ा हो गया होता। असगर साहब बाद में कहते कि वह गोरा बिलकुल बदमाश और झूठा था, और उसने जान-बूझकर भारतीय मुसलमानों की तौहीन करने की नीयत से वह हरकत की थी।

जनाने दर्जे की सब खिड़कियाँ चढ़ाकर और पानी इत्यादि का प्रबन्ध करके असगर साहब एक कुली और दही-बड़े वाले के साथ हमारे यहाँ आये। मैं शर्बत पी रहा था। पहले तो कुली से वाद विवाद हुआ, और फिर दही बड़े वाले का नम्बर आया। पहले तो दही बड़े का खोमचा फाँदने की असफलता के कारणों पर उन्होंने विस्तार रूप से प्रकाश डाला, और सब और दही-बड़े वाले पर रखा कि यदि वह अपना हाथ अकारण उनके पाँव में डालता, तो वे उसे अवश्य लाँघ जाते

अस्तु वड़ी भॉय-भॉय के उपरान्त दही-बड़े वाला पॉच रुपया लेकर टला। रेल चली और तनिक सन्तोष हुआ, तब विपत्तियों का पूरा विस्तार सुनने में आया। ध्यान से असगर साहब ने अपने कपड़ों की ओर देखा, तो पतलून और मोजों पर जगह-जगह दही और सोंठ की चटनी के धब्बे दृष्टिगोचर हुए, इसलिए रूमाल भिगोकर छुड़ाने की कोशिश करके उनको खूब ही फैलाया।

तनिक विचार तो कीजिए। जितना सामान उनके पास था, उससे चौगुना हमारे पास था। यात्रा करनेवाले दो मियाँ बीवी हम थे। पर वे एक विपत्ति के ग्रसित थे, और हम आराम से थे। यदि उनका श्रीमती जी विपत्ती का कारण थीं तो हमारी श्रीमती जी सुख और चैन का कारण। यदि वास्तव में वे मजहब मे पाबन्द थे और हम उससे मुक्त, तो क्या ठीक है कि यह मजहब इस युग मे रहन सहन के लिए उपयुक्त नहीं अथवा हमारा दावा कि हमारा मजहब प्राकृतिक मजहब है, ठीक है। तनिक इस विषय पर फिर सोचिये।

३

तीन चार स्टेशन बाद असगर ने उतर कर अपनी श्रीमती जी की खबर ली कि उनका क्या हाल है। वहाँ जाकर देखा, तो सब खिड़कियाँ जिनको वे बन्द कर आये थे, खुली पाई। शीघ्र ही उन्होंने उन्हें चढाया। उनकी श्रीमती जी ने उनको यह दुखद समाचार सुनाया कि उनके चले जाने के उपरान्त काली अचकन पहने कोई व्यक्ति जनाने दर्जे में आया और एक कुली पर उनका एक ट्रक दिन दहाडे रखवाकर चलता बना। उनकी श्रीमती जी बेचारी परदानशीन तथा अनुभवहीन स्त्री थीं। ट्रक को जाते देख, स्वय कहने या रोकने के बजाय

उन्होंने पास बैठी एक स्त्री के कान में कुछ कहा, पर वह तीसरा दरजा न था। सब परदानशीन स्त्रियाँ थीं। उसने कहा—"फिर रोकती क्यों नहीं हो?" वह भला रोकतीं! वह ट्रक लेकर चलता बना और गाडी भी चल दी। उस ट्रक में बहुमूल्य कपड़ों के अतिरिक्त दो हजार के मूल्य की और भी सम्पत्ति थी।

दौड़-धूप करके शीघ्र ही पुलिस को सूचना दी और तार दिलाये। चाँदनी ने उनसे कहा—"क्षमा कीजिये, इसमें आपकी बेगम साहिबा की गलती है। पहले तो उन्हें उस आदमी को तुरन्त ही वहीं रोक देना चाहिए था, और यदि उनसे यह न हो सका, तो उनको जंजीर खींचकर गाडी रोकनी थी। और न सही, तो कम से-कम पहले स्टेशन पर खबर ही करतीं।"

असगर ने व्यंग से कहा—"क्षमा कीजिए, उस आदमी का हाथ पकड लेतीं?"

चाँदनी—"आखिर क्यों न पकड लेतीं? मैं होती, तो अपना ट्रक कदापि इस प्रकार न ले जाने देती।"

असगर—"अजी, एक ट्रक के पीछे हमारे यहाँ की स्त्रियाँ न तो परदा तोडती हैं, और न मरदों से उलझती हैं।"—ये शब्द असगर ने कुछ गौरवपूर्ण ध्वनि में कहे।

चाँदनी—"केवल इसी कारण उन्होंने उसके विषय में सूचना भी नहीं दी?"

असगर—"निस्सन्देह, यह तो एक ट्रक है। यदि लाखों की भी चीज होती, तो भी वह किसी मर्द से उसके विषय में बात न करती।"

मैंने कहा कि आश्चर्य है कि अपने अपने घर की स्त्रियों

को इतना लाचार कर रखा है। मेरी समझ में तो आप जैसे उदार-विचार के व्यक्ति को ऐसे निकम्मे विचार शीघ्रातिशीघ्र छोड़ देना चाहिये। इस पर बोले—जनाब, मैं ऐसी रोशनी का कायल नहीं, जो मजहब के विरुद्ध हो। यह रोशनी मुस्तफा कमाल के शासन को मुबारिक हो। ऐसी ही बातें होती रहीं कि एक स्टेशन पर असगर ने देखा कि कोई साहब खड़े जनाने दर्जे की खिड़कियाँ खोल रहे हैं। बस, फिर क्या था तुरन्त ही लपक कर घटनास्थल पर पहुँचे।

"मैं खिड़कियाँ बन्द करता हूँ और आप हैं, जो खोल खोल देते हैं।"

"अच्छा, यह आप हैं! मैं स्वयं परेशान हूँ, और बार बार खोलता हूँ, और आप बन्द कर देते हैं। मारे गर्मी के स्त्रियों का बुरा हाल है, और आपको परदे की सूझी है। यदि ऐसा ही है, तो आप अपनी स्त्री को किसी और जगह बिठाइये, या फिर साथ लेकर ही क्यों चले थे?"

"मगर मैं आपको खिड़कियाँ न खोलने दूँगा। जितना अधिकार आपको है, उतना ही मुझे भी।" असगर ने एक खिड़की बन्द करते हुए कहा।

"मैं अधिकार-वधिकार कुछ नहीं जानता और खोलूँगा स्त्रियाँ न हुई जानवर हो गईं।"

"तो आप कम से कम मेरी ओर वाली खिड़की रहने दीजिए।"

"मैं आपकी और अपनी कुछ नहीं जानता। मैं इस खिड़की को तो अवश्य खोलूँगा, क्योंकि यही तो मुख्य है।"—उस ट... और जिद्दी आदमी ने कहा।

"आप नहीं मानते, तो मैं स्टेशन मास्टर से कहता हूँ—"
असगर ने कहा।

"आप लाट साहब से कह दीजिये, जाइए।"—आवेश से वह अपरिचित व्यक्ति बोला।

स्टेशन मास्टर और गार्ड आये और उस टर्रे और जिद्दी आदमी की जीत हुई। गर्मी भी इतनी विकट पड़ रही थी कि खिड़की का बन्द रखना असह्य था। लाचार होकर असगर पिनपिनाकर रह गये, क्रोध अपनी श्रीमती जी पर यह कह कर उतारा कि बुर्के के ऊपर एक और चादर ओढ़कर कोने में नाक लगाकर बैठ जाओ।

४

असगर साहब की विपत्ति की अभी वास्तव में समाप्ति नहीं हुई थी, वरन् श्रीगणेश ही हुआ था। पग-पग पर उनके मज़हब और वर्तमान रहन-सहन का प्रदर्शन होता था।

गाड़ी चलते चलते धीमी हुई और रुक गई। जनाने ड्योढ़े दर्जे के पहियों के धुरे तेल की कमी और गर्मी की भयंकरता के कारण तप उठे थे और आग लग जाने की आशंका थी। गाड़ी जंगल में रुकी हुई थी और उसके धुरे पर पानी छिड़का जा रहा था। स्त्रियों को जल्दी जल्दी उतारा जा रहा था। असगर साहब की घबराहट उपदेशप्रद थी। परदे के सम्पूर्ण ढङ्गों के साथ श्रीमती जी को उतारना और सामान उतरवाना एक विपत्ति थी। वहाँ कौन था, जो चादरें तानता और डोली लाता। उधर गार्ड 'उतरो, उतरो जल्दी करो' कहकर और भी रहे सहे होश उड़ाये देता था। बाध्य होकर असगर ने अपनी श्रीमती जी से उतरने को कहा। प्लेटफार्म तो था नहीं, मानों पहाड़ पर से उतरने का मजमून पेश था। हमारी समझ में तो

न आता था कि किस प्रकार कोई आँखें बन्द करके उतर सकता है और वहाँ असगर साहब की श्रीमती जी के इस कार्य के करने की आशा की जा रही थी। वह स्त्री, जो डोला से एक पग रखकर गाडी के डब्बे में बैठने की अभ्यस्त हो, वह भला बुर्का और बुर्के के ऊपर चादर ओढकर उस हैरानी और परेशानी में किस प्रकार उतर सकती है? काँपते हुए हाथों से टटोल कर गरीब ने खिडकी को पकडा। पैर नीचे करके टटोल रही थी कि किस चीज पर और कहाँ पैर रखूँ कि बे-पर्दगी होने लगी, यानी हवा में चादर उडकर कुछ भाग पोशाक का खुल गया, असगर जोर से चिल्लाये। गरीब ने घबराकर सँभलना चाहा कि पैर कहीं-का-कहीं पडा। हाथ से खिडकी छूटी और धम से नीचे गिरी। नीचे ट्रंक रखा गया था, जिस पर असगर खडे थे। ट्रङ्क का कोना कोल्हू में इस जोर से लगा कि बेदम ही तो हो गई, पर जवान से उफ तक न निकली। एक तो गर्मी की तेजी, फिर उस पर कपडों का बोझ और तिस पर वह चोट—बेचारी बेहोश हो गई। जैसे तैसे करके घबराहट और जल्दी में चाँदनी ने सहारा देकर उठाया। किसी दूसरे मर्द की सहायता के असगर इच्छुक न थे और चाँदनी ठहरी कमजोर, फलस्वरूप बेचारी को कंकडों पर [illegible] तरह घसीट कर ले चले।

[illegible] बन पडा, हजार कठिनाइयों से एक जनाने [illegible] गरीन को रखा। अपने साथ बिठाने को हमने [illegible] पर जनाना और कोई दर्जा खाली ही न था, [illegible] के खयाल से उनकी श्रीमती की सेवा के लिए साथ हो गई। जैसे तैसे करके सामान अपने [illegible] किया और गाडी चली।

चाँदनी ने वहीं गाड़ी के बेंच के पास श्रीमती असगर को लेटा रहने दिया, क्योंकि और कहीं स्थान न था। तकिया लगा दिया और मुँह खोलकर हवा दी।

अगले स्टेशन पर असगर साहब उतर कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि जनाने दर्जे का द्वार खुला है और सामने उनकी श्रीमती जी लेटी हैं और चाँदनी उनके पास बैठी हवा दे रही है और उन्होंने बरफ का पानी माँगा। देखकर असगर साहब आपे से बाहर हो गये और जोर से चिल्लाकर बोले—"अरे यह क्या गजब कर रही हैं? मुँह तो ढकिये। अरे, मुँह क्यों नहीं ढकतीं?"—यह कहकर एकदम लपक कर दर्जे में घुस आये। "यह क्या सितम है? गजब है खुदा का!"—कहकर अपनी श्रीमती जी का मुँह ढँक दिया और वक्र दृष्टि से क्रोध में चाँदनी से कहा—"यह आपसे किसने कहा था कि अपनी तरह मेरी बीवी का भी मुँह खोल दें? यह आपको ही मुबारिक हो। आप रहने दीजिए और जाइये।"

गई थी भले को और वहाँ हुआ बुरा। चाँदनी बेचारी चुपचाप चली आई। मेरी तबीयत खराब थी, इस कारण उस यात्रा में उसकी हाजिर जवाबी काम न करती थी। फिर भी कहने लगी—"कहिये तो फिर इनकी खबर ली जाय।" मैंने कहा—"नहीं, रहने दो।" इतने में असगर साहब आये और उसी जले भुने लहजे में कहने लगे—"आप से आखिर किसने कहा था कि आप मेरी बीवी का मुँह हर एक के देखने के लिये खोल दें।"

चाँदनी—"मैं लज्जित हूँ, मगर यह तो ..."

असगर—"जी हाँ, मगर-वगर को जाने दीजिए। आखिर

न आता था कि किस प्रकार कोई ऑखें बन्द करके उतर सकता है और वहाँ असगर साहब की श्रीमती जी के इस कार्य के करने की आशा की जा रही थी। वह स्त्री, जो डोली से एक पग रखकर गाडी के डब्बे में बैठने की अभ्यस्त हो, वह भला बुर्का और बुर्के के ऊपर चादर ओढकर उस हैरानी और परेशानी में किस प्रकार उतर सकती है? कॉपते हुए हाथों से टटोल कर गरीब ने खिडकी को पकडा। पैर नीचे करके टटोल रही थी कि किस चीज पर और कहाँ पैर रखूं कि बे-पर्दगी होने लगी, यानी हवा में चादर उडकर कुछ भाग पोषाक का खुल गया, असगर जोर से चिल्लाये। गरीब ने घबराकर सॅभलना चाहा कि पैर कहीं-का-कहीं पडा। हाथ से खिडकी छूटी और धम से नीचे गिरी। नीचे ट्रक रखा गया था, जिस पर असगर खडे थे। ट्रङ्क का कोना कोल्हू में इस जोर से लगा कि बेदम ही तो हो गई, पर जबान से उफ तक न निकली। एक तो गर्मी की तेजी, फिर उस पर कपडों का बोझ और तिस पर वह चोट—बेचारी बेहोश हो गई। जैसे तैसे करके घबराहट और जल्दी मे चॉदनी ने सहारा देकर उठवाया। किसी दूसरे मर्द की सहायता के असगर इच्छुक न थे और चॉदनी ठहरी कमजोर, फलस्वरूप बेचारी को ककड़ों पर मुर्दे की तरह घसीट कर ले चले।

जिस प्रकार बन पडा, हजार कठिनाइयो से एक जनाने तीसरे दर्जे मे गरीब को रखा। अपने साथ बिठाने को हमने बहुत कुछ कहा, पर जनाना और कोई दर्जा खाली ही न था, चॉदनी सहानुभूति के ख्याल से उनकी श्रीमती की सेवा शुश्रुषा के लिए साथ हो गई। जैसे तैसे करके सामान अपने साथ किया और गाडी चली।

चाँदनी ने वहीं गाडी के बेंच के पास श्रीमती असगर को लेटा रहने दिया, क्योंकि और कहीं स्थान न था। तकिया लगा दिया और मुँह खोलकर हवा दी।

अगले स्टेशन पर असगर साहब उतर कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि जनाने दर्जे का द्वार खुला है और सामने उनकी श्रीमती जी लेटी हैं और चाँदनी उनके पास बैठी हवा दे रही है और उन्होंने बरफ का पानी माँगा। देखकर असगर साहब आपे से बाहर हो गये और जोर से चिल्लाकर बोले— "अरे यह क्या गजब कर रही हैं? मुँह तो ढकिये। अरे, मुँह क्यों नहीं ढकतीं?"—यह कहकर एकदम लपक कर दर्जे में घुस आये। "यह क्या सितम है? गजब है खुदा का!"— कहकर अपनी श्रीमती जी का मुँह ढँक दिया और वक्र दृष्टि से क्रोध में चाँदनी से कहा—"यह आपसे किसने कहा था कि अपनी तरह मेरी बीवी का भी मुँह खोल दें? यह आपको ही मुबारिक हो। आप रहने दीजिए और जाइये।"

गई थी भले को और वहाँ हुआ बुरा। चाँदनी बेचारी चुपचाप चली आई। मेरी तबीयत खराब थी, इस कारण उस यात्रा में उसकी हाजिर जवाबी काम न करती थी। फिर भी कहने लगी—"कहिये तो फिर इसकी खबर ली जाय।" मैंने कहा—"नहीं, रहने दो।" इतने में असगर साहब आये और उसी जले भुने लहजे में कहने लगे—"आप से आखिर किसने कहा था कि आप मेरी बीवी का मुँह हर एक के देखने के लिये खोल दें।"

चाँदनी—"मैं लज्जित हूँ, मगर यह तो "

असगर—"जी हाँ, मगर-वगर को जाने दीजिए। आखिर

शर्म हया भी तो कोई चीज है। आपकी भाँति स्त्रियों की शर्म-हया को ताक ''

जली तो चाँदनी पहले से ही बैठी थी। इतना सुनना था कि छतरा लेकर, जब तक मैंने रोका, तब तक दो तीन असगर साहब के ऊपर तड़ातड़ ठीक उसी भाँति लगाई, जिस प्रकार उन्होंने हुक्के के हाथ मेरे जड़े थे। असगर साहब ने बहुत-कुछ वार रोके, पर तीन चार बुरी तरह पड़े। हैं हैं' कह के मैंने डाँट कर रोका।

"बत्तमीज! बदजबान! निकल जा यहाँ से।" कहकर वह क्रोध में जंजीर की ओर लपकी और कहती गई—मैं अभी निकलवाती हूँ।"

"यह क्या वाहियात बात है?"—कहकर मैंने हाथ पकड़कर घसीटा और पकड़ कर बिठाया। वह क्रोध से काँप रही थी और कह रही थी—"मुझे छोड़ दीजिए।"

मैंने डाँटकर बिठाया। असगर साहब की विचित्र दशा थी। मैंने उनसे क्षमा माँगी और थोड़ी देर में चाँदनी से भी कहा कि तुम भी माँगो। बड़ी कठिनाई से समझाने बुझाने पर चाँदनी ने कहा- "यदि असगर साहब अपने शब्द लौटा लें, तो मैं अपनी मूर्खता और उद्दण्डता पर लज्जित हूँ और माफी माँगती हूँ।"

"मुझको दुःख है कि क्रोध में मैं आपको न मालूम क्या कह गया!"—ये शब्द मैंने असगर साहब से कहलवाये और दोनों ने हाथ मिलाया, पर न तो चाँदनी का दिल साफ था और न असगर साहब का और शेष यात्रा में एक ओर असगर मुँह फुलाये बैठे रहे और उधर वह चुप बैठी रही।

मैंने चुपके से चाँदनी के कान में कहा "दोस्त, तुमने

हमारा पल्ला छूट लिया। इसी व्यक्ति ने उस रोज हुक्के की नै में मेरी मरम्मत की थी।"

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा—"अरे !"

तो मैंने कहा—"चुप। खबरदार जो बात निकाली। ये हज़रत मुझे पहचान भी न सके। अकारण लज्जित करने से कोई नतीजा नहीं।"

चाँदनी चुप हो गई। आगरे में हम दोनों उतर, तो शोक-निवारणार्थ फिर हाथ मिलाये।

दुर्भाग्य से असगर साहब की विपत्तियों का अभी अन्त नहीं हुआ था। आठ सात रोज बाद जब मैं असगर साहब के घर दुबारा अपनी श्रीमती जी की अशिष्टता पर क्षमा माँगने गया, तब मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। असगर का घर तो समवेन्नागार बना हुआ था। मैं सन्नाटे में आ गया, जब मैंने सुना कि असगर की श्रीमती खो गईं।

आगरे के स्टेशन पर से वे उसी प्रकार उन्हें चादरें तानकर डोली में बिठाकर लाये। स्वयं तो ताँगे पर थे और डोली के साथ नौकर था। घर पर बजाय उनकी श्रीमती जी के एक वृद्धा परदानशीन स्त्री उतरी। उधर वह हैरान कि मैं कहाँ आ गई, और उधर असगर के घर वाले परेशान। वृद्धा कहती थी कि मेरा बेटा कहाँ है, जो डोली लेकर आया था और असगर कहते थे कि मेरी बीवी लाओ। दौड़कर स्टेशन पहुँचे। वहाँ से गाड़ी राजा मण्डी के स्टेशन को जा चुकी थी। वहाँ पहुँचे, तो इतना जरूर पता चला कि गाड़ी चूँकि वहीं समाप्त होती है इसलिए एक बुर्कापोश स्त्री के अतिरिक्त उसमें कोई नहीं पाया गया, और वह भी उतरकर एक आदमी के साथ चली गई। दोनों के पास टिकट आगरा सिटी से राजामण्डी के थे।

दूसरा आदमी नौकर मालूम होता था, जो उनको किसी बन्द गाड़ी में बिठा ले गया।

असगर का बुरा हाल था। पागलों की भाँति टकरा-टकरा कर उन्होंने सिर फोड़ लिया था। यदि घर वाले न होते तो कोई आश्चर्य नहीं कि अपनी जान गँवा देते, क्योंकि उनका अपनी श्रीमती जी के प्रति प्रेम ही नहीं वरन आसक्ति भी थी। उनकी शोचनीय दशा दयनीय थी, और उनको देखने से उपदेश मिलता था। वे बिलकुल पागल से हो रहे थे।

उनका ट्रंक मिल गया था। कोई भले आदमी धोखे में ले गये थे। भूल मालूम होने पर लौटा गये। ट्रंक आ गया, पर वहाँ तो ट्रंकवाली का रोना था। उनके घर वालों और उनसे सहानुभूति प्रकटकर शोक-मग्न मैं घर आया, और चाँदनी को सब समाचार सुनाया। उसे भी बेहद दुःख हुआ।

हम साल भर तक आगरे मे रहे। उस समय तक तो उनकी बीवी मिली नहीं थी, और उनका किस्सा भी पुराना हो चुका था, कि हम दूसरी जगह चले गये।

सातवाँ परिच्छेद

गुमनाम पत्र

हमारी बीवी इस नौकरी से प्रसन्न थी कि बदली होती है, और नये-नये स्थानों में रहने का अवसर मिलता है। हम कई जगह की हवा खा चुके थे और फिर नई जगह की आशा थी। सयोग की बात या खुशकिस्मती कि हमारी प्रसन्नता का

ठिकाना न रहा, जब हमें मालूम हुआ कि अब हमें हामिद के शहर में रहने का अवसर मिलेगा। हामिद अपने पुराने और पक्के दोस्त थे। हमने उन्हें फौरन तार दिया और हमारी बीवी ने तो सामान इत्यादि फौरन ही बाँधना शुरू कर दिया। हामिद का पत्र आया। यह पत्र क्या था, मानों किसी स्वागत-समिति के अध्यक्ष की ओर से मानपत्र था।

हम नये शहर में सीधे बीवी सहित हामिद के मेहमान हुए। उन्होंने हमारी इस प्रकार खातिर की, मानो वर्षों की दोस्ती का हक पेशगी ही में अदा कर दिया। हामिद ने एक नया मोटर लिया था। नया नया शौक। हमें और हमारी बीवी को खुद सैर कराते और शहर के सभी प्रसिद्ध स्थानों को बारी बारी से दिखाते। हामिद की माँ और बहन से मिलकर चाँदनी बहुत प्रसन्न हुई।

हम आठ दस दिन हामिद के मेहमान रहे। फिर उसके बाद हमें शहर के कुछ बाहर एक छोटा सा बँगला उचित किराये पर मिल गया और हम उसमें चले गये।

हमारे और चाँदनी के जीवन में इन थोड़े ही दिनों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था, और धीरे-धीरे प्रत्येक अभिलाषा पर हम और हमारा जीवन दोनों बदलते जाते थे। पहले अब तो में रहते थे, और शहर अच्छा लगता था। फिर बँगलों में रहने लगे, और बँगला का ही ढंग अख्तियार किया। पहले चाँदनी को हमारी सुसाइटियों और मनोरञ्जनों से कोई सम्बन्ध न था, और वह सीधी सादी एक गरीब और लज्जालु लड़की थी। किन्तु अब यह कैसे सम्भव हो कि हम यहाँ सैर, आराम या मनोरञ्जन के लिये जायँ, और चाँदनी हमारा साथ न दे। उसने इस परिवर्तन प्रसन्नता-सहित स्वीकार किया था।

पहले तो वह नाम मात्र के पर्दे में रहती थी और हम यार दोस्तों के साथ सैर करते थे और अधिकतर उनमें ऐसे भी होते थे, जैसे हमारे पुराने दोस्त मास्टर गुलाबचन्द। किन्तु अब हमारे लिय यह असम्भव था, कि हम किसी असभ्य सोसाइटी, या बातूनी दोस्त से मिल सकें या उसके साथ बैठ सकें। क्योंकि चाँदनी हमारे साथ ही रहना पसन्द करती थी। केवल इसीलिये क्लब से भी हमारी दिलचस्पी जाती रही थी। क्योंकि घर पर अकेली बीवी घबड़ाया करती थी। हम कभी कभी चले जाते, किन्तु हमको दिलचस्पी अधिक इसी में थी कि शाम को अपने घर पर रहें या अकेले बीवी के साथ हवा खायें। चाँदनी इस वर्तमान जीवन को यदि पसन्द करती थी, तो केवल इसी कारण से कि वह प्रसन्न थी कि हमारी पुरानी सोसाइटी छूट गई और हमारे दोस्तों और मिलने वालों की सख्या घट कर इस तरह सीमित हो गई कि उसमें एतराज करने की कोई गुञ्जाइश ही न रह गई। हमारे दोस्तों में वहाँ वैसे तो बहुत थे, और सभी थे, किन्तु वास्तव में अब हमारे दोस्त भी दो प्रकार के थे। एक तो वे, जो केवल हमारे थे, और जिनसे हमारी मुलाकात बैठक तक ही सीमित थी, और दूसरे वे जो हमारे और हमारी बीवी, दोनों के मिलने वाले थे। साफ बात है कि इस तरह के मिलने वालों की संख्या कम होगी और हामिद के अलावा दूसरा कोई भी न था। फिर हामिद के एक और गहरे दोस्त थे, जिनका नाम रफीक था, किन्तु चूँकि वे देहात में रहते थे, इसलिए वे केवल कभी कभी आते थे।

हामिद को शिकार की भी बड़ी बुरी लत थी, किन्तु जब से हम आये थे, इतवार को उनको पकड़ लेते थे और उन

अवसर न मिलता था। हामिद ने प्रतिदिन कह-कहकर अन्त में एक दिन राजी कर ही लिया। चाँदनी ने चूँकि शिकार खेलते हुए कभी न देखा था, अतएव हमने भी लाचार होकर स्वीकार कर लिया। शिकार की पार्टी भी बहुत ही संक्षिप्त थी। हम, हमारी बीवी और हामिद, और एक बैरिस्टर साहब। बैरिस्टर साहब का नाम हम यहाँ बताना नहीं चाहते। बहुत ही मुनासिब सूरत, शकल और स्वभाव के जवान आदमी थे, पैंतीस वर्ष की उम्र होगी। विलायत से बीवी लाये थे, जो साल भर के भीतर ही मर गई। फिर दूसरी बार शादी न की। किसी दूसरी जगह के रहने वाले थे, किन्तु शुरू से यहीं रहते थे, और सदा से बिलकुल अकेले रहने के अभ्यासी थे।

२

सवेरे चार बजे ही हामिद ने आकर दरवाजा खटखटाया। बैरिस्टर साहब से हमारी मुलाकात कई बार हो-चुकी थी, किन्तु चाँदनी की और उनकी यह पहली ही मुलाकात थी। बडी जल्दी से हमने चाय तैयार करवाई और छुट्टी पाकर हामिद की मोटर में चल दिये। हामिद मोटर स्वयं चला रहे थे और आगे उनके पास हमारी बीवी बैठी थी, और हम और बैरिस्टर साहब पीछे बैठे थे।

चौदह-पन्द्रह मील पक्की सडक का रास्ता तै करने के बाद कच्ची सडक आई और फिर दो चार मील चलकर गड्ढे और ऊँची नीची जमीन से वास्ता पडा, यह कठिनाई भी आसानी से खतम होगई और झील आगई। हम लोग उतर पडे और झील की ओर चले।

झील में मुर्गियाँ और बडी बत्तखें भरी पडी थीं। हमने चाँदनी को ऐसी जगह में बिठा दिया, जहाँ से वह तमाशा देख

पहले तो वह नाम मात्र के पर्दे में रहती थी और हम यार दोस्तों के साथ सैर करते थे और अधिकतर उनमें ऐसे भी होते थे, जैसे हमारे पुराने दोस्त मास्टर गुलाबचन्द। किन्तु अब हमारे लिये यह असम्भव था, कि हम किसी असभ्य सोसाइटी, या वातूनी दोस्त से मिल सकें या उसके साथ बैठ सकें। क्योंकि चाँदनी हमारे साथ ही रहना पसन्द करती थी। केवल इसीलिये क्लब से भी हमारी दिलचस्पी जाती रही थी। क्योंकि घर पर अकेली बीवी घबडाया करती थी। हम कभी कभी चले जाते, किन्तु हमको दिलचस्पी अधिक इसी में थी कि शाम को अपने घर पर रहें या अकेला बीवी के साथ हवा खायें। चाँदनी इस वर्तमान जीवन को यदि पसन्द करती थी, तो केवल इसी कारण से कि वह प्रसन्न थी कि हमारी पुरानी सोसाइटी छूट गई और हमारे दोस्तों और मिलने वालों की सख्या घट कर इस तरह सीमित हो गई कि उसमें एतराज करने की कोई गुञ्जाइश ही न रह गई। हमारे दोस्तों में वहाँ वैसे तो बहुत थे, और सभी थे, किन्तु वास्तव में अब हमारे दोस्त भी दो प्रकार के थे। एक तो वे, जो केवल हमारे थे, और जिनसे हमारी मुलाकात बैठक तक ही सीमित थी, और दूसरे वे जो हमारे और हमारी बीवी, दोनों के मिलने वाले थे। साफ बात है कि इस तरह के मिलने वालों की सख्या कम होगी और हामिद के अलावा दूसरा कोई भी न था। फिर हामिद के एक और गहरे दोस्त थे, जिनका नाम 'रफी' था, किन्तु चूँकि वे देहात में रहते थे, इसलिए वे केवल कभी कभी आते थे।

हामिद को शिकार की भी बडी बुरी लत थी, किन्तु जब हम आये थे, इतवार को उनको पकड लेते थे और उनके

अवसर न मिलता था। हामिद ने प्रतिदिन कह-कहकर अन्त में एक दिन राजी कर ही लिया। चाँदनी ने चूँकि शिकार खेलते हुए कभी न देखा था, अतएव हमने भी लाचार होकर स्वीकार कर लिया। शिकार की पार्टी भी बहुत ही संक्षिप्त थी। हम, हमारी बीवी और हामिद, और एक बैरिस्टर साहब। बैरिस्टर साहब का नाम हम यहाँ बताना नहीं चाहते। बहुत ही मुनासिब सूरत, शकल और स्वभाव के जवान आदमी थे, पैंतीस वर्ष की उम्र होगी। विलायत से बीवी लाये थे, जो साल भर के भीतर ही मर गई। फिर दूसरी बार शादी न की। किसी दूसरी जगह के रहने वाले थे, किन्तु शुरू से यहीं रहते थे, और सदा से बिलकुल अकेले रहने के अभ्यासी थे।

२

सवेरे चार बजे ही हामिद ने आकर दरवाजा खटखटाया। बैरिस्टर साहब से हमारी मुलाकात कई बार हो-चुकी थी, किन्तु चाँदनी की और उनकी यह पहली ही मुलाकात थी। बड़ी जल्दी से हमने चाय तैयार करवाई और छुट्टी पाकर हामिद की मोटर में चल दिये। हामिद मोटर स्वयं चला रहे थे और आगे उनके पास हमारी बीवी बैठी थी, और हम और बैरिस्टर साहब पीछे बैठे थे।

चौदह-पन्द्रह मील पक्की सड़क का रास्ता तै करने के बाद कच्ची सड़क आई और फिर दो चार मील चलकर गड्ढे और ऊँची-नीची जमीन से वास्ता पड़ा, यह कठिनाई भी आसानी से खतम होगई और झील आगई। हम लोग उतर पड़े और झील की ओर चले।

झील में मुर्गियाँ और बड़ी बत्तखें भरी पड़ी थीं। हमने चाँदनी को ऐसी जगह मे बिठा दिया, जहाँ से वह तमाशा देख

सके, और हम तीनों झील की ओर चले। हम लोग अलग अलग हो गये, और झील को तीन ओर से घेर लिया। हामिद ने पहले बन्दूक चलाई और फिर उड़ने पर बैरिस्टर साहब और हामिद ने बहुत से फैर किये। हमने भी कोशिश की। हमने तो एक पर तक न मारा, किन्तु हामिद और बैरिस्टर साहब ने मिलकर खूब शिकार किया।

यहाँ से छुट्टी पाकर अब हिरन के शिकार का विचार किया। थोड़ी ही देर बाद बैरिस्टर साहब हमसे और चाँदनी से भी बहुत हिलमिल गये और शिकार में बड़ा आनन्द आया। हामिद से और बैरिस्टर साहब से शिकार की पुरानी दोस्ती थी और दोनों पुराने शिकारी थे।

खुलासा यह कि हम लोग बारह बजे के लगभग लौटे। खूब शिकार हुआ और चाँदनी ने भी शिकार का खूब आनन्द उठाया। चूँकि खाना तैयार ही था, हामिद और बैरिस्टर साहब ने भी हमारे ही यहाँ खाना खाया। खुलासा यह कि दिन आराम से काटा। बैरिस्टर साहब हमसे और चाँदनी से मिल कर बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे, और चाँदनी ने भी इनके सम्बन्ध में यह निश्चित् फैसला दिया था कि ये बहुत मुनासिब और च्छे आदमी हैं और सचमुच वे थे भी ऐसे ही।

× × ×

ाहब हमारी बीवी से पहली बार मिले थे। किसी है कि किसी से मिलो तो उसके सम्बन्ध में कोई करने में शीघ्रता न करनी चाहिये। वे यूरोप की एक ए हुए थे। आमतौर से हमारे जो नौजवान विलायत , और जो मामूली हैसियत के होते हैं, वे वहाँ नीचे की सोसाइटी में रहते हैं और वहाँ की औरतों की तबीयत

और उनके आगे घटे हुए विचारों को देखकर स्त्री संसार के बारे में एक आम राय कायम कर लेते हैं और अपने आपको स्त्रियों की आदतों का विशेष जानकर समझने लगते हैं। हमारे बैरिस्टर साहब का भी यही हाल था। हामिद ने जब उनसे हमारी बीबी के सम्बन्ध में घर लौटते समय चर्चा की, तब उन्होंने एक हँसी और ताने के ढङ्ग पर कहा—"आपको उनसे इस भांति क्यों दिलचस्पी है?"

"इसलिये कि वे मेरे दोस्त की बीबी हैं।"

"या इसलिये कि वे एक दोस्त की खूबसूरत बीबी हैं।"

"लाहौल बिलाकूह, तुम भी कैसे आदमी हो।" हामिद ने कहा।

"मुझसे अधिक आपको नये ढङ्ग की प्रेम करने वाली औरतों का अनुभव नहीं है।" बैरिस्टर साहब ने कहा।

"अच्छा हो, यदि आप कोई दूसरी चर्चा करें।" हामिद ने गम्भीर होकर कहा।

"अजी जनाब, आप मुझसे ।"

"मेहरबानी करके चुप हो जाओ। कसम खुदा की, मैं एक शब्द नहीं सुन सकता।"—हामिद ने आवश्यकता से अधिक गम्भीर होकर कहा। बात हुई, खतम हो गई और हामिद ने हमसे कभी उसकी चर्चा भी न की।

× × ×

इतवार का दिन था और हमने चाँदनी से कहा, कि आज तो दोस्त हलुआ खिलाओ। हमारी बीवी को हमारे ऐसे दोस्तों की आवभगत करने की चिन्ता रहती थी, जिनके घर न हों। वह ऐसे दोस्त को अक्सर तरह तरह के खाने भिजवाती रहती थी। हमारी राय से हमारी बीवी

दो तीन महीने में हमारे बैरिस्टर साहब से ऐसे सम्बन्ध हो गये कि वैसे हामिद से भी थे। बैरिस्टर साहब चाँदनी की प्रशंसा करते मरे जाते थे, और अब हमारा उनसे हद से ज्यादा बिना बनावट के मेल-जोल होता था। हम पर और चाँदनी पर वे इस तरह कृपालु थे कि वे सैकड़ों नई चीजें हमारी बीवी को भेंट दे चुके थे। और चाँदनी का यह हाल था कि वह दिन रात बैरिस्टर साहब की तारीफ किया करती थी। खुलासा यह कि बैरिस्टर साहब हमारे अच्छे दोस्तों में से थे।

\+ + +

हम एक दिन जब कचहरी से आये तब चाँदनी असाधारणरूप से प्रसन्न मालूम हुई। हमने कहा, क्या मामिला है, हमें भी बताओ, तो उसने एक पत्र हमारे सामने रख दिया। उसमें कुछ थोड़े प्रेम सम्बन्धी शेर लिखे हुए थे, और लिखा था कि इसका जवाब यदि देना तो फलां फलां जगह पर रख देना। हम आश्चर्य में थे कि इलाही, यह कौन है। लिफाफे पर पते और मुहर को देखा। तो मालूम हुआ कि इसी जगह का है। हमारी बीवी का पता लिखा हुआ था। हमने बहुत कुछ सोचा, किन्तु कुछ समझ में न आया। चाँदनी भी पत्र के जवाब के रूप में बड़ी कठिनाई से सोच विचार करके नीचे लिखा हुआ शेर लिख लाई और हमको दिखाया।

एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से यह कहा—
तू सरापा नाज है, मैं नाज बरदारों में हूँ।
एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से यह कहा —
आँखों ही आँखों में जालिम मुसकुराना छोड़ दे।

एक लड़के ने अपने बुड्ढे बाप से कहा —

यार की गलियों में क्यों कर यार जाना छोड़ दे।

साफ है कि हमीं क मारे हमारा क्या हाल हुआ होगा ? किन्तु हमने अपनी चुलबुली बीवी की तबियत की तेजी की ख़ूब तारीफ़ की।

खुलासा यह कि पत्र रख लिया गया। उसका जो जवाब आया तो उसमें और भी बढ़े चढ़े शेर थे। चार पाँच ही पत्र इस तरह आय गय थे, कि पत्र भेजने वाले अपने असली मतलब के बहुत करीब आ गये, और इबारतों में प्रेम की कथा सुनाने लगे।

हमने बीवी से कहा कि मारो गोली, जाने दो, किन्तु यह कठिनाई से मानी। मगर वे दूसरे हजरत भला क्यों मानते ? उनके इस तरह लम्बे चौड़े पत्र आने लगे, कि चाँदनी ने कहा, कि अब असभव है, कि इनके पत्रों का जवाब न दिया जाता। अब उचित जवाब लिख दिया गया, जैसा कि एक औरत को लिखना चाहिये था।

हमने अब हामिद को इस रहस्य से सचेत किया। उसने जब पत्र देखे, तब सिर पकड़कर रह गया। उसने कहा कि ये हजरत बैरिस्टर साहब हैं और शिकार वाले दिन उनसे जो बातचीत हुई थी, उसकी फिर चर्चा की। हम सन्नाटे में आगये, और हमें शीघ्र मालूम हुआ कि कदाचित् इस सबब से बैरिस्टर साहब ने हमारे यहाँ आना बन्द कर दिया है। चाँदनी को एक दुख सा हुआ कि जैसे उसका कुछ नुक्सान हो गया हो। किन्तु वह थोड़ी देर में बोली, कि यदि आप दोनों आदमी चुप रहें, तो मैं वह तमाशा दिखाऊँ, कि आप लोग जिन्दगी

भर याद करें। हमने कहा, वह क्या, तो उसने किसी
बड़ी शरारत का उदाहरण देते हुए कहा, कि हम तुमको
बतायेंगी। उसके चेहरे पर शरारत नाच रही थी और
हँस रही थी।

× × ×

उसने एक पत्र, इन गुमनाम पत्रों के लिखने वाले
उनके पत्र के जवाब में लिखा कि चूँकि आप मुझसे अ
में मिलने के अधिक इच्छुक हैं, अतः आप मुझसे पोलो
मैदान में मिलियेगा। किन्तु याद रखिये कि आप वहाँ
प्रकार छिपे हुये हों, कि सड़क पर से दिखाई न पड़े। आ
यह है कि सड़क से कुछ दूर पर जो पेड़ है, उस पर च
पत्तों में छिप जाइयेगा। मैं अगर खुदा की मेहरबानी हुई
मगरिब के नमाज के वक्त पहुँचूँगी। दिन और तारीख
नियत ही थी। हम झट नियत समय से पहले हामिद को ले
बैरिस्टर साहब के यहाँ पहुँचे, और उनसे कहा, कि
मोटर पर हवा खा आयें बैरिस्टर साहब तैयार न हुए।
हमने कारण पूछा, तब कहने लगे कि आज मैं कहीं
जाऊँगा। इस पर हम दोनों ने कहा, कि फिर हम
आप ही के यहाँ बैठते हैं। बैरिस्टर साहब चकराये और
लगे कि भाई वास्तव में बात यह है कि मुझे एक जगह
मुकदमें के सम्बन्ध में जाना है। हमने कहा, हम भी आ
साथ चलेंगे। किन्तु बैरिस्टर साहब ने विवश होकर
"अफसोस है, मैं कुछ ऐसे काम से शहर में ही एक स
से मिलने जा रहा हूँ, कि आप लोगों को बता नहीं सक
मुझे माफ कीजियेगा।" जब हमने खूब छका लिया
चले आये।

४

मोटर को तो हमने पोलो के मैदान से कुछ दूर छोड दिया। हम और हामिद और दो साहब और जिनको हम क्लब से पकड लाये थे, टहलते-टहलते पोलो के मैदान के उस पेड के पास पहुँचे। लापरवाही के साथ हम पेड के नीचे आये, ऊपर जब दृष्टि उठाकर देखते हैं तब बैरिस्टर साहब लटके हुए हैं। आश्चर्य से हमने बनावट के साथ चिल्लाकर बैरिस्टर साहब को पुकारा और साथी भी दौड कर आये। हमने और हामिद ने बैरिस्टर साहब से कहा कि क्यों जनाब, आप तो शहर में किसी साहब से मिलने जानेवाले थे। आखिर उसके खिलाफ यह क्या, कि पेड पर लटके हुए हैं। खुदा के लिए जरद इस पहेली को हल कर दीजिये। बैरिस्टर साहब शर्म की मुसकुराहट से काम ले रहे थे। कहने लगे कि भई! असल में बात यह है कि मैं आजकल तारों के परिवर्तन और उनकी गति पर विचार कर रहा हूँ। अत एक विशेष तारे, शनि का उदय होना देखने के लिए चढा था। हम लोगों ने एक जोर की हँसी हँसी और अलग अलग रायें कायम की। बैरिस्टर साहब न जाने किस कठिनाई से चढे होंगे। क्योंकि जूता पहने हुए थे। हम लोगों ने मदद देकर उतारा। अब गम्भीरता और शान्ति से जब उनसे कारण पूछा, तब फिर वही कहने लगे, कि शनि का उदय होना देख रहा था। चाँदनी ने बैरिस्टर साहब को ऐसा शनि का तारा दिखाया, कि उनकी लोगों ने बोलती ही बन्द कर दी। यार-दोस्त, मिलने वाले, जिनको असली कारण का ज्ञान न था, सब यही कहते थे कि न जाने क्या मामिला होगा? क्लब मे और कचहरी में, मतलब यह कि किसी भी जगह अगर कोई किसी से बहाना करे तो आपस में यह

मुहाविरा चालू हो गया, कि कहीं शनि देखने तो नहीं जा रहे हो। यहाँ तक कि बैरिस्टर साहब की नाकों में दम आ गया। इसी प्रकार हमारी चाँदनी ने बैरिस्टर साहब को कई जगह दौड़ाया। एक बार लिख दिया कि "पुराने क़िले के दरवाजे के सामने ठीक साढ़े पाँच बजे मोटर पर मिलिएगा, मैं टहलने आऊँगी। किन्तु मेहरबानी करके अकेले होइयेगा।" हम लोग चहलक़दमी के लिए निकल गये और ठीक सवा पाँच बजे वहाँ पहुँचे, बैरिस्टर साहब मौजूद थे। हम हामिद और एक साहब और थे, झट दौड़कर मोटर में बैठ गये और कहने लगे, भाई खूब मिले। बैरिस्टर साहब ने घड़ी की ओर देखा और कहा, "भाई तुम लोगों की क्या मंशा है ?" हमने कहा, यही कि हवाख़ोरी करें और घर वापस चलें। बैरिस्टर साहब ने कहा कि मैं इतना कर सकता हूँ कि तुम लोगों को सीधा तुम्हारे घर पहुँचा दूँ, और बस। क्योंकि मुझको किसी दूसरी जगह जाना है। हमने कहा—नहीं साहब, माफ कीजिये, हम लोग उतरे जाते हैं। यह कहकर हम लोग उतर कर एक पुल पर बैठ गये। अब बैरिस्टर साहब बड़े चकराये कि हम लोग यहाँ से टलते ही न थे। वे यह चाहते थे, कि हम लोगों को मोटर पर लाद मार कर कहीं फेंककर फिर लौट आयें। दूसरी बार आये, और हमें इस बात पर राजी करने लगे, कि चलो घर पहुँचा दें। किन्तु हम भला क्यों मानने वाले थे, वहीं बैठे-बैठे छ बजा दिये। बैरिस्टर साहब लाचार होकर चले गये। हम किस प्रकार बतायें कि बैरिस्टर साहब ने, इस आकस्मिक भेंट की पत्र द्वारा चाँदनी से किस तरह चर्चा की।

मतलब यह कि चाँदनी ने बैरिस्टर साहब से बहुत कवायद कराई। कभी रात को स्टेशन पर दौड़ाया, तो कभी मीलों

पैदल चलाया। कभी शिकार के लिये तैयार किया, तो कभी ऐसी गड़बड़ी कर दी कि न्याय न हो सकी, और बैरिस्टर साहब ने नाश्ते का प्रबन्ध किया जिसे यार दोस्तों ने उड़ाया।

× × ×

बहुत जल्द इस झूठे पत्र-व्यवहार से मन भर गया, और हमारी समझ में ही न आता था, कि आखिर बेकार इस प्रकार बैरिस्टर साहब को दौड़ाने से क्या फायदा? कोई विशेष मनोरंजन न होता था। किन्तु चाँदनी का इन मामिलों में हम सभी लोगों से अधिक दिमाग काम करता था। हामिद के एक दोस्त सब इन्सपेक्टर पुलिस थे, जो सिविल लाइन के थाने में दूसरे दर्जे के अफसर थे। इनसे हमसे केवल मामूली जान पहचान था। मेरी बीबी ने हामिद साहब से कहकर इनसे मिलने की इच्छा प्रकट की, और इनको एक दिन चाय पीने के लिये बुलाया। इनको इस भेद की बात को बताकर हमारी चुलबुली नारी ने जो तजवीज सामने रक्खी, वह सबको बहुत पसन्द आई। बैरिस्टर साहब के सभी पत्र चाँदनी ने उनको दे दिये।

× × ×

इतवार का दिन था, बैरिस्टर साहब अपने बँगले में नाश्ता इत्यादि से छुट्टी पाकर बैठे हुए थे। एक इक्का आकर रुका, और उस पर से एक पुलिस सब इन्सपेक्टर दो सिपाहियों के साथ उतरा। बैरिस्टर साहब को सूचना दी गई और वे बाहर आये। सब इन्सपेक्टर साहब से बैरिस्टर साहब की बिलकुल जान-पहचान न थी। बैरिस्टर साहब से सब-इन्सपेक्टर साहब ने कहा कि मैं अकेले में कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। बैरिस्टर साहब अपने मिलने के कमरे में सब इन्सपेक्टर साहब को ले गये और कहा, "फरमाइये, क्या हुक्म है?" इन्सपेक्टर

साहब ने ढङ्ग से अपनी जेब मे पुलिस की तलाशी का वारन्ट निकालकर सामने रक्खा, और कहा कि मैं आपके घर की तलाशी लेने आया हूँ, जिसकी इजाजत दी जाय। बैरिस्टर साहब मामूली आदमी नहीं थे। तुनुक कर बोले, यह क्या? सब इन्सपेक्टर साहब ने हमारा नाम लेकर कहा, कि उन्होंने आपके और अपनी बीवी के सम्बन्ध मे कुछ जवाहिरातों की चोरी के बारे में पुलिस में रिपोर्ट लिखाई है और ये पत्र दाखिल किये हैं, जिनको वे बताते हैं कि आपके हैं, और मुझको अब मुकदमे की जॉच पडताल के लिये तलाशी लेनी है। क्योंकि उनका बयान है कि आपके यहाँ उनकी बीवी के पत्र निकलेंगे।

"किन्तु ये मेरे पत्र नहीं हैं।" बेरिस्टर साहब ने भूठ बोलते हुए कहा—"यह झूठ इलजाम लगाना है।"

"मैं लाचार हूँ। तलाशी के बाद स्वय मालूम हो जायगा। क्या आप अपनी कोई लिखावट पेश कर सकते हैं?" थानेदार साहब ने कहा।

बैरिस्टर साहब, हालांकि कानूनदॉ थे, किन्तु कहने लगे, 'यह मेरा अपमान है। मैं हरगिज इस तरह अपनी लिखावट दिखाने को तैयार नहीं हूँ।"

"माफ कीजियेगा, मैं लाचार हूँ। और घर की तलाशी में जनाब की लिखावट भी मुझको कहीं न कहीं मिल जायगी, जिसे मैं स्वय अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए ले लूँगा।'

"मैं शायद तलाशी भी इस तरह न दे सकूँ।" बैरिस्टर साहब ने कहा।

"माफ कीजियेगा। आप कानून-दॉ हैं और मुझे आशा नहीं कि आप झगड़े को अधिक तूल देंगे। आपको मालूम है

कि पुलिस अफ़सर को उसकी अफसरी के कर्त्तव्यों को अदा करने से रोकना जुर्म है। मैं आशा करता हूँ, कि आप मुझको तलाशी लेने में मदद देंगे और अपने बयान लिखा देंगे।

"मैं सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को लिखता हूँ।" बैरिस्टर साहब ने कहा।

"मैं इस बीच में अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने की कोशिश करता हूँ।" यह कह कर सिपाही को पुकारा।

"आप अच्छी तरह समझ लीजिये, कि मेरी तौहीन हो रही है, और आप को जब तक पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट का जवाब न आ जाय, कानून रुकना पड़ेगा।" बैरिस्टर साहब ने कहा।

"मैं माफी चाहता हूँ कि मैं रुक नहीं सकता और अच्छा होता कि आप इस मामिले को तूल न देते।"

इतने में मोटर की आवाज़ आई, और हामिद साहब आये। सीधे कमरे में घुसे चले आये और इन्सपेक्टर साहब और बैरिस्टर साहब को बात-चीत करते हुए पाया। तब इन्स-पेक्टर साहब ने हामिद से कहा, "यह बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गये। मेहरबानी करके साहब को समझा दीजिये।"

'आखिर क्या मामिला है?" हामिद ने पूछा।

"आप स्वयं बैरिस्टर साहब से पूछ लीजिये। मैं अलग बैठ जाता हूँ।" यह कहकर वे बाहर आ गये, और बरामदे में बैठ गये।

हामिद ने बनावट के साथ आश्चर्य से बैरिस्टर साहब को देखा, जिनका विचित्र ही हाल था, और कुछ पूछने ही वाले थे कि थानेदार साहब फिर कमरे में घुस आये और हामिद से कहा कि जरा मेरी बात सुन लीजिये। पहले मैं आपको सारा हाल बता दूँ।" बैरिस्टर साहब का वस न था कि वे सब

इन्सपेक्टर साहब को इससे रोकते। सब-इन्सपेक्टर साहब ने हामिद को दूर पर कुछ अलग ले जाकर सब हाल बताया और पत्र दिखाये। बैरिस्टर साहब यह सारी बनावटी कार्रवाई देख रहे थे। इसके बाद इन्सपेक्टर साहब फिर कमरे से बाहर चले आये।

हामिद का दिल तो चाहता था कि इस समय बैरिस्टर साहब से उनकी शिकार वाले दिन की बेवकूफी का बदला लेकर उनको झुक कर सलाम करे, किन्तु इस प्रकार खेल बिगड़ जाता। उसने बैरिस्टर साहब के चेहरे और मौके को देखते हुए कहा कि अब क्या करना चाहिये।

"कोई तदबीर तुम निकालो और इसको खतम करो।" कुछ देर तक चुप रहने के बाद बैरिस्टर साहब ने कहा।

हामिद इन्सपेक्टर साहब के पास आये और फिर बैरिस्टर साहब के पास जाकर कहा, कि वे कहते हैं कि मैं बिना उन पत्रों के लिए हुए किसी प्रकार नहीं जा सकता। हामिद ने बहुत कुछ मानवी सहानुभूति और मुरौवत का परिचय दिया था और सब इन्सपेक्टर को स्वय भी सहानुभूति थी, किन्तु वे लाचार थे। क्योंकि यह मामिला स्वय अफसर अव्वल अर्थात् ... इन्सपेक्टर के हाथ में था। बैरिस्टर साहब ... यह दी थी कि भाई! नजराना देकर उनको टाल ... इन्सपेक्टर साहब भी आ गये, और हामिद ... साहब के सामने उनसे सिफारिश की और कहा कि ... एक बड़े प्रतिष्ठित आदमी की इज्जत का मामिला है ... इसमें नरमी और रिआयत से काम लीजिये और ... दीजियेगा कि तलाशी में कोई चीज नहीं पायी गयी।

"वाह जनाब, आप मुझे फँसाना चाहते हैं। यदि ये पत्र बैरिस्टर साहब के लिखे हुए हैं तो वे पत्र यहाँ न निकलें या असम्भव है और हर आदमी मेरे ऊपर शक करेगा और मैं कहीं का न रहूँगा।"

"माफ कीजियेगा। मैं आपकी जो कुछ भी रुपये पैसे से सेवा सम्भव हो, करने को तैयार हूँ।"

"हामिद साहब, मुझे बडा दुख है कि आप मुझको इस तरह अपमानित करते हैं। मेरे काबू में होता तो मैं बिना कुछ लिए दिये आपकी और बैरिस्टर साहब की खिदमत करता। किन्तु यह मामिला तो थाने के बडे अफसर से सम्बन्ध रखता है।"

"अच्छा, यह बताइये कि वे कुछ ले देकर मामिले को खतम कर देंगे ?" हामिद ने पूछा।

"मैं कह नहीं सकता। यह आप स्वय उनसे पूछें, तो अच्छा है।"

"अच्छा आप केवल इतना बता दें कि वे मुकदमों मे लेते हैं ?" हामिद ने कहा।

"हाँ, वे अवश्य लेते हैं, किन्तु मैं कह नहीं सकता कि इस मामिले में उनकी क्या राय है ?" सब इन्सपेक्टर साहब ने कहा।

"यदि मानवी सहानुभूति आप में कुछ भी है, तो इस मामिले को तै करा दीजिये।" हामिद ने कहा।

"मैं वादा नहीं करता। किन्तु हाँ, उनसे पूरी कोशिश करूँगा। मानें या मानें, इसका मैं जिम्मेदार नहीं। किन्तु आपको वे तमाम पत्र और लिखावट का नमूना अवश्य देना पड़ेगा।"

इन्सपेक्टर साहब को इससे रोकते। सब-इन्सपेक्टर साहब ने हामिद को दूर पर कुछ अलग ले जाकर सब हाल बताया और पत्र दिखाये। बैरिस्टर साहब यह सारी बनावटी कार्रवाई देख रहे थे। इसके बाद इन्सपेक्टर साहब फिर कमरे से बाहर चले आये।

हामिद का दिल तो चाहता था कि इस समय बैरिस्टर साहब से उनकी शिकार वाले दिन की बेवकूफी का बदला लेकर उनको झुक कर सलाम करे, किन्तु इस प्रकार खेल बिगड़ जाता। उसने बैरिस्टर साहब के चेहरे और मौके को देखते हुए कहा कि अब क्या करना चाहिये।

"कोई तदबीर तुम निकालो और इसको खतम करो।" कुछ देर तक चुप रहने के बाद बैरिस्टर साहब ने कहा।

हामिद इन्सपेक्टर साहब के पास आये और फिर बैरिस्टर साहब के पास जाकर कहा, कि वे कहते हैं कि मैं बिना उन पत्रों के लिए हुए किसी प्रकार नहीं जा सकता। हामिद ने बहुत कुछ मानवी सहानुभूति और मुरौवत का परिचय दिया था और सब इन्सपेक्टर को स्वयं भी सहानुभूति थी, किन्तु वे लाचार थे। क्योंकि यह मामिला स्वयं अफसर अव्वल अर्थात् थाने के बड़े इन्सपेक्टर के हाथ में था। बैरिस्टर साहब ने दूसरी राय यह दी थी कि भाई! नजराना देकर उनको टाल दो। अब इन्सपेक्टर साहब भी आ गये, और हामिद ने बैरिस्टर साहब के सामने उनसे सिफारिश की और कहा कि शहर के एक बड़े प्रतिष्ठित आदमी की इज्जत का मामिला है। आप इसमें नरमी और रिआयत से काम लीजिये और कह कि तलाशी में कोई चीज नहीं पायी गयी।

"वाह जनाब, आप मुझे फँसाना चाहते हैं। यदि ये पत्र बैरिस्टर साहब के लिखे हुए हैं तो वे पत्र यहाँ न निकलें यह असम्भव है और हर आदमी मेरे ऊपर शक करेगा और मैं कहीं का न रहूँगा।"

"माफ कीजियेगा। मैं आपकी जो कुछ भी रुपये पैसे से सेवा सम्भव हो, करने को तैयार हूँ।"

"हामिद साहब, मुझे बड़ा दुख है कि आप मुझको इस तरह अपमानित करते हैं। मेरे काबू में होता तो मैं बिना कुछ लिए दिये आपकी और बैरिस्टर साहब की खिदमत करता। किन्तु यह मामिला तो थाने के बड़े अफसर से सम्बन्ध रखता है।"

"अच्छा, यह बताइये कि वे कुछ ले देकर मामिले को खतम कर देंगे ?" हामिद ने पूछा।

"मैं कह नहीं सकता। यह आप स्वयं उनसे पूछें, तो अच्छा है।"

"अच्छा आप केवल इतना बता दें कि वे मुकदमों में लेते हैं ?" हामिद ने कहा।

"हाँ, वे अवश्य लेते हैं, किन्तु मैं कह नहीं सकता कि इस मामिले में उनकी क्या राय है ?" सब इन्सपेक्टर साहब ने कहा।

"यदि मानवी सहानुभूति आप में कुछ भी है, तो इस मामिले को तै करा दीजिये।" हामिद ने कहा।

"मैं वादा नहीं करता। किन्तु हाँ, उनसे पूरी कोशिश करूँगा। मानें या मानें, इसका मैं जिम्मेदार नहीं। किन्तु आपको वे तमाम पत्र और लिखावट का नामूना अवश्य देना पड़ेगा।"

"हम अभी दे देंगे। किन्तु आप मदद करने का वादा करें। जो रकम भी आप इस मामिले में तै- करा देंगे, वह हम उनकी भेंट करा देंगे।"

अत मामिला तै हो गया। वैरिस्टर साहब पत्र लाने के लिये उठे, तो इन्सपेक्टर साहब भी उनके साथ उठे और कहा, कि जनाब, कोई पत्र नष्ट न हो, मेरे सामने निकालिये। विवश होकर वैरिस्टर साहब को सभी पत्र और अपनी लिखावट का नमूना देना पडा।

सब इन्सपेक्टर साहब ने इन चीजों को कब्जे में करके संक्षेप में वैरिस्टर सहाब के तहकीकात बयान लिए, जिसमें वैरिस्टर साहब ने हर बात से इन्कार किया।

चलते समय तक सब इन्सपेक्टर साहब से पक्का वादा ही नहीं कराया गया, बल्कि उनके साथ थाने पर गये और मामिला इस तरह तय हुआ कि पाँच सौ रुपये वैरिस्टर साहब नजर दे। हामिद लौटकर आये, और सब इन्सपेक्टर साहब की सिफारिश और कोशिशों का हाल- बताकर के कहा कि बड़ा दारोगा तो दो हजार से किसी तरह कम नहीं करता था।

"सचमुच सब इन्सपेक्टर साहब बडे अच्छे आदमी मालूम होते हैं। किन्तु भई, आज उन्होंने यह काम किया कि जिन्दगी भर तक एहसानमन्द रहूँगा। मैं बस शीघ्र ही उनको एक दावत दूँगा"—हामिद ने कहा।

"अवश्य देना चाहिये। सचमुच इन्होंने मेरी इज्जत बचा ली।" वैरिस्टर साहब ने कहा—"भई हामिद माफ करना! तुमने देख लिया न कि तुम्हारे दोस्त की बीवी कैसी हैं।"

"मैं उनको अच्छी तरह जानता हूँ। किन्तु सच बताना कि क्या पत्रों ही तक दोस्ती सीमित रही, या ।"

"यह मुझसे आप न कहलवाइये।" बैरिस्टर साहब ने कहा, "यह तो केवल संयोग था, कि शायद मेरा कोई पत्र पकड़ लिया गया! किन्तु मैं तुमसे आज कहे देता हूँ, कि वह औरत अब उनके पास न रहेगी।"

"क्यों?"

"इसलिये कि वह अब मेरी हो चुकी।"

बैरिस्टर साहब ने बहुत जल्द पाँच सौ रुपये इन्सपेक्टर साहब की सेवा में भेज दिये।

× × ×

इस घटना को पन्द्रह-बीस दिन हो चुके थे, और बैरिस्टर साहब से हमारा बिलकुल मिलना-जुलना बन्द था। हामिद के यहाँ आज बड़े ठाट-बाट का डिनर था, और मजा यह कि चाँदनी और हम दोनों बुलाये गये थे। वास्तव में यह डिनर हामिद के दोस्त सब इन्सपेक्टर साहब की आवभगत में था। हम और चाँदनी, शाम होते ही हामिद के यहाँ जा पहुँचे। वह तो जनानखाने में हामिद की माँ और बहनों की दावत के इन्तजाम में हाथ बँटाने चली गई, और हम और हामिद बाहर गप्पें लड़ा रहे थे।

× × ×

बैरिस्टर साहब भी आये, और हमको देखकर अधिक आश्चर्य में पड़े। हम उनसे बड़ी अच्छी तरह मिले, और मजा तो तब आया जब कि चाँदनी भी आ गई। कमरे में केवल हम और चाँदनी और हामिद थे। चाँदनी ने बैरिस्टर साहब से हाथ मिलाया और उनकी तबीयत का हाल पूछा और उनसे कई दिनों से भेंट न होने की शिकायत की। बैरिस्टर साहब का

विचित्र हाल था, और उनकी बुद्धि काम न करती थी, कि इलाही यह क्या माजरा है। खैर, कुछ भी हो, किन्तु वे भी मुनासिब बातें करते रहे। हमारी बीवी इस समय प्रसन्नता और बातों का खजाना बन रही थी, और उसका सारा ध्यान बैरिस्टर साहब की ओर था। किन्तु बैरिस्टर साहब का कुछ विचित्र ही हाल था। थोड़ी ही देर में चाँदनी घर में चली गई। हम दो एक मेहमानों से बातें करते हुए बाहर चले गये। बैरिस्टर साहब ने आश्चर्य से हामिद से हमारी और चाँदनी की मौजूदगी, और फिर इस प्रकार के अच्छे बर्ताव का कारण पूछा। हामिद ने कहा कि तुमको दावत के बाद स्वय ही मालूम हो जायगा। बैरिस्टर साहब बहुत ही प्रसन्न थे और हामिद से उन्होंने इस विचित्र मामिले को सुलझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु हामिद ने न बताया, न बताया ?

५

दावत वह ठाट-बाट की थी, कि बहुत दिनों से ऐसी दावत खाने को कौन कहे, देखने को भी न मिली होगी। लगभग चालिस मेहमान थे, और मिलने-जुलने वालों, यार दोस्तों और प्रेमियों में से ऐसा कोई न था, जो मौजूद न हो। तरह तरह के अँगरेजी और हिन्दुस्तानी खाने थे। और वे भी इस तरह ज्यादा कि समझ में न आता, कि क्या खाऊँ और क्या न खाऊँ ? दावत बड़े आनन्द के साथ खतम हुई। और दावत खतम हो जाने पर हामिद ने सबसे पहले चाँदनी के स्वास्थ्य के नाम पर एक-एक प्याला पीने की सलाह दी। इस पर कह-कहा लगा और लोग उसकी असलियत समझने से लाचार रहे। हामिद ने कहा कि अच्छा, आप लोग इस पर इतना आश्चर्य करते हैं तो जाने दीजिये, और मेरे निवेदन पर इस

दावत के लिए कृतज्ञता प्रगट कीजिये। इस पर कई साहब हँसने लगे और हामिद को धन्यवाद देने लगे कि सचमुच हम कृतज्ञ हैं कि आपने ऐसे ठाट बाट की दावत दी। हामिद ने फौरन कहा कि हजरत, आप लोग मुझ गरीब के लिए कृतज्ञता क्यों प्रकट करते हैं ? आप लोग वास्तव में बैरिस्टर साहब को धन्यवाद दें। लोग हँसने लगे और बैरिस्टर साहब की ओर आकर्षित हुए। दस पाँच को पहले ही से हामिद ने सिखा रक्खा था। उन्होंने बैरिस्टर साहब को इतना धन्यवाद दिया कि बैरिस्टर साहब भी आश्चर्य में पड़ गये। इतने में एक मुसिफ साहब जोर से चिल्लाकर बोले कि भाई आखिर यह कौन सी पहेली है, जिससे आधे लोग तो परिचित मालूम होते हैं और पूरा आनन्द उठा रहे हैं, और बाकी बेवकूफ बने हुए हैं।

इस पर हामिद ने सबको शान्त करके असली किस्सा सुनाया। शनि सितारे को देखने के लिए बैरिस्टर साहब जब पेड़ पर थे, तब किसी की समझ में न आता था कि क्या मामिला है। अत हामिद ने हमारी बीवी का वह पत्र पढ़कर सुनाया, और सुनने वालों से कहा, कि बताइये, कि बैरिस्टर साहब क्यों न शनि का उदय होना देखते ? बैरिस्टर साहब का विचित्र हाल था, कि काटो तो बदन में खून नहीं। इस पूरे किस्से को खतम करने के बाद सब इन्सपेक्टर साहब की कोशिश का हाल सुनाया और पाँच सौ रुपये वसूल होने की चर्चा करके कहा कि जनाब, पाँच सौ रुपये में से अस्सी रुपये ग्यारह आने दावत में खर्च हुए। चार सौ बीस रुपये पाँच आने यह हाजिर हैं, जो बैरिस्टर साहब को लौटाये जाते

हैं और आप सब लोग हृदय से बैरिस्टर साहब को धन्यवाद दीजिये।"

इस पर तो वह मजा आया, कि शायद ऐसा कभी न आया था। जिनको पहले ही से बता दिया गया था, उन लोगों ने बैरिस्टर साहब को धन्यवाद देते-देते नाक में दम कर दिया। बैरिस्टर साहब शीघ्र ही भाग गये और किसी तरह न रुके। बड़ी देर तक इसी घटना पर आपस में बातें होती रहीं, और सभी दूसरे किस्से भी कहे गये। इस दावत में बहुत से लोगों की हमारी बीवी की ओर से विचार बदलने पड़े। खुलासा यह कि दावत बड़े जोर की रही।

× × ×

अफसोस, कि बैरिस्टर साहब इस स्थान से इस तरह नाराज हुए, कि अपनी जमी जमाई प्रेक्टिस को छोड़कर इस घटना के बाद ही अपने देश चले गये और फिर डेढ़ साल तक तो हम वहाँ रहे, किन्तु तब तक तो वे आये नहीं।

—:o:—

आठवाँ परिच्छेद

दोस्त की बेवकूफी

पुराने और लँगोटिया दोस्त दो तीन ही थे, जिनमें थे, जिनके शहर में हम रह चुके थे, और एक। किस्मत की खूबी कि अब उनका साथ हुआ। हम सकते कि हमें उनसे कितनी मुहब्बत थी, और जब उनके शहर में आये, तब उन्होंने हामिद से भी अधिक

हमारी और चाँदनी की आवभगत की। हामिद की तरह ये भी रईस के लडके थे। किन्तु उनके पिता जीवित थे। हामिद में और इनमें यदि कोई अन्तर था, तो केवल यह कि हामिद को सैर और शिकार से प्रेम था और वह अपनी जायदाद का स्वय प्रबन्ध करता था और यदि एल० एल० बी० में फेल न हो जाता तो शायद वकालत करता। किन्तु विचार अवश्य था कि फिर इम्तहान दें। लेकिन कामिल ने एन्ट्रेन्स पास कर के ही पढना छोड दिया था और उनको अपनी जायदाद के काम इत्यादि से कोई दिलचस्पी नहीं थी, किन्तु हमारे सम्बन्ध दोनों से एक समान थे। जिस तरह हामिद हमारे और हमारी बीवी के लिये एक आवश्यक चीज थे, उसी तरह कामिल भी थे।

जब से हम आये थे, हमें और चाँदनी दोनों को इनके बिना आनन्द ही न आता था। हम क्लब मे जाया करते थे और कामिल हमारी चाँदनी को अपनी बहनों के साथ मोटर में बैठाकर हवा खिलाने ले जाते थे। कभी अपनी बहनों को बैठाकर हमारे यहाँ आते और चाँदनी साथ हो जाती और कभी चाँदनी को घर ले जाते और वहाँ अपनी बहनों को भी साथ में ले लेते।

१

किसी ने सच कहा है कि आदमी की परख उसके साथ व्यवहार करने से मालूम होती है। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ, कि कामिल के स्वभाव मे बुरी बातें और आवारगी है। हमें यह सुनकर दुख अवश्य हुआ, किन्तु हमने कभी उसको प्रकट न किया। वास्तव मे हमें कभी कुछ ख्याल भी न हुआ।

और हमने कभी चाँदनी से यह भी न पूछा कि तू कहाँ रही है।

कामिल के बारे में हमने जो बात सुनी थी, इसमें बात से तरक्की हुई कि अधिक दिन नहीं बीते थे कि दिन चाँदनी ने कामिल की चर्चा केवल बातों ही बात कहा कि कामिल साहब कुछ अच्छे आदमी नहीं मालूम हो मुझे उनके साथ हवाखोरी के लिये जाना ठीक नहीं म होता है।

हमने इस बात को सामने रख कर उनकी चाल-चलन विचार करते हुए चाँदनी का समर्थन किया, किन्तु यह अ पूछा कि "तुमने उनके चाल चलन के बारे में किससे सुना

"वे मुझसे आवश्यकता से अधिक मनोरंजन करने हैं और ज्यादा हिलने मिलने की कोशिश भी करने लगे हैं, मुझको पसन्द नहीं।"

हमने कहा—"तुमसे हामिद से भी अधिक मिलना-जु था। क्यों, वे तुमसे मनोरंजन नहीं करते थे?"

"हामिद भाई-सा आदमी मिलना तो दुनिया में मुश्कि है। सब कुछ था, किन्तु वे अकेले में मेरी ओर आँख उठा देखना पाप समझते थे। उनके मिलने-जुलने में और का साहब के मिलने जुलने में अधिक अन्तर है।" हमने पूछा "आखिर वह क्या अन्तर है?"

चाँदनी ने कहा, 'मेरी समझ में नहीं आता। किन्तु अन्तर है, कि मेरी तबीयत उनकी ओर से उदास रहती है।'

हमने कहा कि तुमको इस बात का अनुभव आज हु होगा। किन्तु मुझको कदाचित् कुछ पहले ही से सन्देह है वे मेरे कारण तुमसे नहीं मिलते, बल्कि सच बात तो यह

कि तुम्हारे कारण मुझसे मिलते हैं। मैं स्वयं इस विचार में हूँ कि तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना कम हो जाय तो अच्छा है।" चाँदनी के सन्देह की पुष्टि हुई, और वह आश्चर्य में पड़कर बोली, "खुदा की कसम, मैं उनको कभी ऐसा न समझती थी।"

"वे वास्तव में बदतमीज़ और आवारा हैं, और तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना किसी तरह ठीक नहीं।"

यह सुनकर चाँदनी क्रोध से नाच उठी और कहने लगी,—"माफ कीजिये, उनकी आवारगी शहर की गन्दी गलियों ही तक सीमित रह सकती है। मेरा ये क्या बिगाड़ सकते हैं?"

"तू सच कहती है।" हमने दिल में प्रसन्न होकर कहा—"किंतु बुरे आदमी से दूर ही रहना चाहिये।"

"वे दिन भूल गये, जब कहते थे, कि बुरी संगति में उठने बैठने से तुम्हें नुकसान न पहुँचेगा।" चाँदनी ने पुरानी बातों की याद दिलाया। हमने कहा, "तो तुम जानो, हम तुमको रोकते थोड़े ही हैं।"

"तुम मना कर दो, तो मैं हरगिज उनसे न मिलूँ।" उसकी आँखें चमकने लगीं और उसने हाथ उठाकर कहा—"ठीक कर दूँगी।"

"इससे क्या मतलब?" हमने पूछा।

"यदि वे सचमुच कुछ भी आवारा हैं तो तुम मुझसे पहले की तरह मिलने दो। यदि कभी जरा भी गलत रास्ते पर रखेंगे तो वह मुँहकी खायेंगे कि जिन्दगी भर न भूलेंगे।"

हम चुप हो गये। हम जानते थे कि यह खैरख्वाही बिल

कुल थोडे सिद्धान्तों पर कायम है। किन्तु हम चाँदनी की मुहब्बत और सच्चाई का श्रेष्ठ मूल्य इसी प्रकार चुकाना अच्छा समझते थे कि साधारण सिद्धान्त से अलग रहते हुए बिलकुल निराश न हों। खुदा जाने, इगलिस्तान के विख्यात कवि 'मिल्टन' ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक 'कोमिस' में किस किस जगह की भाषाओं का प्रयोग किया है कि उनको पढ़ने से हमारी तो जान तक सदा के लिये पवित्र बन गई। इसका कारण कदाचित् यह है कि इस सुन्दर कवि का सा चाल-चलन कदाचित् ही किसी को मिला हो। उनकी नेक चलनी की दमक उनकी कविता के शब्द शब्द से प्रकट है। हमारे कानों में इस समय वे शब्द गूञ्ज रहे थे, जो उस नाटक में एक भाई ने दूसरे भाई से बहन के खो जाने पर कहे थे। "हमारी बहन हर प्रकार की मुसीबतों से सुरक्षित है। क्योंकि सम्पूर्ण अन्धकार की अपवित्रता उसकी आबरू और परहेजगारी के प्रकाश के सामने कोई चीज नहीं। उनके पास परहेजगारी के ढाल है, जो वह चीज है कि यदि उसकी आबरू की निगाह शैतान के ऊपर पड जाये, तो वह फरिश्ता बन जाय, और यदि गुस्से के साथ वही पत्थर पर पड़े तो फट जाये और यदि फौलाद पर पडे, तो मोम हो जाये, इत्यादि, इत्यादि।" दुर्भाग्य या सौभाग्य से, यही हमारा मजहब था और इस समय भी है। हम जानते थे, कि चाँदनी और हम वास्तव में एक जान और दो शरीर हैं। हमारी बुद्धि में ही यह बात आनी गैरमुमकिन थी, कि फिर भी हमें दुनियादारी बरतनी चाहिये। और उन सिद्धान्तों से पहरेज करना चाहिये, जो प्रत्येक अवस्था में उचित हैं। हमारा ईमान सदा से यही है कि हम दोनों का ईमान नष्ट होने से पहले स्वय हमें उसका आभास मि

ायगा, वास्तव में यही विचार था, जिससे हमारे विश्वास
मजबूती पैदा न थी।

जिसका हमें सन्देह था वही सामने आया। हम पहले
ी यह समझे हुए थे कि कामिल कोई न कोई बेवकूफी अवश्य
रेंगे। उन्होंने हँसी ही हँसी में एक दिन अकेले में चाँदनी
ो गोद में लेकर मोटर पर बैठा लिया और जब देखा कि
ाँदनी ने धैर्य से काम लिया, तब रास्ते में बेहूदी बातें भी
ीं। वास्तव में वे इस योग्य ही न थे कि उनसे किसी दोस्त
ा बीवी मिले। वास्तव में हमें इस मामिले को यहीं रोक देना
ाहिये था। किन्तु हमने भूल की और प्रचलित सिद्धान्त से
अलग हटकर दूसरा रास्ता पकड़ा। इसका कारण हम बता
ही चुके हैं। किन्तु एक कारण सामने आया। क्योंकि अब
चाँदनी दाँत पीस रही थी, कि मजा चखा दूँगी और हम भी
चाहते थे कि कुछ स्वयं उसे और कुछ मियाँ कामिल को
अनुभव प्राप्त हो। हमें अब मालूम होता है कि हम खतरनाक
जुआ खेल रहे थे।

"कल दोपहर को जब तुम कचहरी में रहोगे, तब उन्होंने
आने का कहा है।" सिर हिलाकर वह बोली और फिर मुस-
कराने लगी। फिर देखता क्या हूँ कि उसकी आँखों ने शरारत
प्रकट की और वह कुछ सोच चुकी थी।

"तू क्या करेगी? हमें बता तो सही।" हमने पूछा।

"देखा जायगा। किन्तु तुम यहाँ कचहरी से डेढ़ बजे
अवश्य पहुँच जाना। आधे दिन की छुट्टी ही सही। स्वयं ही
उन्होंने आने को कहा है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु
इतना जानती हूँ कि वे जरूर आयेंगे।"

× × ×

हमारे दोस्त कामिल ठीक एक बजे हमारे मकान पर पहुँचे। आकर मिलने के कमरे में बैठे। हमारी चुलबुली बीवी ने जान बूझकर बीस मिनट आने ही में लगा दिये। वह सिर में एक रूमाल इस तरह बाँधकर आई कि जैसे सिर में दर्द है और मुँह भी वैसा ही बना लिया। कामिल ने सलाम बन्दगी के बाद उठकर हाथ मिलाया और तबीयत का हाल पूछा। मालूम हुआ कि सिर में दर्द है तो कहने लगे कि लाइये मैं सिर दबा दूँ।" कहा ही नहीं बल्कि उठकर सिर दबाने की अधिक उत्सुकता प्रकट की। चाँदनी की जान सुलग उठी और यह हरकत उसको बहुत बुरी मालूम हुई। किन्तु उसने प्रकट न होने दिया और धन्यवाद देकर के कहा कि आप तकलीफ न करें। अन्त में कामिल साहब ने वह काम कर डाला जिसके लिये वे आये थे। बातों ही बातों में चाँदनी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, क्या कहूँ, बिना आपके साथ के मेरा जी ही नहीं लगता। चाँदनी ने अपना हाथ तो खुजाने के बहाने से छुडा लिया और फिर बहुत ही सरलता के साथ कहा, "मिलने जुलने से आपस मे लगाव हो ही जाता है! मुझको स्वय आप की प्रशसित अच्छी आदतें बडी प्रिय लगती हैं।"

इतना कहना था कि हामिद साहब ने अधिक स्पष्ट होकर
आपसे बहुत ज्यादा प्रेम है।"

ूँकि इन खुराफातों की प्रतीक्षा कर रही थी, अत
कुछ आश्चर्य न हुआ। उसने बहुत ही साधा
कहा—"बहुत ही कम दिल हैं, जिनमें इस तरह के
। सचमुच वह दिल ही क्या है, जिसमें खुदा की
न हो, बाप की मुहब्बत न हो या बहनों की मु-

हो और या दोस्त की मुहब्बत न हो। वास्तव में मुहब्बत और प्रेम मे पद के मुताबिक सभी का हिस्सा है।"

कामिल बेवकूफी के मैदान में इस तरह और आगे बढ़े—"आप भूली हैं। इस दिल में आपकी मुहब्बत के अलावा और किसी की मुहब्बत नहीं।"

न जाने क्या गलतफहमी हुई कि नौकर की आवाज को सुनकर, "मैं अभी हाजिर हुई" कहकर बाहर आई, और बहुत ही बनावट के साथ घबराकर कमरे में गई और रहस्य भरे स्वर में कामिल से कहा, "वे आ गये, जल्दी कीजिये। गुसुलखाने में।" उसने यह पार्ट इस तरह घबराकर और जल्दी के साथ किया, कि जैसे ही उसने कामिल का हाथ पकड़कर गुसुलखाने का दरवाजा बताया, बिना कुछ सोचे समझे उसमे घुस गय और उसने दरवाजा बाहर से बन्द कर लिया।

वास्तव में देखा जाये तो कामिल को छिपाने की आवश्यकता न थी और न उसका ऐसा विचार ही रहा होगा। लेकिन चूँकि दिल में चोर था, अत. उसी बौखलाहट में बन्द हो गये।

हम कमरे में आये। मोटर बाहर देख ही चुके थे। अपनी चुलबुली बीबी को मुसकुराती हुई पाया। हमने कोट उतारकर पूछा कि हमारे दोस्त कहाँ हैं ?

चाँदनी ने मुसकुराकर कहा, "टापे में।" और गुसुलखाने की ओर इशारा किया। और हमारा हाथ पकड़कर अपने साथ लिया। हम दोनों दबे पाँव मिलने वाले कमरे से होकर गुसुलखाने के पास पहुँचे। चाँदनी ने धीरे से गुसुलखाने के दरवाजे पर उँगली मारी और दबी आवाज से कामिल को पुकारा। उन्होंने जवाब दिया, तो उनसे कहा कि "मैंने कह दिया है कि आपकी माता जी ने शोफर को मोटर लेकर मुझे लेने भेजा

है। किन्तु मोटर बिगड जाने के कारण वह चला गया और अभी तक लौटकर नहीं आया।" कामिल ने इस बहाने को पसन्द किया। फिर हमारे समय से पहले चले आने का कारण पूछा। जिसका जवाब चाँदनी ने दिया, कि "मेरे सिर दर्द के कारण चले आये।" इसके बाद उन्होंने कुछ बेवकूफी से भरी बातें बकनी शुरू की तो वह गुसलखाने में कष्ट पाने के लिए माफी माँगने लगी, जिसका जवाब उन्होंने यह दिया कि "हमको इसी में आराम है।" हम दोनों हँसते हुए आये, और हम यह सोच रहे थे कि इनका भला कब तक बन्द करके रक्खा जायगा।

३

चाँदनी ने ब्यौरेवार कामिल की बेवकूफियों की चर्चा की। तीसरे पहर तक बातें होती रहीं। चाय तैयार हुई तो चाँदनी ने चाय की एक प्याली कामिल साहब को गुसुलखाने में पहुँचाई। उन्होंने धन्यवाद का जब पुल बाँध दिया, और बेवकूफी की बातें शुरू की, तब उसने एक कागज और पेंसिल देकर कहा, "अपने शोफर को लिख दीजिये कि आपके दोस्त को हवा खोरी के लिये ले जाय। मैंने कहा है कि मैं आज कहीं न जाऊँगी।" साफ बात है कि कामिल साहब ने उससे कैसा मतलब लगाया होगा।

आध घण्टे बाद शोफर आ गया, हम और चाँदनी कामिल को गुसुलखाने में बन्द छोडकर उनके मोटर में हवा खाने चल दिये। शाम को जब लौटकर आये, तब सीधे गुसुलखाने के पास पहुँचे। कामिल को चाँदनी ने लक्ष्य करके कहा, "माफ कीजियेगा। मैं आपको इस कैदखाने में छोडकर जाने के लिए विवश हुई। क्योंकि मुझे विवश हो जाना पड़ा।"

कामिल ने कहा, "कुछ मुजायका नहीं। किन्तु अब मेरा जी घबड़ा उठा है। दोपहर से बन्द हूँ। अच्छा, सच बताइयेगा कि आपको आज की हवाखोरी में अधिक आनन्द आया या मेरे साथ अधिक आनन्द आता है।"

चाँदनी ने शरारत की गरज से किन्तु बहुत ही ईमानदारी के साथ कहा, "खुदा जानता है।" और यह कहकर कहा कि मैं दरवाजा खोले देती हूँ। आप धीरे से निकल जाइयेगा। आपकी मोटर इस ओर खड़ी हुई है।"

"अच्छा अच्छा, मगर यह तो बताइये कि मैं कल दोपहर में आऊँ?" कामिल ने पूछा।

वह बोली—"कल शाम को आइयेगा। मैं आपकी बहन से वादा कर चुकी हूँ।"

हमने कमरे से देखा कि कामिल जल्दी से गुसुलखाने में से निकले। हम कमरे ही कमरे से निकलकर पहले ही से मोटर के पास जाकर खड़े हो गये। हमें देखकर वे कुछ झिझक से उठे, किन्तु फौरन बोले, "वाह तुम इधर हो। मैं तो तुमको उधर से देखकर आ रहा हूँ।"

हमने भी चाँदनी को आवाज देकर बुलाया कि देखो, "कामिल तुम्हारी तबीयत का हाल पूछते हैं।" नये सिरे से चाँदनी से और उनसे सलाम बन्दगी हुई और तबीयत का हाल-चाल पूछा गया। कठिनाई से हमने हँसी को रोका। हम गुसलखाने में हाथ धोने के बहाने से गये, और चाय की प्याली कमरे में लाये और चाँदनी को दिखाकर कहा, "आखिर यह प्याली वहाँ कैसे पहुँचे?" इसका जवाब उसने यह दिया, कि यह प्याली तो वहाँ कई दिन से रक्खी हुई है। और गवाही में कामिल साहब को भी पेश किया कि ये तो प्रति-दिन आते हैं

और देखते ही होंगे। इन हजरत ने भी शीघ्र ही झूठी गवाही दे दी। हमने चाय की ताजी पत्तियों का चूरा और चाय की दस बीस बूंदे दोनों को दिखाकर कहा, "क्या खूब? चोरों के गवाह गिरहकट! यह तो आज की मालूम होती है।" कामिल कुछ सिटपिटा से गये और हमने देखा, कि उनका चेहरा फक सा हो गया।

चाँदनी ने किस्से को इस तरह खतम किया कि आपको क्या? जिसका जी चाहे गुसुलखाने में पीये, और जिसका जी चाहे मेज पर पीये।

थोडी देर बाद कामिल चले गये। किन्तु इस बाद की प्याली की चर्चा के समाप्त हो जाने से उन्हें जिस तरह इतमीनान हुआ वह देखने के योग्य था।

× × ×

दूसरे दिन हम शाम को क्लब से आये और कपडे इत्यादि उतारकर, चाँदनी की प्रतीक्षा करने लगे जो कामिल की बहन से मिलने गई थी। हमने बहुत कुछ मना किया था कि अब तू इस तरह न जा। किन्तु वह कहती थी कि "अब तुम रहने दो।"

इतने में मोटर की आवाज सुनाई पडी, जो सीधी कमरे के सामने आकर रुकी। हमने देखा कि चाँदनी हमारे या कामिल के मोटर का दरवाजा खोलने का इन्तजार न करके स्वयं झट दरवाजा खोल करके तेजी से उतर पड़ी। कामिल ने मोटर का इञ्जिन चलता हुआ रखा था। उन्होंने उसको मोडा, और हमें जोर से पुकार कर 'गुडनाइट' कहा। और मोटर यह गई, वह गई।

चाँदनी कमरे में आई और हम पूछने ही वाले थे कि कोई नई बात तो नहीं हुई कि उसका चेहरा गुस्से से लाल

देखा। आँखों में आँसू थे। समझ गये और हमने ध्यान से चेहरे को देखकर एक जोर का कहकहा लगाया और कहा, कि अच्छा तेरी शरारतों की यही सजा है। यह कहकर हमने छेड़ने के लिये कन्धा हिलाकर पूछा--"क्यों दोस्त, फिर जाओगी ?"

"हाँ जाऊँगी"—यह कहकर चाँदनी ने हमारा हाथ झटक दिया—"हमें बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा है।"

हमने फिर हँसकर कहा—"हम कहते थे, न कि शरारतें छोड़ दो।"—यह कहकर फिर कन्धा हिलाकर कहा—"कुछ बताओ तो दोस्त आखिर क्या हुआ ?"

दाँत पीसकर मुट्ठी बाँधकर उसने जलकर कहा—"जब तक इस कमीने से मैं बदला न लूँगी मुझे चैन न पड़ेगी। मैं हरगिज उससे मिलना न छोड़ूँगी।"

हमने कहा—"बताओ दोस्त, आज कैसी कटी ?"

"हट जाओ।" उसने तुनुक कर कहा, "हम नहीं बताती।"

"अच्छा हम किसी से न कहेंगे। तुम हमारे कान में चुपके से कह दो।"—यह कहकर हमने अपना कान उसके मुँह के पास कर दिया।

चाँदनी का गुस्सा रफूचक्कर हो गया और उसे हँसी आगई। किन्तु उसने कहा, "हम नहीं बताती। जब हम अपने दुश्मन से बदला ले लेंगी, तब बतायेंगी।"

"तुम्हें बताना पड़ेगा।" यह कहकर हमने बहुत कुछ खींचा, और घसीटा, किन्तु वह बराबर यही कहती रही कि हम नहीं बताती।"

हमने कहा—"दोस्त, तुम बताओ या न बताओ हम तो समझ ही गये हैं।"

सहसा कुछ आहट से उसकी जब आँख खुली, तब उसने अपने मुँह के पास कामिल का मुँह पाया। वे उस पर झुके हुए थे, लाचारी की दशा में उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी, और वह तड़पकर उठी। कामिल कुछ घबड़ा गये। चाँदनी ने बड़ी कठिनाई से अपने को सँभालते हुए कहा, "चलिये मिलने वाले कमरे में चलिये। मैं अभी आती हूँ।"

"किन्तु सुनिये तो"—यह कहकर चाँदनी की ओर बढ़े। चाँदनी ने बड़े पौरुष और साहस से काम लिया। वह इस तरह घबड़ा गई थी, कि सभी शरारतें भूल गई, और हाथ-पैर फूल उठे थे। अकेले कमरे में जहाँ कभी कोई घर का नौकर तक भी न जा सकता हो, वह एक आवारा और बदचलन आदमी के साथ थी, जिसको उसने अपनी शरारत का शिकार बनाने के लिये आने की स्वयं इजाजत दी थी। उसने कहा, "मैं मुँह धोकर अभी हाजिर हुई।" यह कहकर वह तेजी से पर्दा उठाकर निकल गई। उसका कलेजा 'धक धक' हो रहा था कि कामिल रुक गये, और उसके पीछे न गये।

चाँदनी ने मुँह धोया। वह तौलिया से हाथ पोंछ रही थी, किन्तु उसका शरीर काँप रहा था। और अब तक दिल काबू में न आया था और वह हद से ज्यादा परेशान थी।

उसने एक गिलास ठण्डा पानी पिया, जिससे उसका उछलता हुआ दिल रुका। वह मन में अपनी कमजोरी पर हँसी और उसने कहा कि वह नालायक मेरा क्या बिगाड़ सकता है? वह अब बिलकुल ठीक थी और बिना किसी डर या परेशानी के मिलने वाले कमरे में पहुँची। उसने कमरे के चारों ओर देखा, सभी दरवाजे खुले हुए न होकर बन्द थे। क्योंकि कामिल ने सभी दरवाजे मजबूती के साथ बन्द कर दिये थे।

यह देखकर उसका पौरुष और साहस फिर छूटता हुआ मालूम हुआ। न जाने वह क्यों इस तरह घबड़ा रही थी। उसने घड़ी की ओर देखा तो डेढ़ बजने में आठ मिनट बाकी थे। उसको डर इस कमरे में कामिल के साथ डर लग रहा था। वह कुछ ठिठकी कि कामिल ने मुसकुराकर कहा—

'आइये।' ये शब्द इस समय उसके कानों में हथौड़े की चोट की तरह लगे, जिसकी धमक उसके दिल तक पहुँची और साथ ही उसे कमजोरी भी मालूम हुई। किन्तु उसने अपने दिल को फिर मजबूत बनाया और एक कुर्सी घसीट कर अलग बैठ गई। कामिल ने सन्नाटे को भंग किया और बातें करते करते वे धीरे धीरे खिसक खिसक कर, उसकी कुर्सी की ओर बढ़ने लगे। इस समय चाँदनी की विचित्र हालत थी। वह उस जानवर की तरह थी, जो शेर को देखकर ऐसा अधीर हो उठता है कि खाने को भी छोड़ देता है और यह देखता हुआ भी कि शेर आ रहा है, अपनी जगह से हिल डुल नहीं सकता। वह चुपचाप थी और उससे कुछ जवाब ही न बन पड़ता था। दिल बुरी तरह धड़क रहा था और ओठ बिल कुल सूखे हुए थे। जब कामिल बिलकुल करीब आ गये, तब न जाने किस कोशिश के साथ उसने कहा—"पानी देने की मेहरबानी कीजियेगा" और सुराही की ओर हाथ उठा दिया। कामिल ने पानी दिया। पानी पीकर कामिल को गिलास लौटा दिया। कामिल ने देखा, कि चाँदनी के हाथ काँप रहे हैं जिसका कदाचित उन्होंने गलत अर्थ लगाया और गिलास को मेज पर रखकर कुर्सी के सामने आकर खड़े हुए। चाँदनी मूर्ति की तरह चुप थी और उन्होंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। चाँदनी की उस समय जो हालत हुई होगी उसका

अलग किया, तब शरीर मे ताकत ही न थी। आँखें बन्द थीं और साँस बडी तेजी से चल रही थी। हालाकि, जाडे का मौसम था, किन्तु सारा चेहरा पसीने से तर था। हमने उसको इस बेहोशी की हालत में सोफे पर लिटाया। नाडी देखी तो बहुत धीरे धीरे चल रही थी। हमने जल्दी से पूरा हाल सक्षेप में एक कागज पर लिखकर नौकर को डाक्टर साहब के पास दौडाया।

साधारण बेहोशी थी, डाक्टर साहब की एक ही खूराक के बाद चाँदनी बिलकुल अच्छी हो गई। डाक्टर साहब चले गये थे और थोडी ही देर में बातें करते-करते उसका चेहरा शरारत और अपनी सफलता पर चमकने लगा। वह लेटे लेटे धीरे-धीरे हस हँस कर जो कुछ हुआ था, अब सुना रही थी। हमें अपनी बेवकूफी का अनुभव हुआ और उसको अपनी शरारतों को सोचकर कँपकँपी सी आ गई। किस्मत थी कि आज वह न जाने किस मुसीबत से बच गई। लोगों को चाहिये कि वे इस घटना से नसीहत लें और माँडरेट ढङ्ग से काम लें।

घन्टे भर के बाद चाँदनी की तेजी और फुरती, शरारत के साथ सब उसी प्रकार लौट आई। वह सीधे हमें गुसुलखाने के पास ले गई। उसने दरवाजे पर उँगली मारी और भीतर से कामिल साहब बोले, "कहिये, खैरियत तो है।"

"खुदा को धन्यवाद है, सब खैरियत से बीता।"—चाँदनी ने हँसकर कहा—"माफ कीजियेगा। मुझको बडी देर लगी।"

"यहाँ एक गधा है।" कामिल ने हँसकर कहा।

"खुदा के लिय इतनी आजिजी से काम न लीजिये?"

चाँदनी ने शरारत की गरज से हँसते हुए कहा। हम स्वय इस
नाक्य पर कठिनाई के साथ अपनी हँसी को रोक सके।
कामिल बोले, "आप मजाक कर रही हैं, यहाँ सच-मुच एक
गधा भी खड़ा है।"
"क्या आप सचमुच सच कह रहे हैं ?" चाँदनी ने बनकर
कहा—"खैर माफ कीजियेगा। घुस गया होगा। किन्तु उसको
अभी तो रहने दीजिये।"
"बेचारा बहुत सीधा है और दीवार से सटा हुआ एक
ओर खड़ा है।"
"अभी हाजिर हुई।" यह कहकर चाँदनी और हम चले
आये। हमने कहा—यह गधा कहाँ से आया ? तब उसने यह
बताया कि खासतौर पर उसे मँगाया है।
शाम तक इसी तरह कामिल बन्द रहे और किसी ने
खबर तक न ली। मगरिब के बाद चाँदनी ने गुसुलखाने के
पास जाकर कहा—"माफ कीजिएगा। आज मुझको मौका ही
नहीं मिला। क्योंकि वे लाच भी नहीं गये।
"किन्तु अब तो किसी न किसी तरह खोल दीजिए।"
कामिल ने घबराकर कहा, क्योंकि मच्छरों से [illegible] के
मजे लूट रहे थे। इसका जवाब जब चाँदनी ने दिया, तब
कामिल सुनकर प्रसन्न ही तो हो गये। उसने कहा यदि आप
आज रात में घर न जायँ, तो क्या कुछ नुकसान है ? अधिक
से अधिक रात के दस बजे तक आपको यहाँ तकलीफ उठानी
पड़ेगी। फिर मैं खोल दूँगी, और आप चुपके से बराबर वाले
कमरे मे आलमारी के पीछे पर्दे की आड़ मे छिप जाइयगा।
काँपती हुई आवाज में कामिल ने कहा, "बहुत अच्छा, आप
जाइये। मैं समझ गया।"

उन्होंने कमीनी हरकत नहीं की ? क्या उन्होंने हमें और तुम्हें अपमानित करने की बेहद कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने मेरे जीवन को समाप्त कर देने की कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने पुरानी दोस्ती और पुराने सम्बन्ध को स्वयं पहले ठोकर नहीं लगाई ? मेरे दिल में उनके लिये तनिक भी दया नहीं है। मेरा बस चले तो मैं ऐसे लोगों को जीता हुआ जमीन के अन्दर गडवा दूँ।

गधे के शोर और हगामे ने सोने न दिया। वह रह-रहकर ऐसी दोहाई देता था कि खुदा की पनाह। सवेरा हुआ और चाँदनी ने कहा, कि "अब तुम मानों गधे की आवाज सुनकर उठे हो और नौकर को साथ लेकर यदि सच्ची बात का पता न लगाओ, तो बेजा है। यह तो केवल सयोग की बात है कि रात को उन्हें खोलने का मौका न मिला।" हमने जाने से इन्कार किया, तो फिर उसने वही जली-कटी बातें सुनानी आरम्भ की कि जो आदमी ऐसी कमीनी हरकतें करे, उसे ऐसी ही परेशानी मिलनी चाहिये। खुलासा यह कि उसने हमें लाचार कर दिया। हम एक नौकर के साथ लालटेन लेकर पहुँचे। क्या बतायें कि हमारी हिम्मत न पडती थी कि चाँदनी आई और उसने फिर क्रोध भरी आँखों से देखा और स्वयं दरवाजे की और खोलकर तेजी से लौट आई। हमने कुछ देखे ... दरवाजा खोलकर लालटेन के प्रकाश में ... दृश्य आँखों के सामने था, वह सबक सीखने ... । हर एक आदमी को इस परेशानी और ... । हमारे और नौकर दोनों के मुँह से "अरे" ... आश्चर्य में था। बहुत ही मक्कारी के सा... "कामिल यह क्या मामिला, कामिल यह

मामिला ?" कामिल भला इसका क्या जवाब देते ? विचित्र दृश्य सामने था। गधा गुसुलखाने के बीच में खड़ा था। सभी चीजें उलटी पुलटी पड़ी थीं। जगह जगह लीद पड़ी हुई थी और दुर्गन्ध के मारे, दिमाग उड़ा जा रहा था। कामिल फर्श की एक बड़ी दरी में लिपटे हुए एक कोने में सिर झुकाकर बैठे हुए थे।

हम उल्टे पाँव कमरे में लौट आये। हमारी तबीयत बहुत दुखी हो रही थी और हमने बड़े अफसोस के साथ कामिल की हालत चॉन्नी से बताई। किन्तु स्त्री के दिल में कदाचित् उसकी इज्जत और आबरू पर हमला करने वाले के लिए दया नहीं पैदा होती। उसने फिर चिड़ाचिड़ा कर कामिल की सजा उनकी ओर से उनका हक बताया। हम सिर पकड़ कर एक कुर्सी पर बैठे हुए इस मुसीबत पर विचार कर रहे थे। हालाँकि कामिल ने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया था और वे सचमुच दया के योग्य न थे, किन्तु फिर भी वास्तव में हमारा ही कुसूर था, जो हमने इतनी ढिलाई की। हम चाहते तो यह दिन ही न आता। हम उठे और सामने जाकर कामिल से कहा, "माफ करना। किन्तु गलती तुम्हारी भी थी, जो तुम इस शरीर के चक्कर में पड़े।" कामिल कुछ न बोले और हम लौट आये।

दूसरे गुसुलखाने में हमने जल्दी से गरम पानी और साफ कपड़े पहुँचाये और कामिल को वहाँ भेजवाया। दूसरे आदमी को उनके घर मोटर लेने के लिए भेजा। कामिल नहा धोकर गुसुलखाने से सीधे उधर से उधर ही अपने चले गये।

× × ×

अफसोस, कि वह भेद प्रकट हो गया। नौकरों ने इस बात को न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। विवश होकर खास-खास दोस्तों को पूरा किस्सा- ठीक ठीक शुरू से लेकर अन्त तक बताना पड़ा और धीरे-धीरे यह किस्सा सबको मालूम ही हो गया, जिनके कारण कामिल का सोसाइटी में वह काला मुँह हुआ, कि किसी से मिलने लायक न रहे। वे हमारे हमेशा के लिए गैर हो गये और हमसे उनसे फिर कोई सम्बन्ध न रहा। यहाँ हम उन बातों की चर्चा नहीं करना चाहते, जो कि बाद में सामने आई। इतना कह देना ही काफी है, कि कामिल ने चाँदनी से भयानक बदला लेने की कोशिश की और विवश होकर हमको छुट्टी लेकर वह जगह छोड़ देनी पड़ी।

इस अनुभव से हमें मालूम हुआ, कि हमारा और हमारी बीवी का सिद्धान्त गलत था। शरारत और आजादी की अवश्य कोई सीमा होनी चाहिये। और आजादी की इस सीमा को प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार नियत कर सकता है।

चाँदनी ने शरारत को फिर कभी इस प्रकार का सूझ नहीं दिया। एक दोस्त की बीवी और शरारत का यह परिणाम निकला।

नवाँ परिच्छेद

आबरू की फिलासफी

एक औरत तो वह है, जो अपने शौहर की वफादार बीवी है और कोई आदमी जबर्दस्ती उसकी इज्जत लूटता है और वह फिर उस बेइज्जती की जिन्दगी से मौत को अच्छा समझती है, किन्तु बच जाती है। पर दूसरी औरत वह है, जो दिल से अपने शौहर की जगह पर किसी दूसरे को चाहती है। किन्तु बन्द और कैद रहने क कारण अपने उद्देश्य मे सफल नहीं होती और इस प्रकार यद्यपि उसका दिल पवित्र नहीं, किन्तु शरीर पवित्र है। -

सवाल यह है कि इन दोनों का दर्जा इज्जत और बेइज्जती में क्या बराबर है? क्या यह सच बात है, कि उक्त औरत इस प्रकार लाज और इज्जत को खो बैठने के बाद अपने शौहर के काम की नहीं रहती? इसका जवाब है, कि हाँ। बदकिस्मती से यह सच बात है कि औरत फिर शौहर के काम की नहीं रहती। क्योंकि आबरू ही एक ऐसा जौहर है, जो एक बार चाहे किसी भी प्रकार नष्ट हो जाय, यह असमभव है कि फिर वह किसी प्रकार प्राप्त हो सके।

यह तो दुनिया के अधिकाश विद्वानों का फैसला है, किन्तु इस्लाम की फिलासफी क्या कहती है? पीडितों का इस्लाम के अतिरिक्त और कोई मददगार नहीं। इस्लाम का फैसला है कि ऐसी औरत को चमडे के कोडे से मारना तो बहुत बडी बात है, धुनी हुई रुई से भी नहीं मारा जा सकता। वह पवित्र है। और इज्जत वाली है और अपने शौहर और खुदा के सामने

निडर होकर स्पष्टतया अपनी बेगुनाही का दावा कर स
है। वह बिना आँख झपकाये हुए अपने शौहर से आँख
सकती है। जालिम को कानून सजा देगा और नहीं तो ख

९

आगरे से गय हुए काफी दिन हो गये थे कि हम
चाँदनी इलाहाबाद से आगरे जा रहे थे। किस्मत की खूबी
आज फिर लगभग दो साल के बाद असगर साहब का
में साथ हुआ। घर से तो चाँदनी शरारतों का पूरा
तैयार करके चली थी, किन्तु यहाँ दूसरा ही मामिला
आ गया।

पहला सवाल जो हम दोनों ने असगर साहब से पूछ
उनकी बीवी के सम्बन्ध में था। वे अब तक लापता थीं।
असगर साहब अपनी दूसरी शादी के सम्बन्ध में ल
जाकर लौट रहे थे। वास्तव में संसार भी बड़ा विचित्र
उनकी हालत ऐसी थी कि जो कोई यह नहीं कह सकता
असगर कभी दूसरी शादी करेंगे। किन्तु बात यह है कि
की चहल-पहल और यार-दोस्तों की धूमधाम और
मजाकों में दुनिया के सभी दुख अपने आप दूर हो ज
यही हाल असगर का भी, किन्तु फिर भी इस च
उनके गम को ऐसा ताजा बना दिया कि उनकी आँखों
टप आँसू गिरने लगे, और मजा यह कि चाँदनी भी
उनकी ही हालत देखकर रो रही थी। बात हुई और
हो गई और थोड़ी देर बाद हम भी भूल गये। वास्तव
और चाँदनी दोनों को असगर साहब से एक स्वाभावि
नुभूति हो गई थी, जिसको प्रकट करने का मौका साल भर
हमको आगरे में मिल चुका था।

टूंडले के स्टेशन पर चाँदनी गाडी में बैठी हुई थी और हम और असगर बाहर खड़े थे।

"जरा इस बच्चे को तो देखिये।" असगर ने एक बच्चे की ओर इशारा करके कहा।

वह कोई डेढ या पौने दो साल का बच्चा मालूम होता था। नया नया चलना सीखा था और बेतरह हँसी का गोल-गप्पा बना हुआ डगमगाता चला आ रहा था। खूब गोरा, लाल, सफेद और तन्दुरुस्त था। केवल एक कुर्त्ता पहने हुए था। पीछे उसका गरीब देहाती बाप हँसता हुआ आता था। वह भागता हुआ असगर के करीब आकर डगमगाया कि असगर ने उसे दोनों हाथों से उठाकर अपने मुँह के सामने किया। बच्चे ने शान से असगर को देखते-देखते उनके मुँह पर हाथ मार दिया कि देखने वालों का हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। असगर ने हँसते हुए छोड दिया और वह फिर डगमगाता इधर उधर दौड़ने लगा। बार-बार गिरता और फिर हँस कर दौड़ता फिरता था।

चाँदनी ने कहा "सचमुच यह बडा प्यारा बच्चा है।" फिर असगर साहब से कहा, 'असगर साहब, इस बच्चे की आँखें और माथा तो बिलकुल आप ही जैसा है। मैं बड़े ध्यान से देख रही थी।'

असगर साहब हँसने लगे और बच्चे को देख रहे थे, कि इतने में उसने फिर वसी और रूख किया और उसका बाप उसके पीछे लपका तो वह आकर असगर साहब की टाँगों से लिपट गया और हँसी के मारे उसका बुरा हाल हो गया। असगर साहब ने फिर उठा लिया और उसी तरह देखने लगे। हमने ध्यान से देखा कहा—"सचमुच असगर साहब

इसकी आँखें और माथा तो बिलकुल आप ही से मिलता है
बल्कि नाक और मुँह की बनावट भी कुछ आपसे मिलती है।"

असगर साहब ने हँसकर कहा "आप दोनों भी विचि
आदमी हैं। यह सब बातें और फिर वह भी उसके बाप
सामने जो अश्चर्य नहीं, कि अक्षर-अक्षर सुन रहा हो। किन्
यह है कि आजतक ऐसा प्यारा बच्चा मैंने कभी नहीं देखा।"

चाँदनी ने झाँककर उस आदमी की ओर देखा और वह
"आप भी कैसी बातें करते हैं। यह बच्चा उसका कभी नह
हो सकता।"

असगर ने उससे पूछा, "क्यों भाई यह तुम्हार
बच्चा ?"

"जी हाँ, मेरा ही समझिये।" उस आदमी ने कहा।

"तुम्हारे किसी रिश्तेदार का होगा।"—असगर ने कहा।

"जी हाँ।"

"तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं सिकन्दरा जा रहा हूँ, और मैं यहाँ कपड़े का का
करता हूँ।"

असगर को यह बच्चा ऐसा अच्छा मालूम हो रहा था
उनका वश न था कि उसे ले लें और उसे आँखों ही आँखों
जैसे छिपाये जाते थे। उन्होंने अपने रूमाल में मिठाई लेक
उस आदमी को दी कि यह बच्चे के लिये है। उसने कहा
वाह साहब, यह आपने क्यों तकलीफ की ? यह कह व
हाथ में मिठाई लेने लगा कि इतने में रेल ने सीटी दी औ
चलने को हुई और असगर ने रूमाल दे दिया कि उसकी माँ को
दे दो। वह किसी बरतन में रख लेगी।

"मैं आप ी रूमाल अगले स्टेशन पर दे जाऊँगा।" य

कह कर वह बच्चे को गोद मे लेकर जनाने डिब्बे के पास गया और रूमाल और मिठाई देकर झट से अपने डिब्बे में बैठ गया और गाड़ी चल दी।

२

रूमाल का कुछ ख्याल भी न था कि दूसरे स्टेशन पर वह आया, जिसका नाम हुसेन बख्श था। असगर को उसने एक सफेद अगूठी देकर कहा, कि "देखिये यह शायद आपकी है, जो रूमाल में लिपटी हुई चली गई थी। आपकी रूमाल जरा खोलूँ तो अभी लाता हूँ।" असगर आराम से तकिये लगाये बैठे हुए थे। उन्होंने ला परवाही से अँगूठी ली। हुसेनबख्श रूमाल लेने चला गया। अँगूठी को देखते ही असगर साहब उछल से पड़े, और उन्होंने कहा, "अरे!" ये हक्का बक्का हो गये और उनके हाथ से अँगूठी छूटकर गिर पड़ी। हमने और चाँदनी ने आश्चर्य-चकित होकर असगर को देखा, जिनकी हालत ही विचित्र थी। उन्होंने अगूठी उठाई। "खैरियत तो है" हमने और चाँदनी ने पूछा, और यह कहते हुए चाँदनी ने असगर साहब के हाथ से अगूठी को लेकर देखा।

यह एक प्लाटीन की कलई की बहुत ही हलकी और नक्शे की हुई अँगूठी थी और उस पर ईरानी अक्षरों में बड़ी खूब सूरती के साथ कुछ इबारत खुदी हुई थी। ध्यान से पढ़ा तो बहुत खूबसूरती के साथ उस पर शब्द "मासूमा" खुदा हुआ था।

"यह कैसी अगूठी है?" चाँदनी ने पूछा।

असगर साहब ने कहा, "मेरी खोई हुई बीबी का नाम .... । वे यही अगूठी पहने हुई थीं।"

हम दोनों हक्का-बक्का बन गये और एक दूसरे को देखने

लगे। हमारे कान में धीरे से चाँदनी ने कहा, "कहीं यह बचा सचमुच इन्हीं का तो नहीं है। जरा पूछो तो। कहीं खून का जोश तो नहीं था जो बच्चे की ओर स्वभावत. खींचे जा रहा था।"

हमने असगर साहब से धीरे से पूछा, तो मालूम हुआ कि जब वे गुम हुईं तो डेढ दो माह का हमल था। मामिला साफ था और असगर से कहा, मेरा दृढ विश्वास है, कि आपकी खोई हुई बीवी अपने बच्चे सहित इस गाड़ी में मौजूद हैं।

असगर साहब विचित्र चक्कर में थे, और उनकी बुद्धि काम न करती थी। वे चुप थे कि चाँदनी ने पूछा, "क्या आपके रूमाल पर कोई ऐसा निशान था जिसे आपकी बीवी पहचान सकतीं ?" असगर ने चौंक कर कहा, "आप सच कहती हैं, रूमाल मैंने मुद्दतों के बाद निकाला है। उस पर उन्हीं के हाथ का अँगरेजी का A अक्षर कढ़ा हुआ है।

हमने कहा, "निश्चय, अब तो बिलकुल साफ है। उन्होंने आपकी रूमाल पहचान लिया, और पता लगाने के लिये यह अगूठी भेजी है। वह बच्चा निश्चय आपका है और बीवी भी आपकी मौजूद है। मुबारक हो।"

असगर की इस समय विचित्र हालत थी। वे सिर लटकाये हुए बैठे थे। दूसरा स्टेशन जमुना ब्रिज का आया। असगर को हमने रोका कि कहीं कोई असाधारण घटना न हो जाय।

चाँदनी ने वहाँ जाकर देखा, तो झट पहचान लिया। उसके हाथ मे रूमाल था और आँखों मे आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। हुसेनबख्श अब सब मामिला समझ गया और वह चुपचाप यह सब कुछ देख रहा था।

× × ×

आगरे फोर्ट पर पहुँचकर चाँदनी ने जल्दी से मासूमा को उतार दिया। बुरके की तो कोई बात ही नहीं उसके पास गाढ़े की एक छोटी चादर के अलावा दूसरी कोई बड़ी चादर न थी। उसको तो बन्द गाड़ी में बिठाया। चूँकि किसी को कुछ मालूम न था, अत असगर ने हम दोनों से कहा कि आप सब साथ चलें। क्योंकि आप लोगों के अलावा यहाँ दूसरा कोई गवाह ही नहीं है।

३

"मैं इस तरह नहीं उतरूँगी।" मासूमा ने रोते हुए चाँदनी से कहा—"मैं नहीं उतरूँगी, जब तक कि आप यह न मालूम कर लें कि वे मुझ जलील से मिलना भी चाहते हैं या नहीं।" यह कहकर उसने गाड़ी से उतरने से इन्कार कर दिया।

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा, "आखिर यह क्यों ?"

"मैं कह चुकी, मैं हरगिज न उतरूँगी और लौट जाऊँगी। चाहे कुछ भी हो।" उसी तरह रोती हुई उस पीड़िता ने कहा।

चाँदनी ने सन्दिग्ध होकर कहा—"हुसेन बख्श ।"

"वे मेरे सगे भाई के बराबर हैं, बल्कि उससे भी बढ़कर।"

प्रसन्न होकर चाँदनी ने कहा—"आखिर फिर क्या मामिला है ?"

"आप जाकर बस पूछ आयें" मासूमा ने कहा—"मैं आप को कुछ नहीं बता सकती।"

× × ×

यद्यपि असली किस्सा हमें बाद में मालूम हुआ। किन्तु इस मौक पर हम मासूमा की बीती हुई सुनाकर पाठकों से निवेदन करते हैं, कि वे इन घटनाओं को ध्यान से पढ़े और उनसे शिक्षा [illegible]। हम इसको किस्से के रूप में यहाँ से

आरम्भ करते हैं, जहाँ से वह खो गई थी। क्रम के लिए पाठक पिछले परिच्छेद को देखें।

४

हम कह चुके कि आगरे के सिटी स्टेशन पर जब हम उतरे तो चलते समय असगर से रुख़सत हुए थे।

किन्तु उनकी बीवी को देखने चाँदनी न गई। क्योंकि सफर के बीच में एक बार जब उसकी तबीयत का हाल पूछने के लिए चाँदनी ने जाने का विचार किया था, तब असगर साहब ने कह दिया था कि आप तकलीफ न करें। मैं स्वय आपकी ओर से उनकी तबियत का हाल पूछ लूँगा।

बेचारी मासूमा अपने शौहर का इन्तजार कर रही थी। बुरके में से भीड़-भाड में उसने यह भी न देखा कि असगर साहब आये और डोली मँगवाकर नौकर को हिदायत भी कर गये कि उतरवा लो। मैं सामान देखता हूँ। डोली आकर लगी और चादरें तानी गईं। वह आगे बढी कि एक बडी बीवी ने कहा "बेटी, वह तो मेरी है। मेरा लडका लाया है।" क्योंकि मासूम ने बुरके से रात के समय न तो असगर को देखा था और न इस भीड में नौकर को पहचान सकती थी। उसने यही समझा कि बड़ी बीवी सच कहती हैं। अत वे बैठकर चली भी गईं। असगर ने नौकर को जब डोली ले आते हुए देखा तब उन्होंने भी जनाना डिब्बे की ओर देखने की फिर आवश्यकता न ~। क्योंकि सामान सब मरदाने डिब्बे में था।

लाचार औरतों को बदमाशों के पंजे से बचाये और ऐसी बेगुनाहों को जैसी मासूमा थी। एक लोफर न कहाँ से आ रहा था। उसने कदाचित इस बेगुनाह को शिकार के लिये ताड़ लिया था। वह जनाने डिब्बे के

पास आया और उसने मासूमा से कहा, मियाँ ने कहा है, आप अगले स्टेशन पर उतरें। क्योंकि न यहाँ कोई बन्द गाडी है, और न डोली। मासूमा सोचने भी न पाई थी कि गाडी चल पडी। उसने भी समझा कि घर का नौकर है, इससे कहलवा दिया होगा और स्वय भी अगले स्टेशन पर उतरेंगे। वह वेफिक्री के साथ बैठ गई। राजा की मण्डी स्टेशन पर गाडी जाकर रुकी और वह आदमी मासूमा के पास आया और कहा, "उतरिये। यहाँ कोई डोली इत्यादि नहीं है। मियाँ सामान लेकर वह जा रहे हैं। जल्दी उतरिये।" उसको भला भीड मे बुरका और चादर में से क्या दिखाई देता? वह उतर आई और उसके पीछे-पीछे चली आई। राजा मण्डी स्टेशन पर भीड तो अधिक होती नहीं है। फाटक के पास पहुँच कर मासूमा ने असगर को न देखा तो फिर भी उसको आश्चर्य न हुआ क्योंकि वह यह जानती थी, कि बाहर खडे होंगे। वह बाहर आई तो उस आदमी ने दूर ही से पुकार कर कहा, "मियाँ इधर आइये, यह गाडी मौजूद है।" मासूमा ने समझा, असगर को नौकर बुला रहा है।' वह उसमें बैठ गई, और खिडकी का दरवाजा बन्द कर लिया। इतने में उस आदमी ने कहा, "भाई! तुम गाडी जरा बढाकर पुल के पास ले चलो। वह देखो कुली तो उधर जा रहे हैं।" मासूमा ने इन बातों पर ध्यान न दिया और गाडी चल पडी और वह भी बडी तेजी के साथ। मासूमा ने समझा कि कुलियों के पास पहुँच कर गाडी रोक दी जायगी किन्तु वहाँ तो गाडी बेतहाशा जा रही थी। वह बिलकुल न घबराई किन्तु यह सोचती थी, आखिर किससे और कैसे पूछूँ कि सामान क्यों नहीं है। क्योंकि न तो वह नौकर से बात कर सकती थी, और न कोचवान से,

और न खिडकी खोलकर सडक पर चलने वाले किसी आदमी को पुकार सकती थी। यह सब क्यों? केवल इसलिये कि जिस परिस्थिति में उसका पालन पोषण हुआ था, उसके मजहब में यह सब मना था। वह चाहती भी तो सम्भव न था, क्योंकि वह इस कदर तबीयत की कमजोर और सीधी थी कि उससे यह सब होना असभव था।

+　　+　　+

अब मासूमा को न जाने क्यों सन्देह हो रहा था क्योंकि गाडी बाजार से न जाकर सुनसान रास्ते से जा रही थी और उसके अनुमान के मुताबिक अब तक गाडी को घर पहुँच जाना चाहिए था। उसने सब बातों पर एक साथ ही विचार किया और झाँक कर जब बाहर देखा तब उसका कलेजा बैठ गया। उसने परेशान होकर खिडकी पर हाथ मारना शुरू किया और जब गाडी न रुकी तब वह खिडकी को जोर से हिलाने लगी। गाडी सहसा रुकी। खिडकी खुली, और वही आदमी यह कहकर भीतर गया कि "यदि तनिक भी चिल्लाई तो मार डालूँगा।" उसने खिडकी बन्दकर ली और फिर गाडी चल पडी। खुदा की पनाह, इस बेचारी मासूमा का उस समय क्या हाल हुआ होगा। किसी कलम में ताकत नहीं, कि उसकी ठीक ठीक हालत का वर्णन कर सके। वह जीवित थी, किन्तु मुर्दे से भी बदतर। वह डर कर कोने में सरक गई।

वह शरीफ और सीधे सादे स्वभाव की बेगुनाह औरत, जिसने कभी किसी अजनबी से बात तक न की हो, भला क्यों कर किसी जङ्गली जालिम की धमकियों और ज्यादतियों को बर्दाश्त कर सकती थी। अधिकाधिक भय से उसके मुँह से एक चीख निकली और वह बेहोश हो गई।

५

मासूमा को जब होश आया तब उसने अपने आपको एक जलील बिस्तर पर पड़ा पाया। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। क्योंकि उस जगह जेल की तरह अँधेरा था। हवा में नमी और बदबू थी और वह भारी मालूम होती थी। हाथ को हाथ न सूझता था और वह यही सोच रही थी कि मैं जीवित हूँ, या मर गई हूँ। भय का एक संसार था, और सन्नाटा छाया हुआ था, और मासूमा का दिल बैठा जा रहा था कि अँधेरे में उसने ऐसी आहट सुनी कि जैसे कोई साँप की तरह आ रहा है। "जालिम आ पहुँचा" उसने अपने दिल में कहा, 'हाय मासूमा, तेरा यहाँ अब कोई मददगार नहीं।"

इतने में एक दियासलाई जली और उसने उस भयानक चेहरे को देखा। इसके बाद कड़वे तेल का एक चिराग जलाया। मासूमा ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसको मालूम हुआ कि वह शायद किसी तहखाने में है।

वह जालिम चारपाई के पास आकर एक तख्त पर बैठ गया। मासूमा सिकुड़कर अलग हो गई। उसने मासूमा को कुछ मिठाई और दूध दिया और अफसोस कि उसने उसको मार मार कर खिलाया।

× × ×

चींटी तक अपनी रक्षा के लिये हद से अधिक कोशिश करती है, और मासूमा ने भी अपने को उस जालिम से बचाने के लिये सिर-तोड़ कोशिश की। अपनी उम्र में पहली बार उसने अजनबी से बात की। और वह भी इस तरह कि हाथ जोड़ कर कहा, "खुदा के लिये मेरे ऊपर दया करो और मुझे मेरे घर पहुँचा दो।" किन्तु तोबा कीजिये! निर्दय ने क्रोध में आकर उसका गला ऐसा रगड़ रगड़ कर घोंटा कि वह घायल

मुर्गे की भाँति तड़पने लगी। उसने अपनी जान बचाने की आखिरी कोशिश की। फिर हाथ पैर ढीले हो गये, और वह बेहोश हो गई।

जब वह होश में आई कि फिर उसके मुँह से चीख निकली और वह बेहोश हो गई। इसी तरह वह कई बार होश में आकर बेहोश हुई।

× × ×

न जाने वह कितनी देर तक बेहोशी की दशा में पड़ी रही कि उसकी आँखें खुलीं और उसको मालूम हुआ, कि अब दिन है। उसके हाथ पैरों में बिलकुल जान न थी, और वह बड़ी देर तक उसी तरह पड़ी रही। चारों ओर वह अँधेरे में देख रही थी। थोड़ी देर बाद उसको दिखाई देने लगा। वह एक तहखाने में थी, जिसके बीच में तीन खम्भे खड़े थे। बड़ी देर तक वह उसी तरह पड़ी रही। फिर अन्त में उठी और उठते ही सब से पहले उसने चारपाई कि पायतानी की रस्सी खोलकर एक फन्दा बनाया कि वह अपनी घृणित जिन्दगी का जल्द से जल्द खातमा करे। उस बेचारी को यह भी न मालूम था कि इस तरह जान देना कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव है। जैसे ही फन्दा कड़ा होता था, हाथ अपने आप ढीला हो जाता था। हर प्रकार से उसको इसमें असफलता हुई तब उसने एक पत्थर लेकर बहुत बहुत अपना सिर फोड़ा। किन्तु इस तरह भी वह अपने को मार न सकती थी। वह मरने के लिये तड़प रही थी। किन्तु भला मौत कहाँ? अन्त में थक कर सिर पकड़ कर बैठ गई। थोड़ी देर बाद उठी और उस तहखाने का कोना कोना देखा। दरवाजा उसका क्या था, मानों लोहे का तख्त था, जो रङ्ग से भरपूर रङ्गा हुआ था। उसने देखा कि जब दरवाजा नहीं खुलता, तब फिर हार और थककर चारपाई पर आकर पड़

रही और अपनी लाचारी पर बिलख बिलख कर रोना शुरू किया। रोते-रोते सो गई।

न जाने वह कितनी देर तक सोई कि उसने एक दु स्वप्न देखा। उसने देखा कि असगर सामने खड़ा है। वह दौड़ी। उसने घृणा से कहा, "तू अब किस मुँह से मेरे पास आती है।" वह रुक गई, और उसने गिड़गिड़ा कर अपने प्यारे शौहर के पैर पकड़ लिए कि उसने झटका देकर पैर छुड़ा लिया और वह जाग उठी। आँखें जब खुलीं तब वहाँ सन्नाटा था। वह पगली-सी उठकर सिर धुनने लगी और पागल होकर उसने अपना सिर दीवानों की तरह दौड़कर दीवाल के टकरा दिया। वह बेहोश तो न हो सकी किन्तु बेजार होकर जमीन पर गिर पड़ी। वह उसी अवस्था में बड़ी देर तक पड़ी रही।

× × ×

सन्नाटा उसी तरह छाया हुआ था, और वह उसी तरह चुपचाप निर्जीव सी पड़ी थी। उसको पहले तो कुछ सन्देह सा हुआ किन्तु फिर उसने जब कान लगाकर सुना, तब विश्वास सा हो गया, कि कोई आदमी दीवार की .. आधी से अधिक ऊँचाई के पास कुछ खोद रहा है। धमक अधिक जोर दार होती जाती थी, और वह उसी ओर देख रही थी कि इतने में कुछ मिट्टी सी उस जगह से गिरी। उसका दिल धड़कने लगा, और वह ठिठक कर दीवार से लगकर गिरती हुई मिट्टी और ईंटों को देखने लगी। ईंटें गिरनी बन्द हो गईं और थोड़ी देर बाद धमाके की आवाज कम होकर बन्द हो गई, और पहले की भाँति सन्नाटा छा गया। जब काफी देर हो गई तब वह उठी। उसको डर लग रहा था कि कहीं वह जालिम फिर न आ पहुँचे। उसने उठकर ध्यान से दीवाल को देखा, जहाँ से ईंटें

और मिट्टी गिरी थीं। "आश्चर्य क्या, कि मैं उसी ओर से निकल सकूँ।" यह विचार उसके दिल मे आया। उसने पलग को घसीट कर दीवाल के पास लगाया। किन्तु वह जगह ऊँची थी, जहाँ से ईंटें गिरी थीं। उसने इधर-उधर देखा और पलग को हटाकर उसकी जगह बडी कठिनाई से तख्ते को खींचकर लाई। तख्ते के ऊपर उसने चारपाई के सिरहाने के दो पाये रक्खे और उस पर खडी होकर जहाँ से ईंटें गिरी थीं, उस स्थान का उसने निरीक्षण किया। हाथ से उसने मिट्टी और ईंटें हटानी शुरू की और इस काम मे कोई कठिनाई उसके सामने न आई क्योंकि वह जगह अभी ताजी ही खोदी गई थी। थोडी ही देर में उसने एक बडा सूराख कर लिया। अब केवल मिट्टी ही मिट्टी थी, जिसे उसने हाथ से हटा हटाकर गिराना शुरू किया। किन्तु ज्यों-ज्यों यह मिट्टी हटाती जाती थी, ऊपर से मिट्टी और खिसकती आती थी। मिट्टी हटाने में उसका हाथ टीन के किसी सन्दूक से लगा, जिसको उसने पकड़ कर खींचा। उसके साथ ही बहुत सी मिट्टी खिसक आई। सन्दूक छोटा-सा था किन्तु काफी वजनी था। उसने उसको हिलाकर देखा तो मालूम हुआ कि शायद उसमें रुपया पैसा है। उसमें ताला लगा हुआ था। उसने तेजी से मिट्टी हटानी शुरू की और थोडी देर में उसकी आँखों को दिन का प्रकाश दिखाई पडा। उसने और मिट्टी हटाई और झाँककर देखा, तो उसको आसमान की जगह पर टूटी हुई दीवार दिखाई पडी और सामने कुछ ईंटें, और कूड़ा पड़ा था। उसने जल्दी से सूराख को बडा किया और जब काफी बड़ा हो गया, तब वह उसमें लेटकर ऊपर निकल आई। उसने देखा कि मैं एक छोटे से पुराने किन्तु ईंटों और चूने से बने हुए गुफा में हूँ। यह एक तग जगह थी। अब वह

यह सोच रही थी कि इस सन्दूक को क्या करूँ? यदि उसी जगह छोडती थी तो उसको पूरा विश्वास था कि वह जालिम आकर ले लेगा। और यदि साथ लिये जाती तो उसका दिल इसके लिए तैयार न होता क्योंकि उसको पूरा विश्वास था कि हो न हो इसमें रुपया है जिसे कोई कजूस इस जगह गाड करके उससे छुटकारे का कारण बना है। उसने कुछ सोचा और अन्त मे लाचार और अपराधी बनना स्वीकार किया किंतु यह मजूर न किया कि यदि इसमें कुछ रुपया पैसा और माल हो तो वह उस जालिम के हाथ लगे जिसने उसको जिन्दगी से निराश कर दिया था। जब उसने यह निश्चय कर लिया तब उसने, डरती-डरती कि कोई देख न ले उस सकीर्ण गुफा के बाहर झॉक कर देखा कि वह एक पुराने जमाने के कब्रिस्तान में है, जहाँ दूर तक टूटी हुई पुरानी कब्रें फैली हुई हैं। सूरज डूब चुका था और शाम हो गई थी।

६

जब कुछ अँधेरा-सा हो गया और उस जगह उसको डर मालूम होने लगा तब वह उस गुफा से निकली। वह कुछ डर भी गई। क्योंकि वह बडी पुरानी कब्र में से निकली थी जो ऊपर से ज्यों की त्यों थी। चारों ओर टूटी और पुरानी कब्रें दिखाई दे रही थीं और विचित्र भयानक दृश्य था। किन्तु यह सब उस स्थान से अधिक डरावना न था जहाँ इसको उस जालिम से दूसरी बार भेंट हो जाने का डर था। वास्तव में यह उस जालिम का डर ही था जो उसको इस धुँधले अँधेरे के समय कब्रिस्तान मे अज्ञात दिशा की ओर लिये जा रहा था। नहीं तो वह डर कर बेहोश हो गई होती। बहुत दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था और एक आदमी भी दिखाई न पड़ता

था। वह अब कुछ निडर-सी थी। क्योंकि मौत की इच्छुक थी। वह तेजी से इस जगह से दूर होना चाहती थी। इस कारण से नहीं कि वह मुर्दों के रहने की जगह में थी, बल्कि यहाँ वह भयानक और अंधकार पूर्ण तहखाना था। वह उसी तरह तेजी से चलने लगी। उसकी आँखें किसी खास चीज को खोज रही थीं और उसकी खुशी की कोई सीमा न रही। जब उसने एक बड़े कुएँ की कबूतरी देखी वह तेजी से दौड़ कर वहाँ पहुँची। पुराने जमाने का न जाने किस समय का बना हुआ एक बड़ा कुआ था। उसने झाँक कर कुएँ के भीतर उम्र में पहली बार देखा और भीतर के अंधकार को देखकर उसका दिल काँप उठा। मरना कोई सरल बात नहीं है, और फिर उसके लिये जो जवान और तन्दुरुस्त हो। उसने अपने आपको विचित्र पेशोपेश में पाया। उसको अपनी जवानी का ख्याल आया और साथ ही असगर का ख्याल आया। बस मन मसोस कर रह गई। वह कोशिश करके उससे अवश्य मिल सकती थी किन्तु यह कैसे हो सकता था? नहीं, नहीं अब मैं कभी असगर को मुँह न दिखाऊँगी। तो फिर आखिर क्या होगा? संसार उसके लिए अँधेरे के समान हो गया।

उसके लिए मरना ही अच्छा है, और यह निश्चय करके उसने उस सन्दूक को कुएँ में फेंक दिया। उसके गिरने की लौटी हुई आवाज अभी गायब भी न हुई थी, कि सामने से कोई आदमी अँधेरे में आया हुआ मालूम हुआ। वह डर सी गई और उसने इस प्रकार रोती पीटती अपने को कुयें में डाल दिया।

एक धमका हुआ और यह, पानी के भीतर तक चली गई कि उसको पानी ने ऊपर फेंका। उसके हाथ पैर उसके कपड़े में उलझ गये थे। उसने बेबसी की हालत में जोर से चिल्लाकर

हाथ पैर मार। क्योंकि उसको वास्तव में आप मालूम हुआ कि मरना कैसा होता है किन्तु उसकी चीख को पानी के रेले ने शान्त कर दिया और वह थोड़ी देर की कशमकश के बाद एक बेहोशी की अवस्था में डूब गई।

७

जब उसकी आँखें खुलीं तब उसने अपने को हुसनबख्श के घर में चारपाई पर पड़ी हुई पाया और सेवा के लिये उसकी बहन थी। उसे वहाँ हर तरह से आराम मिला। जब से वह आई थी हुसेनबख्श धीरे से घर में आता और उसी तरह चला जाता। सवा सात महीने के बाद उसको बच्चा पैदा हुआ।

हुसेनबख्श ने उस समय से लेकर अब तक उसको अच्छी तरह रक्खा। वह जानता था कि वह किस्मत की सताई हुई है और पीड़िता है। क्योंकि वह सदा दुखी और उदास रहती थी और उसकी बहन हर तरह से उसके गम को दूर करने की असफल कोशिश कर चुकी थी। लेकिन फिर भी हुसेनबख्श को पूरी आशा थी कि कभी न कभी तो उसके मन का दुख जाता रहेगा और तब यह मेरी औरत बन कर रहेगी। वह अपनी बहन के द्वारा कई बार उसकी मंशा मालूम कर चुका था और हर बार मासूमा को अपने रास्ते पर दृढ़ पाया था कि वह इस प्रकार जिन्दगी बितायेगी। वह जानती थी कि हुसेन बख्श के दिल की हालत क्या है? वह नौकरों की तरह उसकी सेवा करता था और मासूमा को भी उससे मुहब्बत हो गई थी जिसको भाई की मुहब्बत कहते हैं। उसका मुँह उसको "भाई भाई" कहते सूखता था और वह उससे हद से ज्यादा सहानुभूति रखती थी। क्योंकि उसने अपनी जान खतरे में डालकर उसको कुयें में से [illegible] था।

खुलासा यह कि वह इस समय तक हुसेनबख्श के यहाँ थी और इस समय वह हुसेनबख्श के साथ रेल मे उनके कुछ रिस्तेदारो से मिलकर आ रही थी। क्योंकि हुसेनबख्श उसको घर में बिलकुल अकेली छोड़कर कहीं बाहर न जा सकता था कि सौभाग्य से असगर और हम मिल गये।

८

असगर कमरे में गये। उन्होंने देखा कि मासूमा गम की तस्वीर बनी हुई जमीन पर बैठी है। वह एक तरह के रङ्गीन कपडे का पाजामा पहने हुए थी और एक गन्दी सी सफेद चद्दर। पैर मे जूता तक न था। जैसे ही उसने अपनी आँखें पोंछकर असगर की ओर देखा तो असगर के दिल पर एक चोट लगी और वे व्याकुल होकर उसकी ओर झुके, क्योंकि वास्तव में असगर की मुहब्बत मासूमा से इश्क का सम्बन्ध रखती थी।

"खबरदार, मुझे हाथ न लगाना। अलग, अलग" मासूमा ने बडी गम्भीरता से कहा। असगर एक साथ ही इस एक असाधारण बर्ताव को देखकर हैरान से हो गये। क्योंकि वे तो यह समझते थे कि वह मुझे देखते ही लपट कर बेहोश हो जायगी। उसके मुँह से एक साथ ही निकला, "मासूमा" और यह कहकर वह फिर बढा कि मासूमा ने हाथ उठाकर कहा, "अलग, अलग, खबरदार, मुझे हाथ न लगाना।"

असगर ने आश्चर्य में आकर कहा, "यह क्यों ?"

मासूमा ने ठडी साँस लेकर असगर की ओर विचित्र ढङ्ग से देखा और कहा, "अफसोस, मैं तुम्हें मुँह दिखाने के लायक नहीं और यह केवल सयोग था कि ।"

"नहीं तो"—असगर ने कहा।

"मैं उम्र भर तुम्हें मुँह न दिखाती"—मासूमा ने कहा—'यह बच्चा तुम्हारा है, तुम इसे ले लो और मेरा पूरा किस्सा सुन लो। इसके बाद यह निश्चय करना कि मैं तुम्हारे काम की हूँ या नहीं ?"

असगर को सचमुच सन्देह होने लगा और उसने रुक्ते-रुक्ते कहा किन्तु मुझसे तो कहा गया है कि हुसेनबख्श, हुसेनबख्श, हुसेनबख्श ...।"

"वे मेरे सगे भाइ के बराबर हैं—"मासूमा ने कहा।"

कुछ प्रसन्न होकर असगर ने कहा, "तो फिर क्या ?"

"पहले मेरा किस्सा सुन लो"—मासूमा ने कहा—"जल्दी न करो।"

यह कहकर उसने दिल को हिला देने वाली अपनी कहानी रो रोकर सुनानी आरम्भ की और ठीक ठीक आरम्भ से लेकर अन्त तक ज्यों का त्यों किस्सा सुना दिया।

असगर के ऊपर कमजोरी ने अपना प्रभाव डाला और वह आँखें नीची किये हुए सोच रहा था। उसके दिल का मुहब्बत का जोश उड़ गया था। "मेरे मालिक मुझ पर रहम करो।" यह कहकर मासूमा उठकर आई और उसने असगर के पैर पकड़ लिये। असगर बिलकुल हिले-डुले नहीं, कि उसने कहा, "मुझको दासी की तरह एक कोने में पड़ी रहने देना और शेष घृणित जिन्दगी तुम्हारे कदमों मे ही बिता दूँगी। तुम कोई दूसरी शादी कर लेना।"

इसी तरह गिड़गिड़ाकर न जाने क्या कहती रही कि असगर ने ध्यान से फिर मासूमा को देखा और कुछ सोचकर पूछा, "तुमने मुझको कोई खत भी नहीं लिखा, यदि चाहती तो खत लिख सकती थी।"

"यदि मैं चाहती तो तहखाने से निकलने के बाद कुयें में न गिरकर तुम्हारे पास आने की कोशिश भी कर सकती थी और आश्चर्य नहीं कि इसमें सफल भी हो जाती और फिर यदि चाहती तो तुमसे अपनी जिल्लत को छिपा भी सकती थी और झूठ भी बोल सकती थी।" मासूमा ने रोती हुई कहा।
इस वाक्य ने असगर पर विचित्र ही प्रभाव डाला। क्या यह सच बात न थी कि यदि वह उससे कुछ न कहती तो उसको उसकी जिल्लत का पता भी न लगता। खुदा की कुदरत कि असगर ऐसे मनुष्य की पुरानी फिलासफी पर इसलाम की आबरू की फिलासफी ने अपना प्रभाव डाला और उसने कुछ विचार करके कहा, "मासूमा!" वह चुप हो गया और फिर बोला, "तुम्हारा इसमें कुछ भी कुसूर नहीं। वास्तव में मुझको आज नहीं, बल्कि अभी यह मालूम हुआ कि वास्तव में पवित्र और बेगुनाह वह है कि जिसका दिल सभी बुराइयों से बचा हुआ है, चाहे उसका शरीर गन्दा ही क्यों न हो? लेकिन जिसका शरीर पवित्र है किन्तु हृदय और आत्मा पवित्र नहीं है, वह वास्तव में किसी भी तरह पवित्र नहीं है। तेरे ऊपर यदि किसी नीच व्यक्ति ने मैला डाल दिया तो तुमने उसको अपना गला घोंटकर और कुयें में गिर करके धो डाला और अब तक धो रही है। यदि तू चाहती तो इसमें सन्देह नहीं कि मुझको अपनी मुसीबत का पता ही न लगता और वह वास्तव में बहुत ही बुरा होता। किन्तु चूँकि तू पाक और साफ है और बेगुनाह और सच्ची है, अत तुमने सच सच बात कही। मैं ऐसी बीबी के बिना कभी भी जीवित नहीं रह सकता।"
कठिनाई से बात खतम हो पाई थी कि मासूमा के मुँह से खुशी की एक चीख निकली और वह वहीं असगर के कदमों में

बेहोश होकर गिर पड़ी। अमगर ने अपनी आबरूदार और सच्ची बीवी को उठाकर अपने गले से लगाया।

\+ \+ \+

हम अलग कमरे में बैठे थे और सोचते थे कि चाँदनी भीतर जनानखाने में गई है कि वह आँखों से आँसू पोंछती हुई आई। हमने कहा, "अरे, यह तुझे क्या हुआ, तो उसने अपनी चोरी का किस्सा सुनाया, कि वह किस तरह बईमानी के साथ दरवाजे के एक सूराख से मियाँ बीवी की मुलाकात देख और सुन रही थी। हमने उसकी कमजोरी और चोरी पर उसका बहुत कुछ बुरा भला कहा किन्तु अब तो वह सुन आई थी और खुदा को इसी तरह मजूर था, कि यह किस्सा पूरा होकर नसीहत का कारण बने।

९

बेचारा हुसेनबख्श अब भी प्रसन्न था, और वास्तव मे उसको सच्ची प्रसन्नता हुई होगी। क्योंकि वह अच्छे स्वभाव का था। मासूमा ने उसके उसकी सेवा का यह पुरस्कार दिया कि वह जिस तरह उसको भाई कहती आई थी, उसी तरह उसको अब भी भाई समझेगी और उस सन्दूक का पता बता दिया, जो अब तक उसी कुएँ में पड़ा था, जिसमें से उसने मासूमा को अपनी जान पर खेलकर निकाला था। इस सन्दूक को मासुमा अब तक अमानत समझती थी किन्तु अब उसको इस तरह पड़ी रहने देना बुरा मालूम हुआ। उस सन्दूक में साढ़े चार हजार मूल्य की बादशाही मोहरें निकलीं, जो हुसेनबख्श की मुहब्बत और सेवा की सर्वोत्कृष्ट भेंट थी।

बुरा समय किसी पर कह कर नहीं आता। ससार के झगड़े मे कमजोर और बेबस होना कोई तारीफ के लायक गुण

नहीं है। प्रत्येक मजहब की सभ्यता ने शरम और हया औ
पर्दे की कोई न कोई सीमा नियत कर दी है और इसमें अति
शयोक्ति करना सम्भव है कि किसी तरह लाभकर हो किन्
खतरनाक अवश्य है। ऐसी बेदम औरतें वास्तव मे न त
शौहर की खितमद कर सकती हैं और न मजहब औ
जाति की। क्या आवश्यकता के समय मासूमा की सी ह
औरतें पर्दे से निकल कर तलवार चलायेंगी ? क्या हम ऐस
ही औरतों के बल बूते पर आजादी लेंगे ? क्या ऐसी
औरतें टर्की में रहती हैं, जिन्होंने समय पडने पर मर्दों
कहा कि जाओ, तुम लडाई के मैदान में जाओ और शे
कामों को हम सँभालती हैं और समय पडने पर तुम हमें बुल
लेना। हम तुम्हारे साथ दुश्मनों की गोलियों का साम
भी करेंगी। इन औरतों ने जो कहा वह किया। यदि ध्यान
देखा जाय तो हमारी गुलामी का सबसे बडा यही रहस्य है।
